अध्याय—सात

भुगतान शेष और विदेशी व्यापार

प्रस्तावना

7.1 अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण कुल मिलाकर भारत के आर्थिक विकास के लिए 1974–75 में बहुत अधिक प्रतिकूल रहा है। विश्व में महासमर के बाद के इतिहास में मुद्रा स्फीति की आंधी जो मूलतः बड़े-बड़े औद्योगिक देशों में आर्थिक क्रियाकलापों में वृद्धि के कारण आयी थी वह तेल और अनाज की कीमतों के एकदम से बढ़ जाने के कारण 1974–75 में फिर तेज हो गयी। तेल की कीमतें और ज्यादा बढ़ जाने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय भुगतान के क्षेत्र में भारी परिवर्तन हो गया और सुव्यवस्थित विश्व मुद्रा प्रणाली में पुनः अस्थिरता आ गयी। हालांकि, औद्योगिक देशों में मुद्रास्फीति होने के कारण हमारे निर्यात के यूनिट मूल्यों में पर्याप्त वृद्धि हो गयी, लेकिन औद्योगिक देशों की मुद्रास्फीति और पेट्रोलियम, आयात किये जाने वाले अनाज और उर्वरकों की कीमतों में होने वाली अत्यधिक वृद्धि का कुल मिलाकर भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की स्थिति पर बहुत बुरा असर पड़ा है। यह बुरा असर तब पड़ रहा है जब हमारी राष्ट्रीय आय में वृद्धि होना लगभग बंद-सा हो गया है। इससे भारत की अर्थव्यवस्था में विदेशी घटनाओं के कारण आने वाले असन्तुलन की मात्रा और भी बढ़ गयी है।

प्रारक्षित राशियों में घट-बढ़ और भुगतान शेष

7.2 भुगतान शेष के ब्यौरेवार आंकड़े इस समय केवल मार्च, 1973 तक ही उपलब्ध हैं। इस बारे में हाल की पिछली सूचना के उपलब्ध न होने के कारण पिछले वर्ष या उसके आस-पास भारत की भुगतान शेष सम्बन्धी स्थिति की मुख्य-मुख्य बातों का अनुमान विदेशी मुद्रा की प्रारक्षित राशि में होने वाली घटती-बढ़ती, सीमाशुल्क, व्यापार से आय, विदेशी सहायता की प्राप्तियां आदि जैसे तत्वों से लगाया जा सकता है।

7.3 भारत के विदेशी लेनदेन के वास्तविक लाभ का पता अन्ततः विदेशी मुद्रा प्रारक्षित राशियों में होने वाली घटती-बढ़ती से चलता है। सारणी 7.1 में हमारी विदेशी मुद्रा प्रारक्षित राशियों में होने वाली घटती-बढ़ती दिखायी गयी है। इससे पता चलता है कि चालू वित्तीय वर्ष के पहले नौ महीनों (अप्रैल-दिसम्बर, 1974) में भारत की विदेशी मुद्रा प्रारक्षित राशियों में 2.8 करोड़ रुपये की मामूली-सी वृद्धि हुई थी। फिर भी प्रारक्षित विदेशी मुद्रा की राशि में होने वाली घटती-बढ़ती से विदेशी लेन-देन पर पड़ने वाले प्रभाव का हमेशा पता नहीं चल सकता क्योंकि

सारणी 7.1

भारत की प्रारक्षित विदेशी मुद्रा राशि

(करोड़ रुपयों में)

वर्ष/महीने का अन्त	सोना तथा* विदेशी मुद्रा	एस० डी० आर० *	कुल प्रारक्षित राशि	प्रारक्षित राशि में घटबढ़	एस० डी० आर०	नये एस० डी० आर० के अलावा, प्रारक्षित राशि में घट-बढ़ (5—6)	अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से वित्त निकासियां (+) पुनः अदायगी	प्रारक्षित राशि में घटबढ़ अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ कुल लेन-देन (7—8)
1967-68 . .	538.6	—	538.6	60.2	—	60.2	24.4	35.8
1968-69 . .	576.7	—	576.7	38.1	—	38.1	—58.5	96.6
1969-70 . .	728.9	92.0	820.9	244.2	94.5	149.7	—125.4	275.1
1970-71 . .	620.6	111.7	732.3	—88.6	75.4	—164.0	—176.3**	12.3
1971-72 . .	662.9	185.8	848.7	116.4	74.7	41.7	—	41.7
1972-73 . .	661.4	184.9	846.3	—2.4	—	—2.4	—	—2.4
1973-74 . .	763.3	183.7	947.0	100.7	—	100.7	62.6	38.1
दिसम्बर 1974 (क) .	769.9	179.9	949.8	2.8	—	2.8	488.1	—485.3

*20 दिसम्बर 1971 और जून 1972 के मध्य, कनाडियन डालर के अतिरिक्त अन्य विदेशी मुद्राओं का सम-मूल्य केन्द्रीय दरों पर निकाला गया। कनाडियन डालर का मूल्य न्यूयार्क में, क्रय-विक्रय की हाजिर दर के मासिक औसत के अनुसार आंका गया। जुलाई, 1972 से पौण्ड का मूल्य भारतीय रिजर्व बैंक की क्रय-विक्रय की हाजिर दरों के अनुसार आंका गया है: विदेशी मुद्रा की अन्य रकमों को, जिनमें कनाडियन डालर भी शामिल हैं अप्रैल, 1974 तक लंदन में क्रय-विक्रय की हाजिर दरों के मासिक औसतों पर आधारित एक दूसरे की दरों (क्रास) के आधार पर और मई 1974 में लंदन में क्रय-विक्रय की हाजिर दरों के औसत के आधार पर रुपयों में परिवर्तित कर दिया गया है। लेकिन सोने तथा एस० डी० आर० का मूल्य सभी मामलों में उनके दिसम्बर 1971 पूर्व रुपयों मूल्यों के अनुसार आंका गया है।**

**अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष को सोने के रूप में कोटे की राशि की अदायगी करने के लिये, विदेशों से सोने की खरीद पर होने वाला खर्च शामिल है।

(क) अनन्तिम।

जरूरत पड़ने पर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से धन लेने की सुविधा का उपयोग कर प्रारक्षित राशि की कमी पूरी कर ली जाती है। वास्तव में अप्रैल और मई 1974 में भारत ने सोने के अपने कोटे और ऋण की पहली किश्तों के बदले अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 294.2 करोड़ रुपये की रकम ली थी। इसके अलावा उसने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की तेल सुविधा के अन्तर्गत अक्तूबर, 1974 के अन्त में 193.9 करोड़ रुपये की और रकम ली थी। इस तरह चालू वित्त वर्ष में भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कुल मिलाकर 488.1 करोड़ रुपये की रकम ली। अगर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से धन न लिया गया होता तो भारत की प्रारक्षित विदेशी मुद्रा राशि में 1974–75 के पहले नौ महीनों में 485.3 करोड़ रुपये की कमी हो जाती। इस रकम से यह पता चलता है कि जितनी रकम हमें मिली उससे कितनी ज्यादा अदायगी हमारे द्वारा की गयी। इसके अलावा इससे इस अवधि में हमारे भुगतान शेष की वास्तविक कमी का पता चलता है। वर्तमान संकेतों के अनुसार, संभव है कि 1974–75 की अन्तिम तिमाही म भारत की प्रारक्षित राशि में भारी कमी आ जाय।

7.4 भारत के समूचे भुगतान शेष की स्थिति 1974–75 में जो कि खराब हो गयी है वह 1973–74 की सन्तोषजनक स्थिति से बिल्कुल उल्टी है। सीमा शुल्क के आंकड़ों के अनुसार व्यापारिक घाटा 437.7 करोड़ रुपये था लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से उसके द्वारा दी जाने वाली प्रतिपूर्ति वित्त प्रबन्ध सुविधा के अन्तर्गत फरवरी 1974 में 62.6 करोड़ रुपये लिये गये। इसका प्रभाव मुख्य रूप से यह हुआ कि भारत की प्रारक्षित मुद्रा राशि में 1973–74 में 100.7 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई। अगर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से यह रकम न भी ली गयी होती, तो प्रारक्षित राशि में लगभग 38 करोड़ रुपये की वृद्धि होती। इस वृद्धि का एक कारण यह भी है कि कुछ निर्यात के एक अंश की अदायगी परिवर्तनीय मुद्राओं में की गयी। इस बात के संकेत भी मिले हैं कि सम्भवतः गैर-कानूनी प्रयोजनों के लिए विदेशी मुद्रा की चोरी कम होने जैसे कारणों से भी अदृश्य स्रोतों से होने वाली निवल प्राप्तियों में वृद्धि हुई। विदेशों से 1973–74 में सहायता के रूप में जो निवल रकम प्राप्त हुई वह पहले की अपेक्षा अधिक थी और यह भी एक अनुकूल कारण था।

7.5 चालू वित्त वर्ष में भारत के भुगतान शेष पर दबाव मुख्य रूप से आयात की जाने वाली वस्तुओं की कीमत में तेजी से वृद्धि होने के कारण पड़ा। अगर निर्यात को मूल्य के रूप में आंका जाये तो उत्साहजनक सुधार दिखायी पड़ता है। विदेशी सहायता की प्राप्तियों में भी कुछ वृद्धि हुई है। आन्तरिक सुरक्षा कानून के अन्तर्गत तस्करों के विरुद्ध हाल ही में की गयी कार्रवाई से भी विदेशी मुद्रा की चोरी कम हो गयी है। लेकिन चालू वर्ष में ऊंची वाणिज्यिक कीमतों पर विदेशों से भारी मात्रा में मंगाये गये अनाज के लिये अधिक अदायगियां करने और कच्चे तेल और उर्वरकों के आयात पर भी भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा खर्च करने का भुगतान शेष पर बहुत अधिक दबाव पड़ा है।

7.6 वर्ष 1973–74 के और 1974–75 के पहले आठ महीनों के आयात और निर्यात से सम्बन्धित आंकड़े सीमा-शुल्क के विवरणों में उपलब्ध हैं। इन आंकड़ों के अनुसार 1973–74 में कुल मिलाकर 2483.2 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया था जो 1972–73 में किये गये निर्यात से लगभग 26 प्रतिशत अधिक था। दूसरी ओर, कुल 2920.9 करोड़ रुपये के मूल्य का आयात किया गया जिससे यह पता चलता है कि इसमें 1972–73 में किये गये आयात की तुलना में 56.4 प्रतिशत की तेजी से वृद्धि हुई है। इस प्रकार 1973–74 में 437.7 करोड़ रुपये का काफी अधिक व्यापारिक घाटा हुआ जबकि 1972–73 में 103.4 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था। वर्ष 1973–74 में आयात का खर्च तेजी से बढ़ने का मुख्य कारण पेट्रोलियम और इससे बनी चीजों की कीमतों का ऊंचा होना और उर्वरकों, अलौह धातुओं और लोहे और इस्पात जैसी आयात की जाने वाली अन्य मुख्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि का होना था। अनाज और वनस्पति तेलों के आयात में वृद्धि होने के कारण भी जिनकी कीमतें काफी बढ़ गयी थीं, कुल खर्च में बढ़ोत्तरी हुई।

7.7 वर्ष 1974–75 के पहले आठ महीनों में (अप्रैल से नवम्बर तक) निर्यात की वृद्धि की अपेक्षा अधिक आयात की प्रवृत्ति बनी रही। इस अवधि में, निर्यात में लगभग 36.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि आयात का मूल्य लगभग 54 प्रतिशत बढ़ गया। अप्रैल से नवम्बर, 1974 तक की अवधि में 2026.8 करोड़ रुपये का निर्यात और 2451.3† करोड़ रुपये के मूल्य का आयात किया गया जिसके परिणामस्वरूप व्यापार शेष में 424.5 करोड़ रुपये का घाटा रहा जबकि 1973–74 के पहले आठ महीनों में केवल लगभग 105.2 करोड़ रुपये का घाटा था।

7.8 वर्ष 1973–74 में, हमारे निर्यात को विश्व में बहुत-सी वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाने के कारण लाभ हुआ। लेकिन इसके साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों में वृद्धि होने से आयात की अतिरिक्त लागत के कारण भारी बोझ भी आ पड़ा जिसका कुल मिलाकर परिणाम यह निकला कि निर्यात की आमदनी में वृद्धि होने से जो लाभ हुआ वह आयात की लागत में होने वाली वृद्धि से न केवल बराबर हो गया बल्कि कुल मिलाकर घाटा ही रहा। वर्ष 1958 को आधार मानकर, वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी के महानिदेशक द्वारा संकलित निर्यात और आयात के यूनिट के मूल्य के सूचकांकों के अनुसार 1973–74 में निर्यात के औसत यूनिट मूल्य में जबकि वृद्धि लगभग 22.3 प्रतिशत की हुई थी, उसके विपरीत हमारे आयात के औसत यूनिट मूल्य में 45.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप हमारा कुल व्यापार 16 प्रतिशत से अधिक गिर गया। उपलब्ध आंकड़ों से 1974–75 में हमारे व्यापार में किसी उल्लेखनीय सुधार का पता नहीं चलता।

7.9 वर्ष 1973–74 में जो इतना अधिक व्यापारिक घाटा हुआ उसके साथ-साथ हमारे व्यापार की क्षेत्रीय दिशाओं में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। खासतौर से, तेल का निर्यात करने वाले देशों से आयात वर्ष 1973–74 में तेजी से बढ़कर 18.2 प्रतिशत हो गया जबकि यह 1972–73 में 10.7 प्रतिशत था। इसी प्रकार ऊत्तर अमेरिका से किये जाने वाले हमारे आयात का अनुपात 1972–73 में 19.6 प्रतिशत से बढ़कर 1973–74 में 22.8 प्रतिशत हो गया। दूसरी ओर, यूरोपीय साझा बाजार के देशों (जिसमें ब्रिटेन भी शामिल है) से हमारा आयात 1972–73 में 30.9 प्रतिशत से कम होकर 1973–74 में 23.4 प्रतिशत रह गया। निर्यात की दिशा में मुख्य बात यह थी कि परिवर्तनीय मुद्रा क्षेत्रों में हमारे निर्यात का अनुपात 1972–73 के 67.6 प्रतिशत से बढ़कर 1973–74 में 78.4 प्रतिशत हो गया। वर्ष 1973-74 में भारत द्वारा किये गये कुल निर्यात में पूर्वी यूरोपीय देशों का हिस्सा 1/5 था और यह 1968–69 और 1969–70 के बराबर ही था।

---

†जब अनाज, पैट्रोलियम और उससे बनी चीजों के आयात के संबंध में और अधिक सूचना मिल जायगी तब नवम्बर के आंकड़ों में संशोधन करने से आयात के आंकड़े और भी अधिक हो सकते हैं।

आयात

7.10 वर्ष 1973–74 में जो आयात (2921 करोड़ रुपये) किया गया वह 1972–73 में किये गये 1867 करोड़ रुपये के आयात के ड्योढ़े से कुछ अधिक था। यद्यपि काजू, कपास, लुगदी और रद्दी कागज, कागज और गत्ते, बिजली की मशीनों और परिवहन के उपकरणों के आयात में कमी हुई, लेकिन अनाज, वनस्पति तेलों, पेट्रोलियम और उससे बनी चीजों, रासायनिक खाद और रासायनिक खाद तैयार करने में काम आने वाले कच्चे माल, अलौह धातुओं, लोहे और इस्पात और पूंजीगत माल के आयात में भारी वृद्धि हुई। इन सात मदों के आयात के कुल मल्य में पिछले साल के मुकाबले 1973–74 में 90 प्रतिशत से भी अधिक की वृद्धि हुई थी।

7.11 1971-72 के प्रमुख वस्तु-समूहों के आयात के आंकड़े नीचे की सारणी में दिखाये गये हैं।

सारणी 7.2

मुख्य वस्तु समूहों के अनुसार भारत का आयात

(करोड़ रुपये)

	1971-72	1972-73	1973-74	अप्रैल से सितम्बर		अप्रैल-सितम्बर 1973 की तुलना में अप्रैल-सितम्बर 1974 में प्रतिशत घट-बढ़
				1974-75	1973-74	
1	2	3	4	5	6	7
1. अनाज	131.4	80.8	473.1	252.1	131.4	+91.1
2. रुई	113.4	90.9	52.0	14.1	32.8	−57.0
3. कच्चा जूट	—	1.1	12.2	1.7	11.4	−85.1
4. चर्बी और वनस्पति तेल	46.5	24.9	64.9	24.9	21.4	+16.4
5. रासायनिक खाद व रासायनिक खाद की सामग्री	111.3	145.7	226.1	194.0	78.0	+148.7
6. पेट्रोलियम और उससे बनी चीजें	194.1	204.0	560.3	586.5	152.6	+284.3
7. धातु	340.0	334.9	382.3	247.7	166.3	+48.9
8. मशीनें तथा परिवहन उपकरण	470.6	532.0	629.0	318.1	284.6	+12.0
9. अन्य	417.4	453.1	521.0	293.2	233.2	+25.7
कुल आयात	1824.5	1867.4	2920.9	1933.0	1111.7	+73.9

7.12 1971-72 और 1972-73 में अनाज की पैदावार के लगातार घटने के कारण 1973-74 में 473.1 करोड़ रुपये की कीमत के लगभग 44 लाख मैट्रिक टन अनाज का आयात करना पड़ा। इसके मुकाबले 1972-73 में 81 करोड़ रुपये से 8 लाख टन अनाज का वास्तविक आयात किया गया था। इस प्रकार 1973-74 में अनाज का आयात कुल आयात का 16 प्रतिशत बैठता है जबकि 1972-73 में यह केवल 4.3 प्रतिशत था। बड़ी मात्रा में अनाज के आयात के अलावा अनाज की ऊंची कीमतों के कारण आयात का खर्च काफी बढ़ गया। वर्ष 1973-74 में तीन मुख्य मदों अर्थात् अनाज, पैट्रोलियम और पैट्रोलियम की चीजों और रासायनिक खाद के आयात पर कुल 1251.5 करोड़ रुपया खर्च हुआ जबकि 1972-73 में इस पर 410.4 करोड़ रुपया खर्च हुआ था।

7.13 वर्ष 1973-74 में रुई का आयात 1972-73 में 91 करोड़ रुपये से घट कर 52.0 करोड़ रुपये का रह गया और इस प्रकार आयात की मात्रा में 50 प्रतिशत की कमी हो गयी। लेकिन आयात की कीमतें ऊंची होने के कारण मूल्य के रूप में हुई कमी उस कमी के अनुसार नहीं थी जो मात्रा में हुई। दूसरी ओर, कच्ची ऊन के आयात में 80.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई और 16.1 करोड़ रुपये की ऊन का आयात किया गया। इस मामले में भी, आयात की मात्रा 1972-73 के 10.0 हजार टन से घट कर 1973-74 में 7.4 हजार टन रह गयी।

7.14 चर्बी और वनस्पति तेलों के आयात में भारी वृद्धि हुई. वर्ष 1972-73 में 24.9 करोड़ रुपये के मूल्य की 1.1 लाख टन ये वस्तुएं बाहर से मंगायी गयीं जबकि 1973-74 में 64.9 करोड़ रुपये मूल्य की 2.1 लाख टन इन वस्तुओं का आयात किया गया। वनस्पति तेल और चर्बी का यूनिट मूल्य लगभग 40 प्रतिशत अधिक था जिसके कारण इन वस्तुओं के आयात पर भारी रकम खर्च करनी पड़ी।

7.15 उर्वरकों और रासायनिक वस्तुओं का आयात वर्ष 1972-73 के 282 करोड़ रुपये से 38 प्रतिशत बढ़कर 1973-74 में 389.3 करोड़ रुपये का हो गया। इस वृद्धि का लगभग 4/5 भाग केवल उर्वरकों के आयात की ऊंची कीमतों के कारण था। कुल मिलाकर 226.1 करोड़

रुपये के मूल्य के 38.3 लाख टन उर्वरक और उर्वरक बनाने के काम आने वाले कच्चे माल का आयात किया गया। वर्ष 1972-73 की तुलना में मात्रा के रूप में यह आयात केवल लगभग 7 प्रतिशत अधिक था लेकिन कीमत के रूप में यह 55 प्रतिशत अधिक था। उर्वरकों और उर्वरक बनाने के काम आने वाले कच्चे माल का संयुक्त यूनिट मूल्य 1972-73 में 407.5 रुपये प्रति टन से बढ़कर 1973-74 में 591 रुपये प्रति टन हो गया।

7.16 आयात के मूल्य में सबसे अधिक वृद्धि पेट्रोलियम और उससे बनी चीजों (पेट्रोल, तेल, ल्युब्रिकेंट) के मामले में हुई। वर्ष 1973-74 में पेट्रोलियम और उससे बनी चीजों के आयात पर कुल 560.3 करोड़ रुपये खर्च हुए जो 1972-73 में किये गये 204 करोड़ रुपये के आयात खर्च से 175 प्रतिशत अधिक है। हालांकि आयात किये गये पेट्रोलियम और उससे बनी चीजों की मात्रा में केवल 14 प्रतिशत से कम की वृद्धि हुई लेकिन इनके यूनिट मूल्य में तेजी से 142 प्रतिशत की वृद्धि हो गयी। इस प्रकार पेट्रोलियम और इससे बनी चीजों का आयात 1973-74 के कुल आयात खर्च का लगभग 19.2 प्रतिशत हो गया जबकि 1972-73 में यह केवल 9.2 प्रतिशत था।

7.17 लुगदी और रद्दी कागज के आयात में 1973-74 में मामूली-सी कमी हुई। कागज और कागज के गत्ते के आयात में भी 2.5 करोड़ रुपये की कमी हुई। हालांकि बिजली की मशीनों और परिवहन उपकरणों का आयात घट गया, लेकिन बिजली से भिन्न मशीनों और धातु की बनी चीजों के आयात में तेजी से वृद्धि हुई। कुल मिलाकर पूंजीवाले माल के आयात में, केवल 18.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई जिसमें कीमतों में होने वाली वृद्धि भी शामिल है। ऐसा मालूम होता है कि देश में औद्योगिक कार्यों की गति धीमी हो जाने और विदेशों में कीमतों के बढ़ जाने के कारण पूंजीगत माल का आयात किया जाना रुक गया है।

7.18 यद्यपि मूल्यों के रूप में लोहे, इस्पात और अलौह धातुओं का आयात बढ़ा है, लेकिन मात्रा के रूप में इसमें काफी कमी आयी है। 1973-74 में 242.6 करोड़ रुपये के 1012 हजार टन लोहे और इस्पात का आयात किया गया जबकि 1972-73 में 225.8 करोड़ रुपये के मूल्य के 1222 हजार टन का आयात किया गया था। इस प्रकार इनके यूनिट मूल्य में लगभग 30 प्रतिशत की औसत वृद्धि हुई। इसी प्रकार अलौह धातुओं के आयात के मामले में भी जहां आयात का मूल्य 1972-73 में 104.2 करोड़ रुपये से बढ़ कर 1973-74 में 133.0 करोड़ रुपये हो गया, आयात की गयी इन धातुओं की मात्रा 1806 लाख किलोग्राम से घट कर 1592 लाख किलोग्राम रह गयी। कीमतों में तेजी से वृद्धि होने के परिणामस्वरूप तांबे, निकल, जस्ते, जिंक और टिन के यूनिट मूल्यों में 15 से लेकर 48 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।

7.19 ऊपर बतायी गयी मुख्य मदों के आयात के स्वरूप से यह पता चलता है कि 1973-74 में हमारे आयात के मूल्य में जो इतनी अधिक वृद्धि हुई थी वह मुख्यत: विदेशों में ऊंची कीमतों के कारण है और यह हमारे आयात व्यापार की मात्रा में किसी महत्वपूर्ण वृद्धि की सूचक नहीं। अनाज और वनस्पति तेलों को छोड़कर, जिनका 1973-74 में बड़ी मात्रा में आयात किया गया था, हमारे अन्य आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि नहीं हुई। चीजों का थोड़ी मात्रा में मिल सकना और विदेशों में ऊंची कीमतों को देखते हुए आयात के द्वारा देश में कमी को पूरा करने की गुंजाइश बहुत कम थी और आयात की लागत में वृद्धि होने का असर यह हुआ कि देश में निर्मित माल की लागत में वृद्धि हो गयी।

7.20 वर्ष 1974-75 के पहले आठ महीनों (अप्रैल से नवम्बर तक) में भारत द्वारा कुल 2451.3 करोड़ रुपये के मूल्य का आयात किया गया जो 1973.74 की इसी अवधि में किये गये आयात से 54 प्रतिशत अधिक है। आयात की गयी इन चीजों का अलग-अलग ब्यौरा केवल अप्रैल से सितम्बर 1974 तक का ही उपलब्ध है। इन छ: महीनों में हमारे आयात के मूल्य में लगभग 821.3 करोड़ रुपये की जो कुल वृद्धि हुई है उसमें लगभग 89 प्रतिशत वृद्धि पेट्रोलियम या उससे बनी चीजों, उर्वरकों, अनाज और लोहे और इस्पात के आयात में या आयात के मूल्य में हुई वृद्धि के कारण हुई जो 729.4 करोड़ रुपयों का हुआ। अलौह धातुओं के कारण आयात के कुल मूल्य में 3.2 प्रतिशत की और वृद्धि हुई जबकि दूसरी ओर रुई, कच्चे जूट और गैर-धात्विक खनिजों से बनी चीजों के आयात के मूल्य में कमी हुई।

आयात के लिए लाइसेंस देना

7.21 आयात के लाइसेंस जारी करने और इस लाइसेंस का इस्तेमाल किये जाने के समय में अन्तर होने के कारण वर्ष में किये गये आयात के मूल्य और जारी किये गये आयात लाइसेंसों के मूल्य के बीच परस्पर कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं होता। लेकिन, 1973-74 में हमारे आयात के मूल्य में हुई 56.4 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में इस अवधि में जारी किये गये आयात लाइसेंसों के मूल्य में 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस वर्ष जारी किये गये लाइसेंसों का मूल्य 2333 करोड़ रुपये था जबकि 1972-73 में 1856 रुपये के लाइसेंस जारी किये गये थे। कुल मिला कर जितने मूल्य के लाइसेंस जारी किये गये, उसमें बड़ा हिस्सा सरकारी क्षेत्र का था। वर्ष 1973-74 में जारी किये गये लाइसेंसों के मूल्य में से इस क्षेत्र के लाइसेंसों के मूल्य में लगभग 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई और जारी किये गये लाइसेंसों के कुल मूल्य में सरकारी क्षेत्र का हिस्सा लगभग 71 प्रतिशत बैठता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के मामले में केवल थोड़ी-सी अर्थात् 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 1973-74 की आयात नीति में कुल मिलाकर कोई परिवर्तन नहीं किया गया लेकिन निर्यात को बढ़ावा देने के लिए आयात की व्यवस्था में और ढील दी गयी।

7.22 नीचे दी गयी सारणी में 1970-71 से प्रमुख श्रेणियों के आयातकों को दिये गये लाइसेंसों के जारी किये जाने के क्रम का पता चलता है:-

सारणी 7.3

आयात लाइसेंसों का श्रेणीवार क्रम

(करोड़ रुपये)

श्रेणियां	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74	अप्रैल--अक्तूबर		प्रतिशत परिवर्तन कालम 7/6
					1973-74	1974-75	
1	2	3	4	5	6	7	8
1. स्थायी आयातक	41.8	40.8	55.3	38.5	14.3	19.7	+38
2. वास्तविक उपयोगकर्ता	311.9	368.3	376.0	483.4	199.4	359.8	+80
3. तकनीकी विकास महानिदेशालय के यूनिट	385.0	252.7	171.2	198.2	85.4	91.1	+7
4. लघु उद्योग	83.3	1118.0	86.4	82.9	29.6	34.9	+18
5. पंजीकृत निर्यातक	94.7	93.4	136.0	151.3	77.3	77.7	नगण्य
6. पूंजीगत माल	127.1	252.2	268.0	261.6	148.3	101.1	--32
7. सीमाशुल्क अनुमति परमिट	32.9	32.0	58.1	65.4	35.5	63.3	+78
8. सरकारी व्यापार एजेंसियां	444.6	587.6	620.9	948.3	549.8	607.3	+10
9. अन्य	112.7	108.7	83.8	104.1	62.5	67.6	+8
जोड़	1633.9	1853.7	1855.7	2333.7	1202.0	1422.4	+18

7.23 स्थायी आयातकों और लघु उद्योगों की यूनिटों को छोड़कर अन्य सभी श्रेणियों को जारी किये गये लाइसेंसों का मूल्य 1973-74 में काफी अधिक था। सबसे अधिक वृद्धि सरकारी व्यापार एजेंसियों के मामले में हुई क्योंकि हमारी बहुत-सी वस्तुओं का आयात अब इन्हीं एजेंसियों के माध्यम से किया जाता है। इस श्रेणी के अन्तर्गत जारी किये गये लाइसेंसों का मूल्य 1972-73 के 620.9 करोड़ रुपये से बढ़कर 1973-74 में 948.3 करोड़ रुपये हो गया अर्थात् इसमें 53 प्रतिशत की वृद्धि हुई। एक अन्य श्रेणी जिसको जारी किये गये लाइसेंसों के मूल्य में 28.5 प्रतिशत की काफी अधिक वृद्धि हुई, वह वास्तविक उपयोगकर्ताओं की श्रेणी थी। यह उनके द्वारा किये गये निर्यात के परिणामों के आधार पर उन्हें तरजीह दिये जाने और फालतू पुर्जों और हिस्सों को आयात की मात्रा में ढील दिये जाने के कारण हुआ। दूसरी ओर, स्थायी आयातकों के नाम जारी किये जाने वाले आयात लाइसेंसों में 30.4 प्रतिशत की कमी हुई जिसका कारण उनके लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों के फालतू हिस्सों, औषधियों और दवाइयों, मोटर गाड़ियों के हिस्सों और औजारों जैसी 26 मदों के कोटे में कमी का किया जाना था।

7.24 वर्ष 1974-75 के पहले सात महीनों में जारी किये गये आयात लाइसेंसों के मूल्य में पिछले वर्ष इसी अवधि में जारी किये गये लाइसेंसों के मूल्य की तुलना में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस अवधि में वास्तविक उपयोगकर्ताओं के नाम जारी किये गये आयात लाइसेंसों के मूल्य में 80 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अधिक संख्या में उद्योगों को प्राथमिकता दिया जाना, लाइसेंसों की प्रक्रिया का सरल बना दिया जाना और पुनरावृत्ति के आधार पर पुनर्भरण लाइसेंसों का बनाया जाना आदि कुछ ऐसी बातें हैं, जिनके कारण इस श्रेणी के उद्योगों के नाम जारी किये गये लाइसेंसों के मूल्य में वृद्धि हुई। लघु उद्योगों को जारी किये गये लाइसेंसों के मूल्य में भी 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई जिसका कारण इन उद्योगों द्वारा विदेशी सप्लायरों को सीधे आर्डर देने और किये गये काम के आधार पर माल के पहले छः महीने के लिए अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आयात का प्रबंध करने की रियायत देनी तथा पिछड़े क्षेत्रों में खोले गये लघु उद्योगों के लिए कच्चे माल, हिस्सों और अतिरिक्त पुर्जों का आयात करने की सुविधाओं का विस्तार करना था।

निर्यात

7.25 वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी के महानिदेशक के अनुसार 1973-74 में भारत का कुल निर्यात 2483.2 करोड़ रुपये का हुआ था जो 1972-73 के 1970.8 करोड़ रुपये के निर्यात से 512.4 करोड़ रुपये या 26 प्रतिशत अधिक था। यह चौथी पंचवर्षीय आयोजना के पहले चार वर्षों में (1968-69 से 1972-73 तक) लगभग 9.7 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि दर से हुई बढ़ोतरी के बराबर है। वर्ष 1973-74 में हुई वृद्धि को हिसाब में ले लेने के बाद, चौथी आयोजना की समूची अवधि में निर्यात के मूल्य में हुई वृद्धि की वार्षिक औसत दर 12.8 प्रतिशत बैठती है।

7.26 वर्ष 1973-74 में हमारी निर्यात आमदनी में 26 प्रतिशत की वृद्धि की दर देश के अन्दर उत्पादन में आने वाली रुकावटों को देखते हुए हालांकि महत्वपूर्ण है, लेकिन विश्व व्यापार में हुई वृद्धि या विकासशील देशों के निर्यात में कुल मिलाकर हुए विस्तार के अनुरूप नहीं है। मिसाल के तौर पर वर्ष 1973 में विश्व निर्यात के मूल्य में 37.8 प्रतिशत और विकासशील देशों (तेल का निर्यात करने वाले विकासशील देशों को छोड़कर) के निर्यात में 45 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई थी। इसके मुकाबले, भारत के निर्यात में, 1973 में केवल 31.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। हालांकि विश्व के निर्यात में कम विकासशील देशों का (तेल का निर्यात करने वाले विकासशील देशों को छोड़कर) हिस्सा 1972 में 11.7 प्रतिशत से बढ़कर 1973 में 12.4 प्रतिशत हो गया था, लेकिन विश्व निर्यात में हमारा हिस्सा 1972 में 0.66 प्रतिशत के

मुकाबले 1973 में कम हो कर 0.63 प्रतिशत रह गया। इसके अलावा, हमारे निर्यात में जो वृद्धि हुई, वह आयात में हुई वृद्धि से कहीं कम थी जिसके परिणामस्वरूप हमारे विदेशी व्यापार का सन्तुलन और भी बिगड़ गया।

7.27 1973-74 में निर्यात की आमदनी में वृद्धि मुख्यतः संसार में कई वस्तुओं के यूनिट मूल्यों के बढ़ जाने के परिणामस्वरूप अधिक रकम प्राप्त होने के कारण हुई। वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी के महानिदेशालय के निर्यात की मात्रा के सूचक अंक के अनुसार 1958 को आधार मानते हुए हमारे निर्यात की मात्रा में 1972-73 में हुई 11.3 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 1973-74 में केवल 3.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस प्रकार 1973-74 में निर्यात की आमदनी में हुई 512.4 करोड़ रुपये की कुल वृद्धि में से लगभग 14 प्रतिशत वृद्धि मात्रा में हुई बढ़ोतरी और शेष 86 प्रतिशत वृद्धि अधिक यूनिट मूल्य प्राप्त होने के कारण हुई।

7.28 1973-74 में विनिमय दर प्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और रुपये का केन्द्रीय मूल्य एक पौण्ड स्टर्लिंग = 18.97 रुपये पर स्थिर रहा। हाल के वर्षों में भारत की विनिमय दर संबंधी नीति से, देश में मुद्रास्फीति का भारी दबाव होने पर भी भारत के निर्यात को आगे बढ़ाये रखने की कोशिश करने में सहायता मिली है। जब संसार की सभी मुद्राओं को अपना-अपना सममूल्य तय करने के लिए खुला छोड़ा दिया गया हो, तब विनिमय दरों की व्यवस्था में पूरे तौर पर स्थिरता की कल्पना करना वास्तविकता से आंखें मूंदना होगा। फिर भी, यह बात नोट करने की है कि वर्ष 1973-74 में व्यापार-भारिता के आधार पर भी उन ग्यारह देशों की मुद्राओं की तुलना में, जिनके साथ हमारा 60 प्रतिशत तक विदेशी व्यापार होता है, रुपये की वास्तविक विनिमय दर में 2.89 प्रतिशत से अधिक की कमी नहीं हुई।

7.29 1973-74 में मुख्य रूप से खली, सूती कपड़ा, इंजीनियरी के सामान, हस्तशिल्प, मछली और मछली की बनी हुई चीजों, सिले-सिलाये सूती कपड़ों, चीनी, मूंगफली, खनिज लोहे और नकली रेशम के कपड़ों के निर्यात से होने वाली आमदनी में काफी वृद्धि हुई। 1973-74 में आयात की आमदनी में हुई 512.4 करोड़ रुपये की वृद्धि में से इन दस वस्तुओं का हिस्सा कुल मिलाकर लगभग 89 प्रतिशत बैठता है। दूसरी ओर जिन मदों का निर्यात मूल्य कम हो गया उनमें जूट से बनी चीजें, चाय, चमड़ा और चमड़े से बनी चीजें, अभ्रक, सूती धागा और खनिज ईंधन और लुब्रिकेंट शामिल हैं। नीचे दी गयी सारणी 7.4 में 1971-72 से 1973-74 तक तथा अप्रैल से सितम्बर 1974 तक मुख्य वस्तुओं के अनुसार निर्यात का क्रम दिखाया गया है।

सारणी 7.4

मुख्य वस्तुओं का निर्यात

(कीमत करोड़ रुपयों में)

मद/समूह	1971-72	1972-73	1973-74	1972-73 के मुकाबले 1973-74 में प्रतिशत घट-बढ़	अप्रैल–सितम्बर		अप्रैल–सितम्बर 1973 के मुकाबले अप्रैल सितम्बर 1974 में हुआ प्रतिशत परिवर्तन
					1973	1974	
1. खली	40.2	74.8	170.6	+128.0	43.6	90.5	+51.8
2. तम्बाकू	45.1	63.9	70.9	+11.0	56.2	45.7	+23.1
3. मछली और मछली से बने पदार्थ	42.0	54.5	88.4	+62.3	31.8	41.7	+23.4
4. चाय	156.3	147.3	144.9	−1.7	88.1	60.0	+46.8
5. काफी	22.1	32.9	46.0	+39.7	32.8	26.4	+24.5
6. चीनी	30.2	13.3	42.2	+218.0	100.7	5.6	+1705.4
7. काजू की गिरी	61.3	68.8	74.4	+8.2	66.1	46.2	+43.0
8. मूंगफली	5.8	5.4	32.5	+501.8	10.6	5.7	+87.6
9. खनिज लोहा	104.7	109.8	132.8	+21.0	49.3	55.2	+10.8
10. सूती कपड़ा	76.7	100.9	192.2	+90.4	93.6	77.3	+21.1
11. सिले-सिलाये सूती कपड़े	14.0	29.9	63.7	+113.5	48.3	15.9	+204.2
12. नकली रेशम का कपड़ा	7.5	9.6	27.9	+190.6	10.7	8.2	+30.7
13. जूट से बनी वस्तुएं	265.3	250.0	227.3	−9.1	169.4	111.2	+52.3
14. चमड़ा, चमड़े से बनी वस्तुएं (जूतों को छोड़कर)	90.8	174.5	171.4	−1.9	76.5	93.3	−18.0
15. इंजीनियरी का सामान	122.3	141.0	201.3	+42.8	141.1	75.9	+85.8
16. हस्तशिल्प की वस्तुएं	81.7	119.7	164.1	+37.1	84.7	59.0	+43.5
17. अन्य	442.3	574.5	632.6	+10.0	411.1	257.0	+60.0
कुल निर्यात	1608.2	1970.8	2483.2	+26.0	1514.6	1074.8	+40.9

7.30 वर्ष 1973-74 में जूट से बनी चीजों के निर्यात मूल्य में 9.1 प्रतिशत की कमी हुई अर्थात् 1972-73 में 250.00 करोड़ रुपये के निर्यात के मुकाबले 1973-74 में 227.4 करोड़ रुपये के मूल्य का निर्यात किया गया। यह कमी निर्यात की मात्रा के कम होने और यूनिट मूल्य में कमी होने दोनों के कारण हुई। मुख्यतः संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ जैसे मुख्य बाजारों द्वारा कम माल उठाने के कारण जूट से बनी वस्तुओं के निर्यात में 1972-73 की अपेक्षा 3.1 प्रतिशत की कमी हुई। इस उद्योग को पावर की सप्लाई में कमी होने के कारण आन्तरिक उत्पादन घट गया और जनवरी-फरवरी 1974 में 33 दिन की हड़ताल के कारण भी निर्यात में कमी हो गयी। निर्यात से होने वाली यूनिट मूल्य प्राप्तियों में 6.1 प्रतिशत की कमी हुई जिसका आंशिक कारण जून और अगस्त 1973 में निर्यात शुल्क में कमी किया जाना है। पहले यह आशा की गयी थी कि पेट्रोलियम की कीमतें बढ़ जाने के कारण जूट के स्थान पर काम आने वाली सिन्थेटिक वस्तुओं के मुकाबले जूट से बनी वस्तुओं से अपेक्षाकृत काफी अधिक कीमत मिलेगी, लेकिन 1973-74 में यह आशा पूरी नहीं हुई क्योंकि शुरू में सिन्थेटिक प्रोलिप्रोपिलीन के उत्पादन की लागत में मामूली-सी वृद्धि हुई।

7.31 चाय के निर्यात मूल्य में भी 2.4 करोड़ रुपये की थोड़ी-सी कमी हुई थी। यद्यपि चाय के यूनिट मूल्य में थोड़ी हानि हुई लेकिन चाय के निर्यात पर बुरा असर इस बात का पड़ा कि 1972-73 के मुकाबले निर्यात 1.5 प्रतिशत या 29 लाख किलोग्राम कम किया गया।

7.32 चमड़े और चमड़े से बनी वस्तुओं के निर्यात में भी 1.9 प्रतिशत की थोड़ी-सी कमी हुई। 1972-73 में 174.5 करोड़ रुपये के मूल्य के निर्यात के मुकाबले 1973-74 में 171.4 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया। जिन और वस्तुओं के निर्यात में कमी हुई वे थीं खनिज-ईंधन और ल्यूब्रिकेंट। इनके निर्यात में तेजी से 52 प्रतिशत की कमी हुई। 1972-73 में 31.96 करोड़ रुपये के मूल्य के निर्यात के मुकाबले 1973-74 में इनका निर्यात मूल्य 15.32 करोड़ रुपये रह गया। अभ्रक के निर्यात में भी कमी हुई; 1972-73 में 16.61 करोड़ रुपये के निर्यात के मुकाबले 1973-74 में 12.99 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया। इस कमी का कारण यूनिट मूल्य में 18.2 प्रतिशत और मात्रा में 4.5 प्रतिशत कमी होना था।

7.33 प्राथमिक वस्तुओं के निर्यात में सबसे अधिक सफलता खली के निर्यात में मिली। खली का निर्यात 1972-73 में 74.77 करोड़ रुपये से बढ़कर 1973-74 में 170.60 करोड़ रुपये का हो गया अर्थात् इसके निर्यात में 95.83 करोड़ रुपये की या 128 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यह वृद्धि अधिक यूनिट मूल्य की प्राप्ति होने और अधिक मात्रा में निर्यात किये जाने के कारण हुई। वर्ष 1973-74 में 1224.5 हजार मेट्रिक टन खली का निर्यात किया गया अर्थात् इसमें 22.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। किन्तु यूनिट कीमत में 747 रुपये प्रति मैट्रिक टन से 1393 रुपये प्रति मैट्रिक टन की वृद्धि हो गयी जो बहुत अधिक थी। खली का निर्यात अधिकतर जापान, ब्रिटेन, इटली और नीदरलैण्ड को किया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा सोयाबीन के आटे के निर्यात पर पाबन्दी लगा दिये जाने और पेरू से सूखी मछली का आटा न मिलने के कारण खली के निर्यात के तेजी से बढ़ने में बहुत सहायता मिली। खली की मांग खासतौर से विस्तृत यूरोपीय साझा बाजार और जापान से बहुत अधिक थी, लेकिन देश में इसके उत्पादन में रुकावटें आने के कारण यह पूरी नहीं की जा सकी।

7.34 मिल का बना और हथकरघे का, दोनों प्रकार का सूती कपड़ा एक और ऐसी मद थी, जिसका हाथ वर्ष 1973-74 में निर्यात में हुई वृद्धि में बहुत बड़ा था। इस वर्ष 192.2 करोड़ रुपये के मूल्य के सूती कपड़े का निर्यात किया गया जो 1972-73 के निर्यात मूल्य से 91.3 करोड़ रुपया या 90.4 प्रतिशत अधिक था। मिल के बने और हथकरघे के बने, दोनों प्रकार के सूती कपड़ों के निर्यात की मात्रा में लगभग 44 प्रतिशत की वृद्धि हुई और उनके यूनिट मूल्यों में क्रमशः 32 और 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई। रुई की सप्लाई की स्थिति अच्छी होने, विदेशों में सिन्थेटिक कपड़ों के बजाय सूती कपड़ों के सस्ते होने के कारण इसकी मांग में वृद्धि होने से सूती कपड़े का निर्यात तेजी से बढ़ गया। संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ और ब्रिटेन को किये जाने वाले नियमित निर्यात के अलावा जापान को अधिक निर्यात किये जाने के कारण सूती वस्त्रों का निर्यात बढ़ाने में काफी सहायता मिली। मिले-सिलाये सूती कपड़ों का निर्यात, जो अपेक्षाकृत महंगी मद है 1972-73 में 29.85 करोड़ रुपये से बढ़कर 1973-74 में 63.74 करोड़ रुपये का हो गया और इस प्रकार इसमें 113.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

7.35 1973-74 में जिन अन्य मदों की निर्यात आय में वृद्धि हुई थी वे थीं अनिर्मित तम्बाकू, काफी, काजू की गिरी, नारियल के रेशे से बना धागा और उससे बनी अन्य वस्तुएं और दस्तकारी का सामान। काफी, अनिर्मित तम्बाकू, काजू की गिरी और नारियल के रेशे से बने धागे और उससे बनी अन्य वस्तुओं के निर्यात से होने वाला लाभ इन वस्तुओं के यूनिट मूल्यों में वृद्धि हो जाने के कारण हुआ। दस्तकारी के सामान के निर्यात में 44.4 करोड़ रुपये की उल्लेखनीय वृद्धि हुई और इसका निर्यात 1972-73 में 119.7 करोड़ रुपये से बढ़कर 1973-74 में 164.1 करोड़ रुपये का हो गया। केवल मोतियों और रत्नों के निर्यात में जो इस मद के प्रमुख अंग हैं, 37 प्रतिशत के करीब वृद्धि हुई। यह वृद्धि मुख्यतः हांगकांग, संयुक्त राज्य अमेरिका, बैल्जियम और जापान जैसे देशों को किये जाने वाले निर्यात में हुई।

7.36 देश में चीनी के उत्पादन में कमी होने के कारण, 1972-73 में इसके निर्यात को जबरदस्त धक्का लगा था। वर्ष 1973-74 में विश्व में चीनी की कीमतों में वृद्धि होने और देश में उत्पादन में वृद्धि होने के कारण चीनी के निर्यात में काफी सुधार हुआ। वर्ष 1973-74 में 42.2 करोड़ रुपये की चीनी का निर्यात किया गया जबकि 1972-73 में 13.3 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया था। वर्ष 1972-73 की अपेक्षा इसके यूनिट मूल्य से लगभग 30 प्रतिशत अधिक प्राप्ति हुई। वर्ष 1973-74 में चीनी के निर्यात के सम्बन्ध में मुख्य बात यह थी कि इण्डोनेशिया, ईरान, दक्षिण यमन गणराज्य और कुवैत जैसे तेल उत्पादक देश मुख्य खरीदारों के रूप में सामने आये।

7.37 गैर-परम्परागत निर्यात में इंजीनियरी के सामान के निर्यात में और सुधार हुआ। वर्ष 1972-73 में 141 करोड़ रुपये के निर्यात के मुकाबले 1973-74 में इन वस्तुओं का निर्यात बढ़कर 201 करोड़ रुपये का हो गया अर्थात् इसमें लगभग 43 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पहले के वर्षों में इंजीनियरी के सामान के निर्यात में वृद्धि की दर कुछ कम थी। 1973-74 में इन वस्तुओं के निर्यात में होने वाले सुधार से इस बात के संकेत मिलते हैं कि विदेशों में इस मद से लाभ की गुंजाइश काफी है।

7.38 रेलों के आने-जाने और श्रमिक अशान्ति से पैदा होने वाली कठिनाइयों के बावजूद 1973-74 में 132.8 करोड़ रुपये के मूल्य के लोह खनिज का निर्यात किया गया जबकि 1972-73 में 110 करोड़

रुपये का निर्यात किया गया था अर्थात् इसमें 21 प्रतिशत की वृद्धि हुई। निर्यात की मात्रा में भी 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और यूनिट मूल्यों की प्राप्तियों में भी 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। मछली और मछली से बने खाद्य पदार्थों के निर्यात में 62 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई और 1973–74 में इसके निर्यात का मूल्य 88.4 करोड़ रुपये तक किया गया। इन निर्यातों के यूनिट मूल्यों में लगभग 20 प्रतिशत की और निर्यात की मात्रा में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसमें से आधे से ज्यादा माल का निर्यात जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका को किया गया।

7.39 वर्ष 1973–74 में निर्यात से हमें कुल मिलाकर जो अधिक आमदनी हुई वह मुख्यतः अधिक कीमत वसूल होने के कारण थी जिसके लिए हमें विश्व की मंडियों में तेजी आ जाने की स्थिति का आभार मानना चाहिए। हमने विश्व की मौजूदा परिस्थितियों का फायदा सूती वस्त्रों, खली, चीनी, मछली और मछली से बने खाद्य पदार्थों, नकली रेशम के वस्त्रों और काफी जैसी वस्तुओं के निर्यात की मात्रा बढ़ा कर उठाया गया। इंजीनियरी के सामान के निर्यात में भी सुधार हुआ। लेकिन साथ ही जूट से बनी वस्तुओं, चाय और नारियल के रेशे से बने धागे और उससे बनी अन्य वस्तुओं जैसे हमारे कुछ मुख्य परम्परागत निर्यातों में कुछ कमी हुई और इसका स्तर पहले के वर्षों के स्तर से कम रहा। वर्ष 1973–74 में किये गये निर्यात पर यदि हम इस दृष्टि से विचार करें तो उनसे कोई ऐसा वास्तविक संकेत नहीं मिलता कि हमें निर्यात में कोई उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। तेजी की लहर पहले से ही गिर रही है और खली जैसी वस्तुओं की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतें गिर चुकी हैं। हमारे निर्यात की दो मुख्य मदों अर्थात् जूट से बनी वस्तुओं और चाय की कीमतों में वृद्धि होने से कोई लाभ नहीं हुआ। वर्ष 1973–74 के अनुभव से हमें यह भी पता चलता है कि देश में उत्पादन के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों और रुकावटों के कारण हम विदेशी बाजारों में मौके का पूरी तरह से फायदा नहीं उठा पाते। इससे इस समय देश में बाहर भेजी जा सकने वाली चीजों के उत्पादन के रास्ते में आने वाली रुकावटों को तेजी से दूर करने की आवश्यकता बढ़ जाती है और जहां संभव हो देश में उन चीजों के खपत को कम किया जाना चाहिए जिससे निर्यात के लिए काफी माल प्राप्त हो सके और विदेशी बाजारों में आने वाले मौकों का पूरा-पूरा फायदा उठाया जा सके।

7.40 वर्ष 1974-75 के पहले आठ महीनों (अप्रैल से नवम्बर तक) में भारत से कुल 2026.8 करोड़ रुपये के मूल्य का निर्यात किया गया जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में किये गये 1488.1 करोड़ रुपये के निर्यात से 36.2 प्रतिशत अधिक है। निर्यात में इतनी अधिक वृद्धि हमारे दो मुख्य परम्परागत निर्यातों की अर्थात् जूट से बनी वस्तुओं और चाय के मामले में पहले की प्रतिकूल प्रवृत्ति में कुछ परिवर्तन होने, सूती कपड़े और इंजीनियरी के सामान तथा निर्मित तम्बाकू, काफी, काली मिर्च और अभ्रक जैसी वस्तुओं के निर्यात में लगातार बढ़ोतरी होने व चीनी और किसी हद तक चांदी के भारी निर्यात के लिये आकस्मिक परिस्थितियों का संयुक्त परिणाम है।

7.41 निर्यात का वस्तुवार ब्यौरा अब तक केवल 1974-75 के पहले छह महीनों (अप्रैल से सितम्बर तक) का ही उपलब्ध है। इस अवधि में हमारे निर्यात व्यापार के सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य मुख्य बात यह है कि हमारी दो मुख्य परम्परागत मदों अर्थात् जूट से बनी वस्तुओं और चाय के निर्यात मूल्य में भारी वृद्धि हुई है। इस अवधि में जूट की बनी 169.4 करोड़ रुपये के मूल्य की वस्तुओं का निर्यात किया गया जो पिछले साल इसी अवधि में किये गये निर्यात से 52.3 प्रतिशत अधिक था। मात्रा के रूप में 28.6 प्रतिशत की और यूनिट मूल्य के रूप में 18.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस अवधि में 88.05 करोड़ रुपये के मूल्य की चाय का निर्यात किया गया अर्थात् इसमें 46.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। चाय के निर्यात यूनिट मूल्य में जिसमें 1973-74 में वास्तव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, इस अवधि के दौरान लगभग 49.2 प्रतिशत की निवल वृद्धि हुई। लंदन के बाजार में चाय की मांग में एकदम तेजी आने का कारण पूर्वी अफ्रीका में भारी सूखा पड़ना था जिसका चाय की पैदावार पर बहुत बुरा असर पड़ा।

7.42 इस अवधि में अन्य परम्परागत मदों में से सूती कपड़े के निर्यात में सुधार हुआ। सूती कपड़े का निर्यात, पिछले वर्ष की इसी अवधि में किये गये निर्यात से 21.1 प्रतिशत अधिक था। मिल के बने कपड़े के मामले में, निर्यात की मात्रा में 28.8 प्रतिशत की कमी हुई, लेकिन इसके यूनिट मूल्य में 67.9 प्रतिशत की वृद्धि हो जाने के कारण यह कमी न केवल पूरी हो गयी बल्कि और लाभ भी हुआ। हथकरघे के वस्त्रों के सम्बन्ध में, निर्यात की मात्रा में 2.7 प्रतिशत की और इसके साथ-साथ इसके यूनिट मूल्य में 24.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सिले-सिलाये सूती कपड़ों का निर्यात अप्रैल सितम्बर, 1973 में 15.88 करोड़ रुपये से बढ़कर अप्रैल-सितम्बर 1974 में 48.31 करोड़ रुपये हो गया।

7.43 जिन अन्य परम्परागत मदों के निर्यात में वृद्धि हुई वे थीं काजू की गिरी, अनिर्मित तम्बाकू, काफी, काली मिर्च और अभ्रक–काजू की गिरी के निर्यात मूल्य में 43.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आमदनी में वृद्धि, यूनिट मूल्य में 36.3 प्रतिशत की वृद्धि हो जाने के कारण हुई। इसी प्रकार तम्बाकू के मामले में यूनिट मूल्य में 20.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई जिससे निर्यात मूल्य 10.5 करोड़ रुपये बढ़ गया।

काफी के निर्यात से 6.5 करोड़ रुपये अधिक प्राप्त हुए क्योंकि इसके यूनिट मूल्य में 36.4 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि रही। यूनिट मूल्य में लगभग 54.9 प्रतिशत की वृद्धि होने से काली मिर्च के निर्यात मूल्य में 1.6 करोड़ रुपये की वृद्धि हो गयी। जहां तक अभ्रक के निर्यात का सम्बन्ध है, इसकी कीमत पहले कम हो गयी थी लेकिन बाद में यह प्रवृत्ति बिल्कुल बदल गयी और अभ्रक के यूनिट मूल्य में लगभग 118 प्रतिशत की वृद्धि हुई जिससे निर्यात मूल्य दुगना हो गया। अभ्रक के स्थान पर काम में लायी जाने वाली सिन्थेटिक की बनी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो जाने के कारण, इसकी मांग बढ़ने से इसके यूनिट मूल्य में वृद्धि हो गयी।

7.44 अप्रैल-सितम्बर, 1974 के दौरान निर्यात आय में सबसे अधिक वृद्धि चीनी से हुई। इस अवधि के दौरान 100.7 करोड़ रुपये के मूल्य की चीनी का निर्यात किया गया जो अप्रैल-सितम्बर 1973 में किये गये निर्यात मूल्य के मुकाबले 95.1 करोड़ रुपये अधिक था। दुनिया की मंडियों में चीनी की कीमतों में बहुत ज्यादा वृद्धि होने के साथ-साथ विदेशों में चीनी की मांग बढ़ जाने से चीनी का निर्यात बढ़ाने में में बहुत सहायता मिली। चीनी का यूनिट मूल्य प्रति मैट्रिक टन 1294.6 रुपये से बढ़कर 4187.0 रुपये प्रति मैट्रिक टन हो गया। यदि बाजार में चीनी में तेजी जारी रही तो 1974-75 के दौरान चीनी के निर्यात का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन नहीं होगा।

7.45 इंजीनियरी के सामान के निर्यात में भी काफी वृद्धि हुई। लेकिन निर्यात की मात्रा और यूनिट मूल्य में कमी हो जाने के कारण खली के निर्यात में 51.8 प्रतिशत की कमी हो गयी। खली की मांग और मूल्यों में पीरू किस्म की मछलियों के पहले से अधिक संख्या

में पकड़ जाने और सोवियत समाजवादी जनतन्त्र संघ में सूरजमुखी की फसल अच्छी होने के कारण, कमी हो गयी । अप्रैल-सितम्बर, 1974-75 के दौरान खनिज लोहे के निर्यात में भी 5.94 करोड़ रुपये की कमी हो गयी है ।

7.46 ऐसे संकेत हैं कि 1974-75 की दूसरी छमाही में वर्ष की पहली छमाही के निर्यात की ऊंची दर काफी हद तक कम हो जायगी । कुछ वस्तुओं के निर्यात की गति में पहले जो तेजी आयी थी वह पहले ही धीमी पड़ चुकी है । कुछ वस्तुओं के निर्यात में होने वाली लगातार वृद्धि को हिसाब में लेते हुए पूरे वर्ष के लिये आशा है कि कुल मिला कर हमारा निर्यात लगभग 3100 करोड़ रुपये तक पहुंच जायगा जो 1973-74 के मुकाबले लगभग 25 प्रतिशत अधिक होगा । वर्ष 1974-75 में आयात में होने वाली भारी वृद्धि को देखते हुए, निर्यात की इस वृद्धि का अभिप्राय यह है कि भारत के भुगतान शेष में काफी घाटा रहेगा ।

व्यापार नीति

7.47 वर्ष 1974-75 में निर्यात नीति में मोटे तौर पर कोई परिवर्तन नहीं किया गया । इस नीति की मुख्य-मुख्य बातें ये हैं :निर्यात की जाने वाली कुछ चुनी हुई वस्तुओं के लिये आयात पुनर्भरण की व्यवस्था, क्षतिपूर्ति की नकद अदायगी, सीमाशुल्क और उत्पादन शुल्क की वापसी, सामरिक महत्व की वस्तुओं की अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों पर पूर्ति, भाड़े के खर्च में रियायत और रियायती दरों पर उदारता से ऋण देने की सुविधाएं । आयात नीति को और अधिक निर्यात-प्रधान बनाने के विचार से कुछ चुने हुए उपाय किये गये । कुछ वस्तुओं के मामले में जहां आयात पुनर्भरण की दर 50 प्रतिशत से कम थी, चालू वर्ष में 10 प्रतिशत और सामान्य पुनर्भरण की अनुमति दे दी गयी । यह भी निश्चय किया गया है कि कुछ चुने हुए निर्यात उद्योगों को इस बात की इजाजत दे दी जाय कि वे मिट्टी का तेल प्राप्त करने के लिये अपनी पुनर्भरण सुविधा के कुछ भाग का उपयोग कर सकते हैं । अनिवार्य रूप से निर्यात करने की योजना दो और उद्योगों अर्थात् टंगस्टन कार्बाइड टिप्स और टूल्स तथा डोमेस्टिक रेफ्रीजिरेटर्स पर भी लागू कर दी गयी । वर्ष 1974-75 की नीति में इस बात की व्यवस्था की गयी है कि यदि अनिवार्य निर्यात योजना के अन्तर्गत 28 उद्योगों का निर्यात उनके उत्पादन से 5 प्रतिशत कम हो जाता है तो तरजीही तौर पर माल दिये जाने की उनकी पात्रता समाप्त किये जाने के अलावा उनके द्वारा किये जाने वाले आयात में भी कटौती कर दी जायगी । विदेशों में वस्तुओं के मूल्यों में होने वाली वृद्धि से फायदा उठाने के विचार से, बासमती चावल के निर्यात पर से मात्रा सम्बन्धी प्रतिबन्ध हटा लिये गये । 1943 से चांदी और चांदी से बनी वस्तुओं के निर्यात पर जो रोक लगी हुई थी, वह फरवरी, 1974 में हटा ली गयी । नेफ्था के निर्यात की भी मंजूरी दे दी गयी । 24 दिसम्बर, 1974 से गलीचों के नीचे लगाये जाने वाले जूट के अस्तरों पर निर्यात शुल्क काफी कम कर दिया गया और उसे जूट केन्वस तथा जूट के निवार आदि की दरों के स्तर पर ले आया गया ।

7.48 वर्ष 1974-75 के निर्यात अभियान की एक नयी बात यह थी कि इलेक्ट्रानिक उपकरणों और संघटकों के लिए बम्बई के सान्ताक्रुज हवाई अड्डे के निकट एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग जोन की स्थापना की गयी और इस जोन ने सितम्बर, 1974 से अपना काम शुरू कर दिया है ।

7.49 तेल संकट के परिणामस्वरूप भुगतान शेष पर काफी दबाव पड़ने के बावजूद 1974-75 की आयात नीति समग्र रूप से काफी उदार रही । आयात-नीति की अन्य मुख्य बातें थीं : आयात के लिए लाइसेंस पद्धति को सरल बनाना, स्पेयर पुर्जों आदि का उदारता से आयात किये जाने की अनुमति देना, निर्यात सम्बन्धी उद्योगों को तरजीह देना और सरकारी व्यापार एजेंसियों के कार्यक्षेत्र को और व्यापक बनाना । वर्ष की पहली छमाही में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के लघु उद्योगों को आयात सम्बन्धी अपनी आवश्यकताओं के लिए विदेशी सप्लायरों से सीधे बातचीत करने की अनुमति दी गयी और इस काम के लिए 1973-74 में उनके नाम जारी किये गये लाइसेंसों को उनके मूल्य के 50 प्रतिशत तक पहले जारी किये गये लाइसेंसों पर दुबारा माल मंगाने की सुविधा के अन्तर्गत इस अवधि के लिए स्वतः वैध कर दिया गया । निर्माता निर्यातकों को भी आयात पुनर्भरण लाइसेंसों और सरकारी एजेंसियों द्वारा मंगवायी जाने वाली मदों के लिए विदेशी मुद्रा दिये जाने के आर्डरों के सम्बन्ध में ये सुविधाएं दी गयीं । लघु औद्योगिक एककों के मामले में, 1973-74 में कच्चे माल, अतिरिक्त पुर्जों और हिस्सों के लिए जारी किये गये आयात लाइसेंस, उपर्युक्त सुविधाओं के आधार पर, उनके मूल्य के 50 प्रतिशत के लिए स्वतः वैध कर दिये गये थे ।

7.50 प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के वास्तविक उपयोक्ताओं के साथ किये जाने वाले तरजीही व्यवहार में कुछ संशोधन किये गये थे। इसके अनुसार प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के एककों को, जो 1973-74 के दौरान अपने उत्पादन का 10 प्रतिशत अथवा इससे अधिक भाग का निर्यात करते थे, निर्यात-उत्पादन को और अधिक बढ़ाने तथा सप्लाई के तरजीही साधनों से आयात करने की सुविधाएं मिलती रहीं । गैर-प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र में अपने उत्पादन का 20 प्रतिशत अथवा उससे अधिक का निर्यात करने वाले एककों को तरजीह मिलती रही । अपने उत्पादन का 25 प्रतिशत अथवा उससे अधिक का निर्यात करने वाले औद्योगिक एककों को अपनी आवश्यकताओं के लिए मुक्त विदेशी मुद्रा के बदले पहले से अधिक मात्रा में आयात करने की अनुमति दी गयी ।

7.51 स्थापित क्षमता का पहले से अधिक उपयोग करने के विचार से अतिरिक्त पुर्जों आदि के आयात की नीति को उदार बनाया गया । बड़े पैमाने के एककों द्वारा आयात किये जाने वाले अतिरिक्त पुर्जों की सीमा आयात की जाने वाली मशीनरी के मूल्य के 2 1/2 प्रतिशत तक कर दी गयी जो पहले 2 प्रतिशत थी । इसी तरह वास्तविक उपभोक्ताओं द्वारा अतिरिक्त पुर्जों का आयात किये जाने के लिये आयात लाइसेंसों की अधिकतम सीमा बड़े पैमाने के एककों के मामले में 20,000 रुपये और छोटे पैमाने के एककों के मामले में 8,000 रुपये कर दी गयी । पिछड़े क्षेत्रों में खोले गये लघु उद्योगों अथवा इंजीनियरी स्नातकों द्वारा खोले गये उद्योगों को स्थापित मशीनरी के मूल्य के 70 प्रतिशत तक कच्चे माल और पुर्जों के आयात के लाइसेंस दिये जाने की अनुमति दी गयी लेकिन ऐसे आयात का मूल्य अधिक से अधिक 2 लाख रुपये होगा ।

7.52 बड़े पैमाने पर माल की खरीद द्वारा बचत करने और आयात की लागत में कमी करने के विचार से सरकारी क्षेत्र की एजेंसियों के कार्यक्षेत्र का और अधिक विस्तार किया गया । इन एजेंसियों द्वारा आयात की जाने वाली मदों में 10 मदें और जोड़ दी गयीं तथा इन मदों की संख्या 210 हो गयी। कच्चे माल की खरीद और वितरण का कुशलतापूर्वक प्रबन्ध करने के लिए राज्य व्यापार निगम द्वारा स्थापित औद्योगिक कच्चा माल सहायता केन्द्र ने जिसकी स्थापना राज्य व्यापार निगम द्वारा की गयी है डिलीवरी के लिए तैयार माल के सम्बन्ध में कार्यक्षेत्र का और विस्तार कर

दिया तथा माल मंगाने की एजेंसी अर्थात् "इन्डेन्टिंग हाउस" के रूप में भी कार्य किया। खनिज तथा धातु व्यापार निगम भी खनिजों और धातुओं के आयात के मामले में वास्तविक उपभोक्ताओं की डिलीवरी के लिए तैयार माल के आधार पर उनकी आवश्यकता पूरी करने के लिए और निर्यात एककों को माल मंगाने की सुविधाएं देने के लिए प्रबन्ध कर रहा है। हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड द्वारा संचालित स्टील बैंक ने भी महत्वपूर्ण और सामरिक किस्म के इस्पात का भण्डार रखने के प्रबन्ध कर लिये हैं ताकि वैध आयात लाइसेंसों या रिलीज आर्डरों के बदले डिलीवरी के लिए तैयार माल दिया जा सके।

7.53 कच्चे माल को तैयार माल में बदलने के सौदों को आसानी से तय करने के लिए भी आयात नीति के अन्तर्गत प्रबन्ध किये गये। इन प्रबन्धों के अन्तर्गत निर्यात के लिए कच्चे माल के आयात की अनुमति दी गयी। कुछ ऐसी मदों को जिनके आयात की पहले अनुमति नहीं थी, वास्तविक उपभोक्ता सूची में शामिल कर लिया गया। दूसरी ओर कुछ मदों को जो अब देश में बनने लग गयी हैं, आयात की स्वीकृत सूची से निकाल दिया गया। लगभग ऐसी 61 वस्तुओं को आयात की प्रतिबन्धित सूची में रख दिया गया पहले जिनका आयात वास्तविक उपभोक्ता बिना किसी प्रतिबन्ध के कर सकते थे। इन वस्तुओं में इण्डस्ट्रियल रोलर चेन, टंगस्टन आयल फिलामेंट, शुद्ध लोहा, खाम आकार के बाल और रोलर बेयरिंग, कुछ दवाएं और औषधियां शामिल हैं।

7.54 वर्ष के दौरान अन्य देशों के साथ वाणिज्यिक और आर्थिक सम्बन्धों को और घनिष्ठ बनाने के लिये बहुत-से कदम उठाये गये। बल्गारिया के साथ एक नया "व्यापार तथा भुगतान करार" किया गया तथा पश्चिम जर्मनी के साथ एक "वाणिज्यिक विकास कार्यक्रम" के करार पर हस्ताक्षर किये गये। ईरान और कुवैत के साथ दो और नये करार किये गये। एक और उल्लेखनीय घटना यह थी कि बंगलादेश के साथ एक करार किया गया जिसके अनुसार 1975 से व्यापारिक लेनदेन रुपयों में किये जाने के बजाय परिवर्तनीय मुद्राओं में किये जायंगे। अभी हाल ही में भारत-यूरोपीय आर्थिक समुदाय संयुक्त आयोग की बैठक में कुछ समझौते किये गये हैं, जिनके अनुसार यूरोपीय आर्थिक समुदाय अगले एक और वर्ष के लिए जूट और नारियल के रेशे से बनी हमारी वस्तुओं की ब्रिटेन और डेनमार्क में बिना किसी शुल्क के दाखिल होने की अनुमति देगा। यूरोपीय आर्थिक समुदाय द्वारा कोटे और टेरिफ के सम्बन्ध में लगाये गये प्रतिबन्धों में और ढील देने के मामले में भी बातचीत की जा रही है ताकि समुदाय के देशों की मंडियों में महत्वपूर्ण वस्तुओं सहित अन्य वस्तुओं का अधिक मात्रा में निर्यात किया जा सके। आशा है कि यूरोपीय आर्थिक समुदाय भी 1975 की व्यापक रूप से तरजीह देने की अपनी विशेष योजना जी० एम० पी० को और उदार बनायेगा।

विदेशी सहायता

7.55 भारत को मिलने वाली विदेशी सहायता में पिछले कुछ वर्षों में लगातार कमी हो रही थी और 1972-73 में यह सहायता बहुत कम रह गयी थी। किन्तु 1973-74 में सहायता की जो रकम प्राप्त हुई उसका अंकित मूल्य अधिक था। भारत द्वारा आयात की जाने वाली अत्यावश्यक वस्तुओं की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों में वृद्धि हो जाने के परिणामस्वरूप भारत को विदेशी मुद्रा के खर्च के लिए जितनी रकम की जरूरत थी, विदेशी सहायता की उपलब्ध वृद्धि किसी भी तरह उसके लिए काफी नहीं थी। सकल विदेशी सहायता से जितने आयात का प्रबन्ध किया जाता था उसका अनुपात 1967-68 में 60 प्रतिशत से घट कर 1972-73 में 36 प्रतिशत रह गया और सहायता की इस राशि में वृद्धि होने के बावजूद 1973-74 में यह और कम होकर 29 प्रतिशत तक पहुंच गया। अनुमान है कि 1974-75 में प्राप्त होने वाली विदेशी सहायता की राशि बढ़ जायगी लेकिन इसके साथ-साथ भारत द्वारा किये जाने वाले आयात का खर्च भी 1974-75 में काफी बढ़ जायगा।

7.56 भारत को 1967-68 में सभी विदेशी स्रोतों से 1196 करोड़ रुपये की सहायता मिली थी जो 1972-73 में घटकर 666 करोड़ रुपये रह गयी थी। वर्ष 1973-74 में यह राशि बढ़ कर 849 करोड़ रुपये हो गयी। अनुमान है कि 1974-75 में कुल 1081 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त होगी। इसका कारण मुख्यतः अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ से अधिक ऋण और संयुक्त राष्ट्र संघ आपातकालीन योजना से अधिक अनुदान का मिलना है। वर्ष 1973-74 से मिलने वाली राशियों के मूल्य में बढ़ोतरी का एक कारण विदेशी मुद्रा की दरों में वृद्धि होना है। यदि दाता देशों में वस्तुओं के मूल्यों में होने वाली काफी वृद्धि या आयात की कीमतों में होने वाली वृद्धि को हिसाब में लिया जाये तो ऐसा पता चलता है कि 1973-74 से भारत को मिलने वाली सहायता के सकल मूल्य में कोई खास वृद्धि नहीं हुई।

7.57 क्योंकि भारत को मूलधन और ब्याज के रूप में काफी रकम अदा करनी पड़ती है अतः विदेशी सहायता की इस रकम से यह पता नहीं चलता कि भारत को वास्तव में कितनी निवल विदेशी राशि मिली है। इस प्रकार से वापस की जाने वाली रकमों को घटाने के बाद भारत को वास्तव में प्राप्त होने वाली रकम काफी कम हो गयी। वर्ष 1967-68 में यह राशि 863 करोड़ रुपये थी जो घटकर 1972-73 में 159 करोड़ रुपये रह गयी। वर्ष 1973-74 में यह राशि बढ़कर 254 करोड़ रुपये हो गयी और अनुमान है कि 1974-75 में यह 480 करोड़ रुपये हो जायेगी, हालांकि इस स्तर पर भी यह 1968-69 की निवल राशि से 48 करोड़ रुपये कम है। इसके अलावा, दाता देशों में मुद्रा-स्फीति के कारण, 1973-74 से प्राप्त होने वाली सहायता की निवल राशि का वास्तविक मूल्य अंकों में दिखायी गयी रकम से कहीं कम है। नीचे की सारणी में भारत को मिलने वाली सकल और निवल विदेशी सहायता का क्रम दिखाया गया है।

सारणी 7.5

विदेशी सहायता की प्राप्ति : सकल और निवल

(करोड़ रुपयों में)

मदें	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74	1974-75 (अनुमान)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. सकल प्राप्तियां जिसमें :	1196	903	856	791	834	666	849	1081
(क) पी० एल० 480 के अन्तर्गत अन्न*	285	131	128	57	112	4	—	—
(ख) पी० एल० 480 के अन्तर्गत अनाज से भिन्न पदार्थ	57	27	41	32				
(ग) अन्य अनाज सहायता	45	55	19	36	32	—	—	21
2. कुल ऋण परिशोधन जिसमें :	333	375	412	450	479	507	595	601
(क) मूलधन की अदायगियां	211	236	268	290	299	327	399	401
(ख) ब्याज की अदायगियां	122	139	144	160	180	180	196	200
3. विदेशी सहायता की निवल प्राप्ति (1–2)	863	528	444	341	355	159	254	480

*इसमें रुपयों में अदायगी करने की शर्तों और परिवर्तनीय मुद्रा ऋणों के अन्तर्गत आयात के रूप में मिलने वाली विदेशी सहायता शामिल है।

टिप्पणी : 1. सकल विदेशी सहायता प्राप्तियों में ऋणों के मामले में दी गई राहत को, जिसमें ऋणों के भुगतान की अवधि का पुनः निर्धारण/स्थगन आदि शामिल है, भी हिसाब में लिया गया है। ऋण परिशोधन में वही अदायगियां शामिल हैं जो विदेशी मुद्रा में और माल के निर्यात द्वारा की जानी है।

2. सहायता की सकल प्राप्तियों में गेहूं के रूप में मिलने वाली सहायता और ईरान तथा ईराक से किये जाने वाले तेल के आयात की व्यवस्था करने के लिए प्राप्त ऋण की सहायता की सकल राशि शामिल नहीं है। किन्तु इसमें 1974-75 में संयुक्त राष्ट्र आपातकालीन योजना के अन्तर्गत उपलब्ध होने वाली सहायता की राशि शामिल है।

7.58 पिछले कुछ वर्षों से भारत की ऋण सम्बन्धी देनदारियों में लगातार वृद्धि हो रही है जिसका उसके भुगतान शेष पर भारी बोझ पड़ रहा है। ऋण परिशोधन सम्बन्धी अदायगियां जिनमें मूलधन और ब्याज की अदायगियां भी शामिल हैं, 1961-62 में 142 करोड़ रुपये से बढ़कर 1973-74 में 595 करोड़ रुपये हो गयी। अनुमान है कि 1974-75 में यह रकम 601 करोड़ रुपये तक पहुंच जायेगी। हाल के वर्षों में ऋण परिशोधन सम्बन्धी अदायगियों का बोझ उसकी वार्षिक निर्यात आय के 25 प्रतिशत के बराबर था, जिसका प्रभाव यह हुआ कि आयात सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विदेशों से सहायता के रूप में मिलने वाली निवल रकम कम हो रही है। उदाहरण के तौर पर 1973-74 में कुल जितनी सहायता का इस्तेमाल किया गया उसका 70 प्रतिशत भाग ऋण परिशोधन सम्बन्धी अदायगियां करने पर खर्च हो गया। इस संदर्भ में इस बात को सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि भारत को मिलने वाली सहायता का उपयोग बहुत अधिक लचीलेपन के साथ किया जाय और उसका वितरण शीघ्र कर दिया जाय। सहायता के इस सुधार के महत्वपूर्ण पहलू के रूप में भारत ने ऋण सम्बन्धी राहत की मांग की थी, किन्तु इस प्रयास में उसे सीमित सफलता ही मिली है। 1968-69 से 1971-72 तक के चार वर्षों में भारत सहायता संघ ने भारत को प्रतिवर्ष औसत 10 करोड़ अमरीकी डालर की ऋण राहत दी। ऋण राहत के रूप में 1972-73 में 14.8 करोड़ अमरीकी डालर और 1973-74 में 13.5 करोड़ अमरीकी डालर दिये गये। 1974-75 में ऋण-राहत के रूप में 19.4 करोड़ डालर प्राप्त होने का अनुमान है। तेल, अनाज और उर्वरकों के मूल्यों में तेजी से होने वाली वृद्धि के परिणामस्वरूप भुगतान शेष पर पड़ने वाले दबाव में हुई वृद्धि को देखते हुए और अधिक विदेशी सहायता तथा ऋण राहत की आवश्यकता पहले से ज्यादा हो गयी है। जब संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा का छठा विशेष अधिवेशन बुलाया गया था तब उसमें हाल की घटनाओं से अत्यन्त गम्भीर रूप से प्रभावित देशों की कठिनाई को दूर करने के उपाय के रूप में ऋण राहत की उपयोगिता को एक बार फिर स्वीकार किया गया। इस अधिवेशन में दाता देशों से यह सिफारिश की गयी कि वे पर्याप्त ऋण राहत की व्यवस्था करें।

7.59 भारत सहायता संघ ने पेरिस में जून, 1974 में हुई अपनी बैठक में यह स्वीकार किया कि भारत को 1974-75 के लिए ऋण राहत सहित लगभग 80 करोड़ अमरीकी डालरों की गैर-परियोजना सहायता, और लगभग 60 करोड़ अमरीकी डालर की परियोजना सहायता का आश्वासन दिया जाना चाहिये ताकि भारत के आर्थिक विकास को धक्का न पहुंचे। 1974-75 के लिये कुल 140 करोड़ डालर देने का आश्वासन, वर्ष 1973-74 के लिए सहायता संघ द्वारा दिये गये 120 करोड़ रुपये के आश्वासन की तुलना में अधिक है, हालांकि इस बात की संभावना है कि वृद्धि का कुछ अंश दाता देशों में हुई मूल्यवृद्धि से प्रतिसंतुलित हो जायगा।

7.60 वर्ष 1974-75 के पहले नौ महीनों में 724 करोड़ रुपये की सहायता की नयी स्वीकृतियां दी गयी हैं जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में इससे कुछ कम अर्थात् 721 करोड़ रुपये की स्वीकृतियां दी

गयी थीं। इसके अलावा, भारत को ईरान और ईराक द्वारा सप्लाई किये गये कच्चे तेल के कुछ भाग के लिये वित्त व्यवस्था करने के लिए उन देशों से आस्थगित ऋणों के रूप में सहायता प्राप्त हुई है।

7.61 हाल ही की आर्थिक घटनाओं से सर्वाधिक गम्भीर रूप से प्रभावित देशों को सहायता देने के लिए बनायी गयी संयुक्त राष्ट्र संघीय आपातकालीन योजना के अंतर्गत भारत को भी लाभ पहुंचा है। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव के विशेष कोष से भारत के लिए अब तक, 3.25 करोड़ अमरीकी डालर की राशि निर्धारित की गयी है। यूरोपीय आर्थिक समुदाय ने भी संयुक्त राष्ट्र संघीय आपातकालीन योजना के अन्तर्गत अपनी द्विपक्षीय सहायता की पहली किस्त में से भारत के लिये 5 करोड़ डालर की राशि निर्धारित की है। कुछ और दाता देशों में ब्रिटेन (200 लाख पौण्ड) तथा स्वीडन है। संयुक्त राष्ट्र आपात योजना के अन्तर्गत मिलने वाली सहायता सामान्य विकास सहायता के अलावा है और इसका उद्देश्य यह है कि सहायता पाने वाले देशों को इस योग्य बनाया जाय कि वे हाल में हुई मूल्य वृद्धि के सन्दर्भ में अपने अत्यावश्यक आयातों को बराबर बनाये रख सकें किन्तु अब तक जितनी सहायता मिलने की आशा है वह भारत जैसे देशों के लिए अपने अत्यावश्यक आयातों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।

हाल की आर्थिक घटनाएं और निर्यात नीति

7.62 ईंधन, उर्वरकों तथा अनाज की कीमतों में भारी वृद्धि होने के कारण भारत के आयात खर्च में काफी वृद्धि हो गयी। यदि हमें अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं, कच्चा माल तथा पूंजी वाले सामान के आयात में कटौती किये बिना, इन अत्यावश्यक जरूरतों को पूरा करना है तो हमें अपना निर्यात काफी अधिक बढ़ाना होगा।

7.63 दुर्भाग्य से, हाल ही में औद्योगिक देशों में जो आर्थिक मंदी आयी है वह कोई अच्छा लक्षण नहीं है। किन्तु इस बात को देखते हुए कि निर्मित वस्तुओं के विश्व व्यापार में, भारत में बनी वस्तुओं के निर्यात का अंश बहुत थोड़ा है, भारत के लिये अपने निर्यात को बढ़ाने की काफी गुंजाइश है। पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ हमारे व्यापारिक सम्बन्धों के कारण हमारे निर्यात में और भी स्थिरता आयी है।

7.64 जाहिर है कि पांचवीं आयोजना में निर्यात के जो लक्ष्य रखे गये हैं उन्हें काफी ऊंचा करना होगा जिससे भारत के भुगतान शेष की क्षमता को सुनिश्चित किया जा सके और हमें यह सोचना होगा कि मात्रा के रूप में हमारे निर्यात में कम से कम 10 प्रतिशत वार्षिक के हिसाब से अवश्य वृद्धि होनी चाहिए।

7.65 निर्यात संबंधी सक्षम नीति तैयार करते समय, जूट से बनी वस्तुओं, चाय, खली, तम्बाकू, चीनी तथा मसालों जैसे भारत के परम्परागत निर्यातों की सीमित क्षमता को स्वीकार करना होगा। इन वस्तुओं की दुनिया में मांग कम होने या भारत में इनकी अपेक्षाकृत कम उपज होने के परिणामस्वरूप इनकी सप्लाई की स्थिति की अनिश्चित सम्भावनाओं के कारण इनका निर्यात बढ़ाने में रुकावटें आ सकती हैं। फिर भी, इन सभी वस्तुओं के मामले में हमें पर्याप्त उपाय करने की आवश्यकता है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि विश्व व्यापार में हमारी वर्तमान मात्रा और कम न हो जाय। जहां तक चीनी का सम्बन्ध है इसके निर्यात की सम्भावनाएं अब भी काफी उज्जवल हैं यदि हम अपना उत्पादन बढ़ाने में समर्थ हो जायें। इसमें सन्देह नहीं कि गन्ने की पैदावार का क्षेत्र बढ़ाने की कुछ अपनी सीमा है। लेकिन इस बात का विचार करते हुए कि लगभग 30 प्रतिशत गन्ना ही चीनी तैयार करने के काम आता है गुड़ तथा खण्डसारी उद्योग से गन्ने की खपत को घटाकर चीनी का उत्पादन बढ़ाने के लिए उचित प्रोत्साहन देकर चीनी का उत्पादन बढ़ाने की व्यवस्था करना संभव होना चाहिए।

7.66 जिन चीजों का हम शुरू दिनों से निर्यात करते आ रहे हैं उनमें से सूती कपड़े के निर्यात में वृद्धि इस स्थिति को स्वीकार करते हुए की जा सकती है कि औद्योगिक देशों में दीर्घकाल तक औद्योगिक मंदी के बने रहने की संभावना नहीं है। हमारी पांचवीं आयोजना में सूती कपड़े के निर्यात के लिए काफी ऊंचा लक्ष्य रखा गया है जिसमें पांच वर्ष की अवधि में निर्यात को दुगने से भी अधिक कर देने की व्यवस्था है। यदि हम निर्यात की जाने वाली उन किस्मों के उत्पादन को तेजी से बढ़ाने की व्यवस्था कर सकें जिनका मूल्य अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य की अपेक्षा कुछ कम हो तो निश्चित ही यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। पिछले तीन या चार वर्षों में भारत से सिले-सिलाये कपड़ों के निर्यात में तेजी से वृद्धि हुई है। किन्तु, इस क्षेत्र में जहां विश्व व्यापार लगभग दो हजार करोड़ रुपये का है, वहां हमारे निर्यात का मूल्य केवल लगभग 50 करोड़ रुपये है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां काफी मात्रा में बुनियादी कच्चा माल उपलब्ध करने के साथ-साथ उचित प्रोत्साहन देकर हम पांचवीं आयोजना के अन्त तक अपने निर्यात को लगभग 250 करोड़ रुपये तक बढ़ा सकने की आशा कर सकते हैं।

7.67 चमड़े और चमड़े के सामान के निर्यात में भी वृद्धि की काफी संभावनाएं मौजूद हैं। विकास की इस क्षमता का पूरा उपयोग करने के लिए बढ़िया किस्म का चमड़ा तैयार करने की दिशा में जोरदार कदम उठाये जाने की जरूरत है। मछली आदि समुद्री खाद्य वस्तु उद्योग एक और ऐसा क्षेत्र है जिसके विकास की संभावनाएं बड़ी उज्जवल हैं।

7.68 निस्सन्देह हमारे निर्यात का तेजी से विकास करने की दिशा में इंजीनियरी के सामान तथा रसायनों व सम्बद्ध पदार्थों के निर्यात से बहुत सहायता मिल सकती है। इंजीनियरी के सामान के उत्पादन में हमें अपेक्षाकृत काफी फायदे हैं और यदि यह निश्चित हो जाय कि देश में इन वस्तुओं की बिक्री के मुकाबले अन्ततः निर्यात अधिक लाभदायक है तो हम इंजीनियरी के सामान के निर्यात में आसानी से लगभग 20 से 30 प्रतिशत तक की वार्षिक वृद्धि कर सकते हैं। इस समय भारत की इंजीनियरी सम्बन्धी वस्तुओं के उत्पादन का लगभग 4 प्रतिशत सामान ही निर्यात किया जाता है और अधिकांश निर्यात बहुत थोड़ी-सी फर्में ही करती हैं। निस्सन्देह यह मानना पड़ेगा कि यदि निर्यात से अधिक फायदा होता है तो अधिक से अधिक फर्में निर्यात को ही अपना सामान्य धंधा बना लेंगी। खनिज लोहे के निर्यात को बढ़ाने की भी संभावनाएं काफी हैं। इस समय जो अवसर उपलब्ध हैं, उनका पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए यह जरूरी है कि खनिज लोहे और उसकी गोलियों, खनन और बन्दरगाह सम्बन्धी सुविधाओं के विकास की एक समन्वित योजना तैयार की जाय।

7.69 उपर्युक्त विवरण से यह पता चलता है कि सूती कपड़े, इंजीनियरी के सामान, मछली आदि समुद्री पदार्थ, चमड़े की वस्तुओं और रसायन तथा सम्बद्ध पदार्थ जैसी वस्तुओं के निर्यात के लिए काफी व्यापक अवसर हैं। इन सभी उद्योगों में बड़ी-बड़ी फर्मों को, जो अधिक निर्यात करती हैं, अगले पांच वर्षों में अपने निर्यात को बढ़ाने के लिए ठोस कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है और इन फर्मों के लिये आवश्यक आयातों और अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करने के लिये स्थायी तौर पर दीर्घकाल के लिए कारगर प्रबन्ध करने की आवश्यकता है जिससे उनमें निर्यात के विस्तार के लिए आवश्यक विश्वास की भावना पैदा हो सके।

अध्याय-आठ

वर्ष 1975-76 की संभावनाएं

8.1 राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर के बारे में ऐसी अर्थव्यवस्था में अनुमान लगाना जिसमें उसकी लगभग आधी आय कृषि से प्राप्त होती हो, हमेशा एक जोखिम का काम होता है। इस तरह का कोई मूल्यांकन करते समय लगातार रहने वाली घरेलू कठिनाइयों और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक वातावरण की बढ़ती हुई अनिश्चितता को ध्यान में रखना चाहिए जो 1975-76 में राष्ट्रीय आय की दर में उल्लेखनीय वृद्धि करने में बाधक हो सकती है। फिर भी अर्थव्यवस्था के कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में जो सूचना उपलब्ध है उससे यह संकेत मिलता है कि आने वाले वर्ष में अर्थव्यवस्था में कुल मिलाकर सुधार होने की संभावना है हालांकि थोड़े समय में अर्थव्यवस्था में कोई नाटकीय परिवर्तन होने की आशा नहीं की जा सकती।

8.2 इस समीक्षा में पहले भी बताया जा चुका है कि हरित क्रांति से कृषि की उपज में बहुत थोड़ी वृद्धि हुई और बीजों की किस्म के भी कुछ घटिया होने से 1971-72 से गेहूं की पैदावार गिर गयी है। लेकिन यदि इस तथ्य पर ध्यान दिया जाय कि 1970-71 से 30 से 40 लाख हेक्टेयर अधिक भूमि पर सिंचाई की जाने लगी है तथा पहले से बहुत अधिक क्षेत्र में, अधिक उपज देने वाली फसलें उगायी जाने लगी हैं तो लगता है कि आने वाले वर्षों में कृषि की उपज में और वृद्धि बनाये रखना शायद संभव हो सके। फिर भी उर्वरकों के मिल सकने में अनियमितता आ जाने तथा मई, 1974 से इनकी कीमतों में भारी वृद्धि होने से स्थिति जटिल हो गयी है जिसके कारण आने वाले वर्षों में कृषि की संभावित पैदावार के बारे में ठीक-ठीक अनुमान लगाना मुश्किल हो गया है। फिर भी यह स्पष्ट है कि अनाज की पैदावार में वृद्धि की दर का अधिक होना चावल और मोटे अनाज की पैदावार में तेजी से वृद्धि के लाये जाने पर निर्भर है। वाणिज्यिक फसलों में से केवल कपास की फसल ऐसी है जिसमें वृद्धि होने की संभावना है हालांकि एम०सी०यू०-5 व हाइब्रिड-4 जैसी नयी किस्मों के बीज की खोज से इसकी पैदावार में जितनी वृद्धि का अनुमान लगाया गया था उसमें पर्याप्त संशोधन करना पड़ा है।

8.3 जहां तक औद्योगिक उत्पादन का संबंध है, यदि वर्षा सामान्य रूप से हुई तो 1975-76 में पावर की सप्लाई में लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है। कोयला और इस्पात के उत्पादन में भी वृद्धि होने की संभावना है और इससे उद्योगों को अपने उत्पादन में वृद्धि करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी बशर्ते कि परिवहन संबंधी कठिनाइयां इतनी चिन्ताजनक न बनी रहें जितनी कि पहले थीं। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक परिस्थितियां पहले से ज्यादा प्रतिकूल हो गयी है और इससे हमारी कुछ औद्योगिक वस्तुओं के निर्यात पर बुरा असर पड़ सकता है। औद्योगिक क्षमता का अधिक से अधिक उपयोग करने से औद्योगिक उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि करने में सहायता मिलेगी। फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पूंजीवाले माल व अन्तर्वर्ती वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योगों की उत्पादन क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग, महत्वपूर्ण रीति से, सरकारी क्षेत्र में अधिक से अधिक पूंजी लगाने से संबद्ध है। अगर वित्तीय साधनों की कमी के कारण सरकारी क्षेत्र में अधिक पूंजी लगाने में रुकावट पड़ी तो इससे उत्पादन-क्षमता पर बुरा असर पड़ेगा। इसके अलावा हमें उद्योगों के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण कृषि-जन्य कच्चे माल के उत्पादन में निरन्तर होने वाली घटती-बढ़ती को ध्यान में रखना होगा। फिर भी वर्तमान अनुमानों के आधार पर ऐसा लगता है कि 1975-76 में औद्योगिक उत्पादन कुल मिलाकर 1974-75 के मुकाबले अधिक होगा।

8.4 थोड़े ही समय में विकास की गति को एकदम से तेज करने के लिए हमारे पास जो साधन हैं वह सीमित हैं। किन्तु आर्थिक नीति का निर्धारण करने वालों को 1975-76 में राष्ट्रीय आय के विकास की दर को ऊंचा करने के काम में जुट जाना चाहिए जिससे यह 3 से 3.5 प्रतिशत की दर की अपेक्षा जो पिछले पन्द्रह वर्षों से बराबर चली आ रही है, अधिक दर से बढ़ सके। यह कोई आसान काम नहीं होगा क्योंकि अर्थ व्यवस्था में मुद्रास्फीति की प्रवृत्तियां अभी भी बहुत शक्तिशाली हैं और जो भी विस्तारवादी नीति होगी वह ऐसी बनानी पड़ेगी कि जिससे अर्थव्यवस्था में मौजूदा दबाव और अधिक न बढ़ सके। यदि मांग में समय से पहले सामान्यतः सुधार होने लगे तो इससे मुद्रास्फीति की संभावनाओं को नये सिरे से और बल मिलेगा और ऐसा होने पर कीमतें पिछले दो वर्षों की अपेक्षा और भी तेजी से बढ़ने लगेंगी। इसलिए यह जरूरी है कि अर्थव्यवस्था के लिए विकास की जो योजनाएं जरूरी है उनको वित्तीय और मौद्रिक नियंत्रणों पर व्यापक तरीके से लगातार जोर देते रहने के संदर्भ में बनाया जाय।

8.5 हालांकि हाल में आर्थिक शिथिलता की काफी चर्चा हुई है तो भी उपलब्ध आंकड़ों से अगले महीनों में औद्योगिक उत्पादन में धीरे धीरे वृद्धि होने के संकेत मिलते हैं। फिर भी उपभोक्ताओं के न चाहने के बावजूद अगर कुछ उद्योगों ने कीमतों को उसी स्तर पर कायम रखने पर जोर दिया जिससे कि उन्हें पिछले दो वर्षों में असाधारण रूप से अधिक लाभ प्राप्त हुआ है तो हो सकता है कि कुछ क्षेत्रों में कुछ समय के लिए क्षमता का पूरा पूरा उपयोग न हो सके। लेकिन इन सभी मामलों में इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि उद्योग अपेक्षाकृत अधिक वास्तविक आधार पर कीमतें निर्धारित करने की नीति अपनायें न कि सरकार द्वारा समय से पूर्व ही वित्तीय और ऋण नियंत्रणों में ढील दे दी जाय। फिर भी इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि हमारे देश के कुछ उद्योगों के निर्यात का भविष्य अनिश्चित होने के साथ व्यापार के क्षेत्र में मौजूदा मनोवृत्ति और सरकारी क्षेत्र में लगायी जाने वाली पूंजी की धीमी गति के कारण मौजूदा नीतियों में भविष्य में कुछ फेर बदल करने की आवश्यकता हो सकती है। यह फेर बदल कब और कितना करना पड़ेगा यह इस बात पर निर्भर करेगा कि विदेशों में हमारी वस्तुओं की कितनी मांग होती है और देश के अन्दर खाद्य की हमारी स्थिति कैसी रहती है। लेकिन ऐसा लगता है कि पिछले दो वर्षों में जो मुद्रा स्फीतिकारी भारी दबाव रहा है उसको देखते हुए हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम मांग में सामान्य सुधार की अपेक्षा कुछ विशिष्ट प्रोत्साहन देकर पूंजी लगाने और निर्यात बढ़ाने के लिए व्यापारियों के मन में विश्वास बनाये रखें।

8.6 हाल के वर्षों में सरकार ने कर लगा कर तथा बाजार-ऋण लेकर, दोनों तरीकों से, अतिरिक्त रकम जुटाने के लिए प्रभावशाली कदम उठाये हैं। दुर्भाग्य से इस प्रकार से जुटायी गयी रकम का अधिकांश गैर-विकासात्मक कार्यों के बढ़े हुए खर्च, खास तौर से वेतन और भत्तों

पर ही खर्च हो गया। इस वजह से, अतिरिक्त साधन जुटाने का प्रयत्न करने से सरकारी खर्च में जितनी बचत होने की संभावना थी, उतनी बचत नहीं हुई। चूंकि पूंजी निवेश की दर लगातार उंची बनाये रखने के लिए बचत की दर में वृद्धि करना बहुत जरूरी होता है इसलिए बचत की दर को बढ़ाने के लिए नयी युक्तियां निकालनी होंगी। पिछले दो वर्षों में कीमतों के तेजी से बढ़ जाने के कारण यह काम निस्संदेह आसान नहीं है। फिर भी, अतिरिक्त क्षमता जो इस समय सरकारी क्षेत्र में ही उपलब्ध है, उसका पूरा पूरा उपयोग करने से इस क्षेत्र की बचतों में वृद्धि करने में विशेष सहायता मिलेगी। सरकारी क्षेत्र के उद्यमों के लिए अधिक वास्तविक मूल्य-नीति अपनाने से भी बचत करने में सहायता मिलेगी। इसी प्रकार कर की चोरी को रोकने के उद्देश्य से कराधान के अधिक कारगर तरीके अपनाने से न केवल सरकारी क्षेत्र की बचतों में वृद्धि होने में सहायता मिलेगी बल्कि आय और सम्पत्ति की असमानता को कम करने में हमारी कर-प्रणाली का प्रभाव भी बढ़ जायगा। इसके अतिरिक्त आम तौर से औद्योगिक वस्तुओं की कीमतें निर्धारित करने के लिए वास्तविक मूल्य-नीतियां अपनाने से हमारी अर्थव्यवस्था पर काले धन के प्रभाव को कम करने में सहायता ही नहीं मिलेगी बल्कि इससे सरकारी राजस्व व सरकारी बचतों में भी वृद्धि होगी।

8.7 सरकारी और गैर-सरकारी दोनों क्षेत्रों में अधिक प्राथमिकता वाली मदों में पूंजी लगाने के लिए उपलब्ध बचतों की रकमों को उपयोग में लाने की भी काफी गुंजाइश है। इस समय राष्ट्रीय बचतों की अधिकांश रकम घरेलू क्षेत्रों से ही मिलती है और इसका केवल आधा भाग ऐसी वित्तीय परिसम्पत्तियों में लगाया जाता है जिनके उपयोग पर प्रायः सामाजिक नियंत्रण होता है। संभव है कि पिछले दो वर्षों में भारी मुद्रास्फीति होने से बचतों को ऐसी वित्तीय परिसम्पत्तियों जैसे बैंक-जमा के रूप में रखने का आकर्षण कम हो गया हो। अतः यह आवश्यक है कि ऐसी मिश्रित नीति अपना कर इस प्रवृत्ति को एक ऐसा मोड़ दिया जाय जो स्वीकृत वित्तीय परिसम्पत्तियों के रूप में अधिक बचतें करने के लिये अनुकूल हो। ऐसे तरीके भी ढूंढने होंगे जिनसे इस बात की सुनिश्चित व्यवस्था की जा सके कि नियमित क्षेत्र से प्राप्त होने वाली बचत की रकमों को उच्च प्राथमिकता वाले उद्योगों में ही लगाया जाय, ऐसी परियोजनाओं में नहीं जो राष्ट्रीय प्राथमिकता की दृष्टि से काफी कम महत्व की हैं।

8.8 जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के लिए चाहे जैसी भी प्रभावकारी नीति हो, जनसंख्या की वृद्धि की दर को कम करने की आवश्यकता पर जितना भी बल दिया जाय वह थोड़ा ही होगा। परिवार नियोजन कार्यक्रमों ने देश की जनसंख्या की समस्याओं के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने में सहायता प्रदान की है। अनुमान है कि संतान पैदा करने की आयु वाले इस समय लगभग 15 प्रतिशत दम्पति ऐसे हैं जो परिवार नियोजन के तरीकों को अपनाते हैं। जन्म दर में भी कमी होने लगी है। फिर भी कुल मिलाकर प्रगति मूल अनुमानों से काफी कम है। इसलिए हमें अपने परिवार नियोजन कार्यक्रम को फिर से ठीक ठीक बनाना होगा जिससे इसमें आवश्यक प्रगति प्राप्त की जा सके।

8.9 जनवरी, 1974 से पैट्रोलियम के मूल्यों में भारी वृद्धि होने से अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों के स्वरूप में भारी परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों में भारत के भुगतान-संतुलन की स्थिति को लगातार मजबूत बनाये रखने की सुनिश्चित व्यवस्था करने के लिए हमें न केवल विदेशों से मिलने वाले तेल के बारे में कम निर्भर रहने की कोशिश करनी होगी बल्कि अपने निर्यात बढ़ाने के लिए पहले की अपेक्षा अधिक प्रयास भी करने होंगे। तेल का मूल्य अधिक बढ़ जाने के कारण हमें अपने निर्यात में कम से कम 10 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि करने के बारे में विचार करना होगा। पिछले दो वर्षों में हमारे निर्यात के मूल्यों में जो लगातार वृद्धि हुई है उसका मुख्य कारण हमारी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होना था। जहां तक निर्यात की मात्रा का संबंध है उसमें 1968-69 से लगभग 4 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि हुई है जो इस दिशा में कोई बहुत बड़ी सफलता नहीं है। वर्ष 1974-75 में चुकायी जाने वाली बाकी रकमों की कमी को पूरा करने के लिए हमें अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से काफी अधिक रकमें निकालनी पड़ीं। आशा है कि 1975 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष विस्तृत तेल सुविधाओं को लागू करेगा और इससे हमें नयी परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको ढालने के लिए कुछ और समय मिल जायगा। लेकिन हमें आगे के लिए भी सोचना है जब अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा दी जाने वाली तेल संबंधी सुविधा नहीं रहेगी और हमें अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष से लिये गये मौजूदा भारी ऋणों को चुकाना शुरू करना पड़ेगा। इस बात को सोचते हुए निर्यात को बढ़ावा देने के काम को और भी अधिक महत्व देना जरूरी हो जाता है। पिछले पन्द्रह वर्षों में भारत के आर्थिक ढांचे को काफी बहुमुखी बनाया गया है। इसलिए अब हमारे पास निर्यात में भारी वृद्धि करने की क्षमता है बशर्ते कि भुगतान-शेष के दृष्टिकोण से यह निर्यात चाहे ज्यादा आकर्षक न हो तो भी वह देश में बिक्री से होने वाले लाभ जैसा लाभदायक अवश्य हो। विश्व में हमें अपना व्यापार बढ़ाने में संभवतः 1975 में विश्व व्यापार का वातावरण सहायक नहीं रहेगा। फिर भी, चूंकि मैन्युफैक्चर की गयी वस्तुओं के कुल विश्व निर्यात में इन वस्तुओं का हमारा निर्यात नगण्य है, इसलिए, अगर हम निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कोई कारगर नीति अपनायें तो हम निर्यात से होने वाली अपनी आय में भारी वृद्धि कर सकते हैं।

8.10 जहां तक कृषि क्षेत्र का संबंध है उसमें प्रतिवर्ष लगभग 3 प्रतिशत की होने वाली वृद्धि की दर में उल्लेखनीय वृद्धि करने के लिए हमें अपने कृषि कार्यक्रमों को फिर से तैयार करना और पुष्ट करना होगा। साथ ही हमें इस भ्रम का शिकार भी नहीं बनना चाहिए कि कृषि का आधुनीकरण करने के लिए कोई निश्चित फारमूले बने हुए है जिनसे लक्ष्य की तुरत प्राप्ति की जा सकती है। थोड़े समय में अनाज की पैदावार में वृद्धि करने की अपनी सीमाएं हैं। इसके अलावा, प्रत्येक वर्ष पैदावार में अनिवार्य रूप से जो घट-बढ़ होती रहती है उसे भी ओझल नहीं किया जा सकता। इसलिए अन्न की उपज को बढ़ाने के लिए हर संभव उपाय को अपनाने के साथ-साथ अन्न की सरकारी खरीद और इसके वितरण की सरकारी प्रणाली को मजबूत बनाने पर सबसे ज्यादा जोर देना चाहिए।

8.11 जैसा कि इस 'समीक्षा' के पहले के अध्यायों में किये गये विश्लेषणों से स्पष्ट है, देश में बीज उद्योग के ढांचे को फिर से सुदृढ़ करने की तत्काल आवश्यकता है। भारी पैदावार देने वाले बीजों के उत्पादन की व्यवस्था में अधिक विस्तार करने की भी आवश्यकता है और इसके लिए यह जरूरी है कि हम कृषि-अनुसंधान के लिए नियत की जाने वाली धनराशि पर नये सिरे से विचार करें। राष्ट्रीय बीज निगम और अन्य सरकारी क्षेत्र के अभिकरणों की क्षमता में भी वृद्धि की जानी चाहिए जिससे बढ़िया बीजों की बढ़ती हुई मांग को पूरा किया जा सके।

8.12 यह भी कम आवश्यक नहीं है कि पिछले पांच वर्षों में प्रतिवर्ष जो लगभग दस-दस लाख हैक्टेयर भूमि के लिए सिंचाई का प्रबन्ध किया जाता रहा है उसमें वृद्धि की जाय और आने

वाले वर्षों में प्रतिवर्ष बीस बीस लाख हैक्टेयर भूमि के लिए सिंचाई का प्रबन्ध किया जाये । इसके लिए यह जरूरी है कि बड़े और मध्यम दर्जे के सिंचाई संबंधी निर्माण कार्य जो या तो निर्माणाधीन हैं या जिनकी आयोजना का काम अन्तिम चरणों में है उनको पूरा करने में लागत बढ जाने के कारण कोई रुकावट न आने दी जाय । नदियों के पानी के वितरण के अन्तर्राज्यीय विवादों को अधिक तेजी तथा कुशलता से निपटाया जाना आवश्यक है । इन विवादों के न सुलझाये जाने के कारण अनाज की पैदावार में कमी होने से जो सिंचाई का क्षेत्र और अधिक बढ़ा कर पूरी की जा सकती है, राष्ट्र को भारी नुकसान पहुंचता है । इसके अतिरिक्त भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भागों में बड़ी मात्रा में उपलब्ध भूमिगत जल का अधिक तेजी से उपयोग करने के लिए काफी कारगर प्रबन्ध करने होंगे ।

8.13 मौजूदा सिंचाई क्षमता का पूरा पूरा इस्तेमाल करने का काम भी कम महत्वपूर्ण नहीं है । सिंचाई क्षेत्र विकास कार्यक्रम, जिसकी कल्पना पांचवीं पंचवर्षीय आयोजना के मसौदे में की गयी है, कृषि की पैदावार बढ़ाने में काफी योगदान दे सकता है बशर्ते कि प्रशासनिक ढांचा आवश्यक सीमा तक लचीला और अनुकूल बना रहे । इस कार्यक्रम का आयोजन धीमी गति से होता रहा है । इसलिए यह आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के आयोजन में तेजी लायी जाये जिससे विभिन्न संगठनात्मक व तकनीकी समस्याओं का व्यावहारिक हल जल्दी ढूंढा जा सके ।

8.14 जब हमें विदेशों से मंगाये जाने वाले उर्वरकों पर काफी बड़ी रकम खर्च करनी पड़ती है तब आन्तरिक उत्पादन-क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जाना एक दुर्भाग्य की बात है । यह स्थिति पावर की सप्लाई अपर्याप्त होने के कारण पैदा हुई है । फिर भी इस बात के भी प्रमाण हैं कि उपलब्ध क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग न किये जाने का कारण केवल बिजली की कमी नहीं है । उर्वरक तैयार करने के कई कारखानों की उत्पादन-क्षमता और उनके वास्तविक उत्पादन में काफी अन्तर है । यह देखते हुए कि इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में बेकार पड़ी क्षमता समाज के लिये भारी पड़ रही है, उत्पादन क्षमता और वास्तविक उत्पादन के बीच के अन्तर को तेजी से मिटाया जाना चाहिए । नयी उर्वरक परियोजनाओं को भी जो इस समय विचाराधीन हैं, शीघ्र लागू करना होगा । अगर नयी उर्वरक परियोजनाओं को पूरा करने में कोई विलम्ब हुआ तो पांचवीं आयोजना की अवधि के अन्त तक उर्वरकों की खपत में वृद्धि करने के लगभग 70 लाख मैट्रिक टन के हमारे लक्ष्य पर बहुत बुरा असर पड़ेगा ।

8.15 अन्त में, वर्ष 1975-76 में भारतीय अर्थ-व्यवस्था का मूल्यांकन अत्यधिक अनिश्चित अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को ध्यान में रख कर करना होगा । फिर भी, कुल मिलाकर, भारतीय अर्थ-व्यवस्था की स्थिति पर खेती की पैदावार में होने वाली घट-बढ़ का बहुत ज्यादा असर पड़ेगा । इस प्रकार विकास की सुनियोजित प्रक्रिया को दृढ़तापूर्वक फिर से आरम्भ करना बुनियादी तौर पर भारतीय कृषि को नये तरीकों के अनुसार ढालने की हमारी योग्यता पर निर्भर है ।

परिशिष्ट

आंकड़ों सम्बन्धी सारणियां

पृष्ठ संख्या

1. राष्ट्रीय आय तथा उत्पादन

1.1. सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा निवल राष्ट्रीय उत्पाद (अर्थात् राष्ट्रीय आय) 63
1.2. मूल उद्योगों के अनुसार निवल राष्ट्रीय उत्पाद के अनुमान—प्रतिशत विभाजन (1960-61 के मूल्यों पर) 64
1.3. कृषि उत्पादन : क्षेत्रफल और उपज के सूचक अंक 65
1.4. कृषि उत्पादन के सूचक अंक 66
1.5. कृषि उत्पादन 67
1.6. अन्न के उत्पादन के राज्यवार अनुमान (1968-69 से 1973-74 तक) 68
1.7. चुने हुए प्रत्यक्ष कृषि विकास कार्यक्रमों की प्रगति 72
1.8. दालें और अन्य अनाज की निवल उपलब्ध मात्रा 73
1.9. अन्न की निवल उपलब्धता, वसूली और सरकारी वितरण 74
1.10. दैनिक उपयोग की कुछ महत्वपूर्ण वस्तुओं की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 75
1.11. उर्वरकों का उत्पादन, आयात और कुल उपलब्धता 76
1.12. औद्योगिक उत्पादन के सूचक अंकों में प्रतिशत परिवर्तन 77
1.13. चुने हुए उद्योगों का उत्पादन 79

2. बजट संबंधी लेन-देन

2.1. केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों और संघ क्षेत्रों के बजट सम्बन्धी लेन-देन 82
2.2. केन्द्रीय सरकार का कुल व्यय 84
2.3. केन्द्रीय सरकार के बजट सम्बन्धी साधनों में से सकल पूंजी निर्माण 86
2.4. विकास शीर्षों के अनुसार केन्द्र, राज्यों तथा संघ क्षेत्रों का आयोजनागत परिव्यय 88
2.5. विकास शीर्षों के अनुसार केन्द्र, राज्यों और संघ क्षेत्रों का आयोजनागत परिव्यय—प्रतिशत विभाजन 89

3. रोजगार

3.1. सरकारी क्षेत्र में रोजगार 90
3.2. गैर-सरकारी क्षेत्र में रोजगार 91

4. मुद्रा संबंधी प्रवृत्तियां

4.1. मुद्रा में घट-बढ़ का विश्लेषण 92
4.2. अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक—व्यस्त व मंदी के मौसम में दिये गये ऋण 94
4.3. अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक—चुनी हुई मदों में घट-बढ़ 95
4.4. सरकारी क्षेत्र के बैंकों और अन्य वाणिज्यिक बैंकों की शाखाओं का विस्तार 96
4.5. सरकारी क्षेत्र के बैंकों द्वारा कृषि और अब तक उपेक्षित अन्य क्षेत्रों को दिये गये अग्रिम 97
4.6. सरकारी क्षेत्र के बैंकों के कार्यालयों, इनमें जमा कुल राशियों और इन बैंकों द्वारा दिये गये कुल ऋणों तथा इन ऋणों में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को दिये गये ऋणों के प्रतिशतांश का राज्यवार विवरण 98
4.7. पूंजी बाजार : कुछ निर्देशांक 99
4.8. पूंजी बाजार : वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और संवितरित वित्तीय सहायता 101

5. मूल्य

5.1. थोक भावों के सूचक अंक 102
5.2. थोक भावों के सूचक अंक—चुनी हुई वस्तुएं/वस्तु समूह 104
5.3. अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचक अंक 106
5.4. थोक भावों के सूचक अंक : निर्मित वस्तुओं और कृषि वस्तुओं के सापेक्ष मूल्य 108

6. भुगतान-शेष

6.1. भारत की प्रारक्षित विदेशी मुद्रा 110
6.2. भारत का भुगतान-शेष (समंजित) 112
6.3. भारत का भुगतान-शेष (समंजित) 114

		पृष्ठ संख्या
6.4.	भारत का भुगतान-शेष : चालू खाते की अदृश्य मदें	116
6.5.	भारत का भुगतान-शेष : पूंजी खाते की कुछ मदें	118
6.6.	आयात की गयी मुख्य वस्तुएं	119
6.7.	निर्यात की गयी मुख्य वस्तुएं	120
6.8.	कुल अनुमानित सप्लाई में आयात का अंश	122

7. विदेशी सहायता

7.1.	कुल विदेशी सहायता	124
7.2.	स्रोतों के अनुसार-वर्गीकृत, स्वीकृत विदेशी सहायता	125
7.3.	स्रोतों के अनुसार वर्गीकृत विदेशी सहायता का उपयोग	128
7.4.	विदेशी सहायता में अनुदानों तथा अप्रतिबद्ध ऋणों का अंश	131
7.5.	1974-75 में विदेशी सहायता	132
7.6.	विदेशी ऋण पर ब्याज आदि का भुगतान	133

1.1 : सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा निवल राष्ट्रीय उत्पाद (अर्थात राष्ट्रीय आय)

	सकल राष्ट्रीय उत्पाद (करोड़ रुपयों में)		निवल राष्ट्रीय उत्पाद (करोड़ रुपयों में)		प्रति व्यक्ति निवल राष्ट्रीय आय (रुपये)		निवल राष्ट्रीय उत्पाद प्रतिव्यक्ति का सूचकांक (आधार 1960-61)		निवल राष्ट्रीय उत्पाद का सूचकांक (आधार 1960-61)	
	चालू मूल्यों पर	1960-61 के मूल्यों पर	चालू मूल्यों पर	1960-61 के मूल्यों पर	चालू मूल्यों पर	1960-61 के मूल्यों पर	चालू मूल्यों पर	1960-61 के मूल्यों पर	चालू मूल्यों पर	1960-61 के मूल्यों पर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1960-61 .	14003	14003	13267	13267	305.7	305.7	100.0	100.0	100.0	100.0
1961-62 .	14803	14516	13991	13732	315.1	309.3	105.5	103.5	103.1	101.2
1962-63 .	15728	14881	14796	13994	325.9	308.2	111.5	105.5	106.6	100.8
1963-64 .	17976	15684	16975	14769	365.8	318.3	127.9	111.3	119.7	104.1
1964-65 .	21112	16869	20000	15884	421.9	335.1	150.7	119.7	138.0	109.6
1965-66 .	21865	16112	20636	15081	425.5	310.9	155.5	113.7	139.2	101.7
1966-67 .	25198	16348	23810	15257	481.0	308.2	179.5	115.0	157.3	100.8
1967-68 .	29714	17788	28166	16616	556.6	328.4	212.3	125.2	182.1	107.4
1968-69 .	30560	18431	28859	17180	557.1	331.7	217.5	129.5	182.2	108.5
1969-70 .	33883	19444	31968	18152	604.3	343.1	241.0	136.8	197.7	112.2
1970-71* .	36730	20365	34627	19035	640.1	351.8	261.0	143.5	209.4	115.1
1971-72* .	38899	20672	36599	19299	660.6	348.4	275.9	145.5	216.1	114.0
1972-73* .	42136	20574	39592	19130	698.3	337.4	298.4	144.2	228.4	110.4
1973-74 †	52193	21214	49290	19724	849.8	340.1	371.5	148.7	278.0	111.3
तीसरी योजना में वार्षिक वृद्धि दर .	9.3	2.8	9.2	2.6	6.9	0.3				
1966-67 .	15.2	1.5	15.4	1.2	13.0	(−) 0.9				
1967-68 .	17.9	8.8	18.3	8.9	15.7	6.6				
1968-69 .	2.8	3.6	2.5	3.4	0.09	1.0				
1969-70 .	10.9	5.5	10.8	5.7	8.5	3.4				
1970-71 .	8.4	4.7	8.3	4.9	5.9	2.5				
1971-72 .	5.9	1.5	5.7	1.4	3.2	(−) 1.0				
1972-73 .	8.3	(−) 0.5	8.2	(−) 0.9	5.7	(−) 3.2				
1973-74 .	23.9	3.1	24.5	3.1	21.7	0.8				
चौथी योजना में वार्षिक वृद्धि दर .	11.3	2.9	11.3	2.8	8.7	0.5				

*अनन्तिम

†तुरत अनुमान

1.2 : मूल उद्योगों के अनुसार निवल राष्ट्रीय उत्पाद के अनुमान–प्रतिशत विभाजन

(1960-61 के मूल्यों पर)

उद्योग समूह	1960-61	1965-66	1966-67	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71*	1971-72*	1972-73*	1973-74†
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1 कृषि, वन पालन, और लागिंग मीनक्षेत्र, खनन और पत्थर की खुदाई .	52.5	44.2	43.0	45.9	44.9	45.1	46.2	44.8	42.1	43.2
2. उत्पादन, निर्माण, बिजली, गैस तथा जलपूर्त्ति . .	19.2	23.6	24.1	22.9	23.4	23.3	22.3	22.4	23.5	22.6
3. परिवहन, संचार और व्यापार .	14.1	16.4	16.6	15.9	16.1	16.1	15.8	16.1	16.8	16.3
4. बैंक व्यवसाय और बीमा, वास्तविक सम्पदा तथा आवासों का स्वामित्व और व्यापारिक सेवाएं	4.2	4.4	4.4	4.1	4.1	4.0	4.0	4.2	4.4	4.3
5. सरकारी प्रशासन और रक्षा तथा अन्य सेवाएं . . .	10.5	12.4	12.9	12.3	12.5	12.5	12.6	13.4	14.2	14.5
6. अभिकर्त्ता मूल्य पर वास्तविक घरेलू उत्पाद . . .	100.5	101.0	101.0	101.1	101.0	101.0	100.9	100.9	101.0	100.9
7. विदेशों से वास्तविक अभिकर्त्ता आय	(–)0.5	(–)1.0	(–)1.0	(–)1.0	(–)1.0	(–)1.0	(–)0.9	(–)0.9	(–)1.0	(–)0.9
8. अभिकर्त्ता मूल्य पर वास्तविक राष्ट्रीय उत्पाद . . .	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

*अनन्तिम

†तुरत अनुमान

1.3: कृषि उत्पादन : क्षेत्रफल और उपज के सूचक अंक

(आधार : 1961-62 को समाप्त होने वाले तीन वर्ष = 100)

वर्ष	(निम्नलिखित के सूचक अंक)		
	क्षेत्रफल*	उत्पादन**	प्रति हेक्टर उपज@
1	2	3	4
1960-61	100.0	100.0	100.0
1961-62	101.0	102.4	101.4
1962-63	101.9	102.8	100.9
1963-64	102.6	106.8	104.1
1964-65	102.1	104.9	102.7
1965-66	101.6	102.2	100.6
1966-67	102.2	102.8	100.6
1967-68	103.0	109.1	105.9
1968-69	104.8	118.0	112.6
1969-70	105.6	122.9	116.4
1970-71	106.7	128.3	120.2
1971-72	105.7	127.6	120.7
1972-73	106.2	127.7	120.2

*कृषि वर्ष जुलाई से जून तक है

**तीन-तीन वर्षों अर्थात एक वर्ष संबद्ध वर्ष का, दूसरा उससे पहले और तीसरा उससे बाद का वर्ष के, कुल औसत

@कालम 2 और 3 के आधार पर

1.4 कृषि उत्पादन के सूचक अंक

(आधार : 1961-62 को समाप्त होने वाले तीन वर्ष = 100)

वर्ग/वस्तुएं.	भार	1960-61	1965-66	1966-67	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
क. अन्न	65.9	102.1	89.9	91.9	117.1	115.7	123.5	133.9	132.0	121.2	130.3
(क) दालों से भिन्न	57.9	101.6	90.9	95.1	119.5	120.0	127.2	138.9	137.5	126.6	137.1
चावल	34.8	101.8	90.0	89.6	110.7	116.5	118.5	123.8	127.0	115.7	129.0
गेहूं	8.4	98.8	93.4	102.4	148.7	157.1	180.6	214.2	237.3	222.3	198.4
मोटा अनाज	14.7	102.8	91.8	104.0	123.5	107.4	117.4	131.4	105.8	98.0	121.6
(ख) दालें	8.0	105.5	82.4	68.9	100.0	84.3	96.7	97.7	91.7	80.3	80.5
जिसमें चना	3.9	106.2	71.7	61.5	101.4	70.2	94.2	88.3	86.3	77.1	68.1
ख. अन्न से भिन्न	34.1	103.8	107.1	103.7	115.6	113.2	120.5	126.6	128.9	119.4	134.1
(क) तिलहन जिसमें	11.4	102.7	98.0	99.4	121.0	105.7	117.1	133.4	131.0	109.1	129.2
मूंगफली	5.4	101.5	92.1	95.3	123.8	100.0	110.8	132.0	133.5	84.4	125.3
तोरिया और सरसों	1.7	107.7	103.8	98.2	125.4	107.7	125.1	158.0	114.6	144.6	135.4
(ख) रेशे	5.0	106.6	98.8	109.0	121.8	97.5	114.6	100.2	133.8	112.8	126.7
कपास	3.3	119.1	104.1	113.0	123.9	116.9	119.4	102.2	149.1	123.0	132.1
जूट	1.3	82.8	89.6	107.3	126.6	58.7	113.2	99.1	114.1	99.9	123.9
मेस्ता	0.3	81.5	95.3	89.4	93.2	66.3	82.7	91.8	84.2	81.4	107.0
(ग) बागानी फसलें	3.3	96.7	112.8	118.1	118.4	126.3	123.9	138.8	138.3	148.3	153.5
चाय	2.9	96.2	109.7	112.6	115.2	120.5	117.9	125.4	130.5	136.5	141.4
कहवा	0.3	100.4	114.9	141.2	103.2	132.3	114.5	198.5	124.1	163.9	154.9
रबड़	0.1	99.3	188.3	204.3	240.3	264.9	305.5	343.6	377.3	419.1	466.8
(घ) विविध जिसमें	9.4	106.4	115.6	93.7	97.3	118.9	126.3	122.1	113.4	119.7	135.1
गन्ना (गुड़)	7.8	108.1	121.0	90.0	92.7	121.5	130.6	122.3	109.6	120.3	132.9
तम्बाकू	1.4	97.7	95.3	114.9	119.9	117.4	109.6	117.7	136.2	121.0	143.5
ग. सभी वस्तुएं	**100.0**	**102.7**	**95.8**	**95.9**	**116.6**	**114.8**	**122.5**	**131.4**	**130.9**	**120.6**	**131.6**

टिप्पणी : 1966-67 और उसके बाद के आंकड़े अनन्तिम हैं और इसलिए उनमें फेर-बदल हो सकता है।

1.5: कृषि उत्पादन*

	इकाई	1955-56	1960-61	1965-66	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
क. अन्न	दस लाख मेट्रिक टन	69.34	82.33	72.35	95.05	94.01	99.50	108.42	105.17	97.03	103.61
(क) दालों से भिन्न अनाज	,,	57.63	69.59	62.40	82.95	83.60	87.81	96.60	94.07	87.12	93.86
चावल	,,	28.65	34.60	30.59	37.61	39.76	40.43	42.23	43.07	39.25	43.74
गेहूं	,,	8.87	11.00	10.39	16.54	18.65	20.09	23.83	26.41	24.73	22.07
ज्वार	,,	6.74	9.90	7.58	10.05	9.80	9.72	8.10	7.72	6.97	8.99
बाजरा	,,	3.46	3.29	3.75	5.19	3.80	5.33	8.03	5.32	3.93	7.09
दूसरे अनाज	,	9.91	10.81	10.09	13.56	11.58	12.24	14.42	11.56	12.24	11.97
(ख) दालें जिसमें	,,	11.71	12.73	9.94	12.10	10.42	11.69	11.82	11.09	9.91	9.75
चना	,,	5.42	6.26	4.22	5.97	4.31	5.55	5.20	5.08	4.54	4.01
ख. अनाज से भिन्न	,,										
(क) तेलहन जिनमें**	,,	5.50	6.87	6.40	8.30	6.85	7.73	9.26	8.75	6.86	8.68
मूंगफली	,,	3.68	4.70	4.26	5.73	4.63	5.13	6.11	6.18	4.09	5.80
तोरिया और सरसों	,,	0.86	1.35	1.30	1.57	1.35	1.56	1.98	1.43	1.81	1.69
(ख) गन्ना (गुड़ के रूप में)	,,	7.43	11.41	12.77	9.79	12.83	13.78	12.98	11.63	12.76	14.05
(ग) कपास (रूई)	दस लाख गांठें@	3.99	5.24	4.58	5.45	5.14	5.26	4.50	6.56	5.42	5.82
(घ) जूट	,,	4.47	4.14	4.48	6.32	2.93	5.66	4.94	5.68	4.98	6.18
(ङ) मेस्ता	,,	1.15	1.11	1.30	1.27	0.91	1.13	1.26	1.15	1.11	1.46

*1955–56 से 1965–66 तक के आंकड़े, 1965–66 के पूर्णतः संशोधित अनुमानों को आधार मान कर संमायोजित कर दिये गये हैं। 1966–67 और उसके बाद के आंकड़े अनन्तिम हैं और उनमें संशोधन हो सकता है।

**इसमें मूंगफली, तोरिया और सरसों, तिल, अलसी तथा रेंडी शामिल हैं।

@गांठ--180 किलोग्राम।

टिप्पणी : संभव है कि पूर्णांकन के कारण आंकड़ों के जोड़ आपस में मेल न खायें।

1.6 : अन्न के उत्पादन के राज्यवार अनुमान 1968-69 से 1973-74 तक

(हजार मेट्रिक टन)

राज्य	वर्ष	चावल	गेहूं	मोटा अनाज		दालों से	कुल दालें	कुल अन्न
				ज्वार, बाजरा और मक्का	अन्य	भिन्न कुल अनाज		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
आन्ध्र प्रदेश . . .	1968-69	4340.5	3.0	1817.8	435.5	6596.8	250.1	6846.9
	1969-70	4700.0	4.0	1980.9	452.1	7137.0	262.6	7399.6
	1970-71	4786.4	10.3	1601.5	558.0	6956.2	449.5	7405.7
	1971-72	4717.1	10.8	1661.3	521.7	6910.9	379.6	7290.5
	1972-73	4256.5	9.7	1702.4	439.7	6408.3	299.4	6707.7
	1973-74	5352.2	13.0	2041.7	543.0	7949.9	380.8	8330.7
असम . . .	1968-69	2250.8	4.7	14.0	3.0	2272.5	31.9	2304.9
	1969-70	2057.5	6.9	6.5	2.3	2073.2	35.7	2108.9
	1970-71	1980.5	12.1	6.7	2.7	2002.0	32.3	2034.3
	1971-72	1908.1	48.0	6.4	2.9	1965.4	30.9	1996.3
	1972-73	2177.1	160.4	5.9	4.9	2348.3	48.0	2396.3
	1973-74	2066.3	48.2	7.6	4.4	2126.5	44.7	2171.2
बिहार	1968-69	5197.4	1259.0	1029.3	378.0	7863.7	1006.2	8869.9
	1969-70	4009.0	1200.0	878.2	350.3	6437.5	1108.2	7545.7
	1970-71	4154.3	1258.9	1128.9	351.7	6893.8	987.4	7881.2
	1971-72	5273.2	2493.7	139.4	271.3	8177.6	889.3	9066.9
	1972-73	4464.5	3136.4	811.6	251.0	8663.5	656.0	9319.5
	1973-74	4140.2	1650.0	954.5	261.3	7006.0	673.1	7679.1
गुजरात . . .	1968-69	230.0	620.5	1265.7	105.9	2222.1	123.8	2345.9
	1969-70	447.4	591.6	1880.1	172.3	3091.4	129.6	3221.0
	1970-71	597.5	939.4	2516.4	187.6	4240.9	165.2	4406.1
	1971-72	517.5	897.4	2459.8	186.0	4060.7	161.3	4222.0
	1972-73	147.9	547.6	1312.8	94.1	2102.4	112.0	2214.4
	1973-74	467.9	905.9	1937.7	151.8	3463.3	165.2	3628.5
हरियाणा . . .	1968-69	265.0	1522.0	399.0	195.0	2381.0	625.2	3006.2
	1969-70	371.0	2119.5	709.0	180.1	3379.6	1187.8	4567.4
	1970-71	460.0	2342.0	1013.0	123.1	3938.1	813.2	4751.3
	1971-72	536.0	2402.0	808.0	115.1	3861.1	684.3	4545.4
	1972-73	462.0	2231.0	646.0	149.0	3488.0	589.8	4077.8
	1973-74	540.0	1810.0	863.0	136.0	3349.0	489.5	3838.5
हिमाचल प्रदेश . . .	1968-69	98.5	259.1	500.0	81.2	938.8	22.1	960.9
	1969-70	113.8	300.0	443.7	103.6	961.1	21.2	982.3
	1970-71	123.9	246.2	482.6	65.4	918.1	31.6	949.7
	1971-72	103.6	394.5	330.3	87.8	916.2	29.1	945.3
	1972-73	85.7	333.1	392.8	73.9	885.5	28.2	913.7
	1973-74	117.5	282.8	435.5	71.6	907.4	29.6	937.0

1	2	3	4	5	6	7	8	9
जम्मू और कश्मीर . . .	1968-69	487.3	210.0	332.6	35.0	1064.9	34.3	1099.2
	1969-70	482.1	250.0	370.1	18.3	1120.5	31.0	1151.5
	1970-71	396.9	124.8	377.4	14.9	914.0	30.4	944.4
	1971-72	370.1	168.0	374.3	17.1	929.5	29.1	958.6
	1972-73	342.7	174.3	389.6	19.0	925.6	28.8	954.4
	1973-74	460.1	174.3	324.6	21.6	980.6	29.8	1010.4
कर्नाटक . . .	1968-69	2001.1	160.0	1917.4	585.3	4663.8	385.6	5049.4
	1969-70	2290.0	136.3	2131.5	931.3	5489.1	401.6	5890.7
	1970-71	1952.9	94.6	2492.5	1018.7	5558.7	403.6	5962.3
	1971-72	2097.1	187.2	2343.6	970.5	5598.4	466.1	6064.5
	1972-73	1748.8	109.2	1586.0	917.1	4361.1	238.9	4600.0
	1973-74	2068.8	188.7	2366.0	1030.3	5653.8	497.4	6151.2
केरल	1968-69	1400.0	—	0.5	10.2	1410.7	16.7	1427.4
	1969-70	1214.9	—	0.6	11.1	1226.6	16.0	1242.6
	1970-71	1298.0	—	0.8	8.1	1306.9	14.0	1320.9
	1971-72	1351.7	—	0.8	7.6	1360.1	13.1	1373.2
	1972-73	1376.4	—	0.6	7.5	1384.5	12.8	1397.3
	1973-74	1353.9	—	0.6	7.5	1362.0	13.7	1375.7
मध्य प्रदेश . . .	1968-69	3004.6	2007.5	2311.1	490.3	7813.5	1646.5	9460.0
	1969-70	3201.6	2216.0	2053.0	540.9	8011.5	1757.6	9769.1
	1970-71	3697.3	2592.2	2083.4	557.1	8930.0	1991.6	10921.6
	1971-72	3702.4	3189.2	1847.5	542.1	9281.2	2353.1	11634.3
	1972-73	3083.5	2284.8	2507.8	499.5	8375.6	2255.6	10631.2
	1973-74	3537.3	2601.3	1788.1	550.1	8476.8	1935.7	10412.5
महाराष्ट्र . . .	1968-69	1368.8	428.1	4198.2	288.5	6283.6	873.6	7157.2
	1969-70	1431.3	390.5	4034.6	218.1	6074.5	839.4	6913.9
	1970-71	1662.9	451.1	2420.5	279.6	4814.1	775.9	5590.0
	1971-72	1368.5	502.8	2188.8	249.9	4310.0	642.9	4952.9
	1972-73	745.8	248.5	1465.7	139.7	2599.7	451.0	3050.7
	1973-74	1640.5	536.0	3763.7	309.7	6249.9	986.5	7236.4
मणिपुर . . .	1968-69	300.0	—	18.7	—	318.7	—	318.7
	1969-70	232.0	—	12.8	—	244.8	—	244.8
	1970-71	159.8	—	6.8	—	166.6	—	166.6
	1971-72	158.6	4.2	17.1	—	179.9	—	179.9
	1972-73	152.2	0.2	22.0	—	174.4	—	174.4
	1973-74	238.6	0.1	27.2	—	265.9	—	265.9
मेघालय . . .	1968-69	@	@	@	@	@	@	@
	1969-70	@	0.2	8.0	0.8	9.0	0.8	9.8
	1970-71	113.9	0.2	7.1	0.3	121.5	0.9	122.4
	1971-72	108.0	0.2	7.5	0.9	116.6	0.9	117.5
	1972-73	110.0	0.2	8.0	1.0	119.2	1.0	120.2
	1973-74	99.4	0.2	8.0	1.0	101.4	0.8	102.2

@ असम में शामिल हैं ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9
नागालैण्ड . . .	1968-69	52.9	—	—	—	52.9	—	52.9
	1969-70	49.8	—	—	—	49.8	—	49.8
	1970-71	54.1	—	—	—	54.1	—	54.1
	1971-72	33.2	—	—	—	33.2	—	33.2
	1972-73	34.7	—	6.3	11.5	52.5	1.2	53.7
	1973-74	36.5	—	6.1	11.5	54.1	1.5	55.6
उड़ीसा	1968-69	4698.6	17.4	67.9	245.5	5029.4	400.0	5429.4
	1969-70	4316.6	18.9	76.8	221.5	4633.8	399.1	5032.9
	1970-71	4341.1	18.5	71.6	206.3	4637.5	466.6	5104.1
	1971-72	3619.5	38.7	79.6	225.8	3963.6	390.2	4353.8
	1972-73	3983.1	85.1	76.8	226.6	4371.6	488.8	4860.4
	1973-74	4439.1	82.7	81.5	221.9	4825.2	484.5	5309.7
पंजाब	1968-69	460.0	4520.0	954.0	70.2	6004.2	247.9	6252.1
	1969-70	572.9	4800.0	1051.7	80.2	6504.8	431.9	6936.7
	1970-71	688.0	5145.0	1106.8	57.4	6997.2	309.1	7306.3
	1971-72	920.0	5618.0	1029.8	55.3	7623.1	305.2	7928.3
	1972-73	955.0	5368.0	1017.4	59.2	7399.6	294.0	7693.6
	1973-74	1163.0	5257.0	868.3	89.2	7377.5	342.7	7720.2
राजस्थान . . .	1968-69	57.0	1178.1	1321.9	593.2	3150.2	856.6	4006.8
	1969-70	98.9	1275.3	1739.7	531.0	3644.9	1104.6	4749.5
	1970-71	134.5	1951.2	4176.3	798.8	7060.8	1777.3	8838.1
	1971-72	159.4	1888.7	2366.9	602.1	5017.1	1317.7	6334.8
	1972-73	80.0	1753.5	1833.2	496.2	4162.9	994.9	5157.8
	1973-74	117.6	1789.2	2910.6	607.3	5424.7	1291.5	6716.2
तमिलनाडु . . .	1968-69	3940.0	0.4	730.5	652.3	5323.2	92.1	5415.3
	1969-70	4532.2	0.4	898.9	698.0	6129.5	109.5	6239.0
	1970-71	5303.4	0.5	883.3	670.4	6857.6	116.5	6974.1
	1971-72	5302.0	0.7	826.1	660.6	6789.4	153.7	6943.1
	1972-73	5569.1	0.4	844.1	561.5	6975.1	192.0	7167.1
	1973-74	5595.0	0.4	875.6	596.8	7067.8	190.2	7258.0
त्रिपुरा	1968-69	205.1	—	—	—	205.1	1.1	206.2
	1969-70	234.7	—	—	—	234.7	1.1	235.8
	1970-71	256.1	—	—	—	256.1	1.3	257.4
	1971-72	270.8	0.9	—	—	271.7	1.4	273.1
	1972-73	183.3	1.4	—	—	184.7	0.9	185.6
	1973-74	362.0	0.8	—	—	362.8	0.9	363.7
उत्तर प्रदेश . . .	1968-69	2922.1	6086.8	2368.6	1634.6	13012.0	3284.2	16296.2
	1969-70	3532.9	6314.3	2376.3	1979.8	14203.3	3343.9	17547.2
	1970-71	3700.9	7689.5	3164.3	1960.8	16515.5	3078.2	19593.7
	1971-72	3776.5	7550.1	1599.7	1851.3	14777.6	2919.9	17697.5
	1972-73	3273.0	7515.2	2600.2	1842.9	15231.3	2923.0	18154.3
	1973-74	3840.4	6014.4	2391.5	1633.8	13880.1	1849.8	15729.9

1	2	3	4	5	6	7	8	9
पश्चिम बंगाल . . .	1968-69	6250.0	300.0	40.2	63.8	6654.0	508.3	7162.3
	1969-70	6350.0	400.0	45.9	64.9	6860.8	503.0	7363.8
	1970-71	6140.1	868.1	48.5	59.3	7116.0	375.0	7491.0
	1971-72	6508.4	921.2	38.2	71.1	7538.9	317.0	7855.9
	1972-73	5715.3	688.0	38.8	45.4	6487.5	284.8	6772.3
	1973-74	5798.9	629.9	38.8	56.9	6524.5	340.1	6864.6
अखिल भारतीय . .	1968-69	39761.2	18651.6	19306.5	5875.5	83594.8	10417.8	94012.6
	1969-70	40429.7	20093.3	20722.1	6565.5	87810.6	11690.7	99501.3
	1970-71	42225.2	23832.5	23619.3	6927.2	96604.2	11817.8	108422.0
	1971-72	43068.0	26409.9	18141.5	6454.9	94074.3	11093.4	105167.7
	1972-73	39245.3	24734.6	17285.5	5854.2	87119.6	9906.7	97026.3
	1973-74	43741.7	22072.5	21720.7	6322.5	93857.4	9753.7	103611.1

टिप्पणी :—1968-69 से उत्पादन के आंकड़े अनन्तिम हैं और उनमें फेर-बदल हो सकता है ।

1.7 : चुने हुए प्रत्यक्ष कृषि विकास कार्यक्रमों की प्रगति

कार्यक्रम	इकाई	इन वर्षों के दौरान उपलब्धियां								
		1966-67	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74	1974-75 लक्ष्य
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
अधिक उपज वाली किस्मों से संबंधित कार्यक्रम :										
धान	दस लाख हैक्टेयर	0.88	1.78	2.60	4.25	5.45	7.20	8.11	9.40	11.00
गेहूं	,,	0.54	2.94	4.80	5.00	6.54	7.86	10.00	11.30	12.20
मक्का	,,	0.21	0.29	0.40	0.42	0.47	0.49	0.61	0.65	0.75
ज्वार	,,	0.19	0.60	0.70	0.55	0.80	0.69	0.87	1.10	1.35
बाजरा	,,	0.06	0.42	0.70	1.14	2.03	1.77	2.50	3.00	3.40
जोड़ (अधिक उपज वाली किस्मों से सम्बन्धित कार्यक्रम:)		1.88	6.03	9.20	11.36	15.29	18.01	22.09	25.45	28.70
बड़ी और दरमियानी सिंचाई (अतिरिक्त क्षेत्र)	,,	—	—	1.57†	0.32	0.31	0.34	0.74	19.40@	20.20@
लघु सिंचाई (अतिरिक्त क्षेत्र)	,,	1.36	1.27	1.37	1.35	1.56	1.51	1.57	23.50@	24.90@
भूमि संरक्षण (अतिरिक्त क्षेत्र)	,,	1.45	1.42	1.33	1.28	1.33	1.49	2.17	1.60	0.69
रासायनिक खाद की खपत										
नाइट्रोजनस (एन)	दस लाख मेट्रिक टन	0.74	1.04	1.21	1.36	1.48	1.80	1.84	1.83	2.79
फास्फेटिक ($पी_2 ओ_5$)	,,	0.25	0.84	0.38	0.42	0.54	0.56	0.58	0.65	0.93
पोटाशियम युक्त (के2ओ०)	,,	0.11	0.17	0.17	0.21	0.24	0.30	0.35	0.36	0.52
जोड़ एन०पी०के०	,,	1.10	1.55	1.76	1.99	2.26	2.66	2.77	2.84	4.24

@वर्ष के अन्त में कुल स्तर

†1966-69 के तीन वर्षों से सम्बन्धित।

1.8 : दालें और अन्य अनाज की निवल उपलब्ध मात्रा

वर्ष	जन संख्या (दस लाख)	अन्य अनाज				दालें	प्रति व्यक्ति दैनिक निवल उपलब्धता					
		निवल उत्पादन (दस लाख टन)	निवल आयात (दस लाख टन)	सरकारी स्टाक में घटती बढ़ती (दस लाख टन)	निवल** उपलब्धता (दस लाख टन)	निवल उपलब्धता (दस लाख टन)	अन्य अनाज (ग्रौंस)	दालें (ग्रौंस)	कुल (ग्रौंस)	अन्य अनाज (ग्राम)	दालें (ग्राम)	कुल (ग्राम)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1956	397.3	50.43	1.39	(—) 0.60	52.42	10.23	12.72	2.48	15.20	360.5	70.4	430.9
1961	442.4	60.89	3.49	(—) 0.17	64.55	11.14	14.10	2.43	16.53	399.7	69.0	468.7
1962	452.2	61.85	3.64	(—) 0.36	65.85	10.24	14.07	2.19	16.26	399.0	62.0	461.0
1963	462.0	60.19	4.55	(—) 0.02	64.76	10.08	13.54	2.11	15.65	384.0	59.8	443.8
1964	472.1	61.79	6.26	(—) 1.24	69.29	8.81	14.14	1.80	15.94	401.0	51.0	452.0
1965	482.5	67.33	7.45	(+) 1.06	73.72	10.85	14.77	2.17	16.94	418.6	61.6	480.2
1966	493.2	54.60	10.34	(+) 0.14	64.80	8.68	12.70	1.70	14.40	360.0	48.2	408.2
1967*	504.2	57.65	8.66	(—) 0.26	66.57	7.30	12.76	1.40	14.16	361.7	39.7	401.4
1968*	515.4	72.58	5.69	(+) 2.04	76.23	10.57	14.25	1.98	16.23	404.1	56.0	460.1
1969*	527.0	73.14	3.85	(+) 0.46	76.53	9.09	14.04	1.67	15.71	397.9	47.3	445.2
1970*	538.9	76.83	3.58	(+) 1.12	79.29	10.20	14.22	1.83	16.05	403.1	51.9	455.0
1971*	550.8	84.53	2.03	(+) 2.57	83.99	10.32	14.74	1.81	16.55	417.8	51.3	469.1
1972*	562.5	82.31	(—) 0.49	(—) 4.69	86.53	9.70	14.82	1.66	16.48	420.2	47.1	467.3
1973*	574.2	76.23	3.59	(—) 0.44	80.27	8.67	13.51	1.46	14.97	383.4	41.4	424.5
1974*	586.1	82.13	4.78@	(—) 0.47	87.38	8.53†	14.41	1.41	15.82	408.5	39.9	448.4

*अनन्तिम

**निवल उपलब्धता = कालम (3 + 4 — 5)

† केवल निवल उत्पादन से संबन्धित है ।

@ सकल आयात

टिप्पणियां : 1. जन संख्या के आंकड़ों का आधार आयोजना आयोग की विशेषज्ञ समिति के नवीनतम आंकड़े हैं ।

2. उत्पादन के आंकड़े जुलाई से शुरू और जून में खत्म होने वाले कृषि वर्ष के बारे में । है 1956 के आंकड़े 1955-56 के उत्पादन के सूचक हैं और इसी प्रकार बाद के वर्षों के बारे में है । 1965-66 तक के आंकड़े अनुमानित उत्पादन के आंकड़े हैं जिन्हें 1965-66 के पूर्ण संशोधित अनुमानों को आधार मान कर संशोधित कर दिया गया है । 1966-67 से बाद के आंकड़े अनन्तिम है और ये घट बढ़ सकते हैं ।

3. सकल उत्पादन का 87.5 प्रतिशत उत्पादन निवल उत्पादन माना गया है, बाकी 12.5 प्रतिशत अंश चारे, बीज की आवश्यकता व नष्ट होने आदि के लिए आंका गया है ।

4. व्यापारियों और उत्पादकों के स्टाक की घटती बढ़ती के आंकड़े उपलब्ध नहीं है । इसलिए निवल उपलब्धता के अनुमानों को खपत के आंकड़ों के सटीक बराबर नहीं समझना चाहिए ।

1.9 : अन्न की निवल उपलब्धता, वसूली और सरकारी वितरण

वर्ष	अनाज का निवल उत्पादन (दस लाख मैट्रिक टनों में)	आयात (दस लाख मैट्रिक टनों में)	अनाज की निवल उपलब्धता@ (दस लाख मैट्रिक टनों में)	वसूली (दस लाख मेट्रिक टनों में)	सरकारी वितरण (दस लाख मैट्रिक टनों में)	कालम 4 की तुलना में कालम 3 का प्रतिशत	कालम 2 की तुलना में कालम 5 का प्रतिशत	कालम 4 की तुलना में कालम 6 का प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1956	60.67	1.44	62.65	0.04	2.08	2.3	0.1	3.3
1961	72.04	3.50	75.69	0.54	3.98	4.6	0.7	5.3
1962	72.10	3.64	76.09	0.48	4.37	4.8	0.7	5.7
1963	70.29	4.56	74.84	0.75	5.18	6.1	1.1	6.9
1964	70.61	6.27	78.10	1.43	8.67	8.0	2.0	11.1
1965	78.20	7.46	84.57	4.03	10.08	8.8	5.2	11.9
1966	63.30	10.36	73.48	4.01	14.09	14.1	6.3	19.2
1967†	64.95	8.67	73.87	4.46	13.17	11.7	6.9	17.8
1968†	83.17	5.69	86.80	6.81	10.22	6.6	8.2	11.8
1969†	82.26	3.87	85.62	6.38	9.39	4.5	7.8	11.0
1970†	87.06	3.63	89.49	6.71	8.84	4.1	7.7	9.9
1971†	94.87	2.05	94.31	8.86	7.82	2.2	9.3	8.3
1972†	92.02	0.45	96.21	7.67	10.48†	0.5	8.3	10.9
1973†	84.90	3.61	88.98	8.42	11.40	4.1	9.9	12.8
1974†	90.66	4.78	95.91	5.68	10.61	5.0	6.3	11.1

†अनन्तिम ।

@निवल उपलब्धता = निवल उत्पादन + निवल आयात — सरकारी भंडार में घटती बढ़ती ।

†बंगला देश को किया गया निर्यात शामिल नहीं है ।

1.10 : दैनिक उपयोग की कुछ महत्वपूर्ण वस्तुओं की प्रति व्यक्ति उपलब्धता

वर्ष	खाद्य तेल@ (किलोग्राम)	बनस्पति (किलोग्राम)	चीनी (नवम्बर–अक्टूबर) (किलोग्राम)	सूती कपड़ा@@ (मीटर)	कृत्रिम रेशे से बुना कपड़ा@@ (मीटर)	चाय (ग्राम)	काफी* (ग्राम)	बिजली (घरेलू उपयोग के लिए) (किलोवाट घण्टे)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1955-56	2.5	0.7	5.0	14.4	उपलब्ध नहीं	257	67	2.4£
1960-61	3.2	0.8	4.7	13.8	1.2	287	80	3.4
1961-62	3.2	0.7	5.8	14.8	1.2	309	57	3.8
1962-63	3.1	0.8	5.4	14.4	1.2	294	72	4.2
1963-64	2.7	0.8	4.9	14.7	1.2	298	76	4.4
1964-65	3.6	0.8	5.1	15.2	1.6	309	78	4.7
1965-66	2.6	0.8	5.7	14.7	1.7	337	70	4.8
1966-67	2.5	0.7	5.1	14.0	1.7	365	85	5.2
1967-68	3.2	0.8	4.3**	13.6	1.7	351	53	5.7
1968-69	2.4	0.9	5.0	14.4	1.9	353	75	6.0
1969-70	2.8	0.9	6.1	13.6	1.8	377	59	6.5
1970-71	3.3	1.0	7.3	13.6	1.7	387	113	7.0
1971-72	2.9	1.1	6.7	12.4	1.7	392	45	7.3
1972-73	2.1	1.0	6.1	13.2	1.6	404	66	7.5
1973-74(अ)	3.0	0.8	6.0	12.1	1.5	413	67†	उपलब्ध नहीं

अ—अनन्तिम।

@इसमें मूंगफली, तोरिया और सरसों का तेल, नारियल का तेल और तिल का तेल शामिल है किन्तु बनस्पति बनाने के काम आने वाला तेल शामिल नहीं है। 1973-74 के लिए नारियल के तेल के आँकड़े उपलब्ध न होने के कारण, 1972-73 के आँकड़ों को ही ले लिया गया है।

@@कैलेण्डर वर्षों से सम्बद्ध 1955 के आंकड़े 1955-56 के सामने दिये गये हैं और आगे के वर्षों के आंकड़े भी इसी प्रकार दिये गये हैं।

*आंकड़े काफी के मौसम से सम्बद्ध हैं।

**1967-68 से चीनी का मौसम अक्टूबर-सितम्बर है।

£1956 से सम्बद्ध।

†जैसा 30 नवम्बर 1974 को था।

1.11 : उर्वरकों का उत्पादन, आयात और कुल उपलब्धता

(हजार मेट्रिक टन पदार्थों के रूप में)

वर्ष	नाइट्रोजनी उर्वरक (एन)			फास्फोरसी उर्वरक ($पी_2 ओ_5$)			पोटाशी उर्वरक* $के_2 ओ$
	उत्पादन	आयात	कुल उपलब्धता	उत्पादन	आयात	कुल उपलब्धता	आयात@
1	2	3	4	5	6	7	8
1955-56 . .	80	54	134	12	—	12	10
1956-57 . .	79	56	135	15	—	15	15
1957-58 . .	78	111	189	26	—	26	11
1958-59 . .	81	99	180	30	2	32	22
1959-60 . .	81	164	245	49	9	58	34
1960-61 . .	98	119	217	52	--	52	23
1961-62 . .	145	142	287	66	--	66	32
1962-63 . .	178	252	430	80	10	90	40
1963-64 . .	222	226	448	107	12	119	64
1964-65 . .	240	233	473	131	12	143	57
1965-66 . .	233	326	559	111	14	125	85
1966-67 . .	308	632	940	145	148	293	118
1967-68 . .	367	867	1234	194	349	539	270
1968-69 . .	543	842	1385	210	138	348	213
1969-70 . .	716	667	1383	222	94	316	120
1970-71 . .	830	477	1307	229	32	261	120
1971-72 . .	952	481	1433	278	248	526	268
1972-73 . .	1060	665	1725	326	204	530	325
1973-74 . .	1060	659	1719	323	215	538	370

*इनका देश में उत्पादन नहीं होता।

@1964-65 तक $के_2 ओ$ के आयात के आंकड़े जुलाई-जून के आधार पर हैं और उसके बाद के आंकड़े वित्तीय वर्ष के आधार पर।

1.12 औद्योगिक उत्पादन के सूचक अंकों में प्रतिशत परिवर्तन (आधार 1960-100)

	भार	1961	1962	1963	1964	1965	1966	1967	1968	1969	1970	1971	1972*	1973*	जन०-जून74*
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
I खनन और पत्थर की खुदाई	9.72	+5.4	+9.3	+6.9	-3.1	+10.3	+3.3	-0.2	+6.2	+2.2	+1.1	+3.0	+7.0	-0.4	+5.0
कोयला	6.71	+7.0	+9.3	+10.3	-4.7	+8.9	+2.2	+0.7	+5.8	+5.5	-3.2	-1.3	+2.0	+3.3	+3.1
कच्चा लोहा	0.59	+13.0	+5.3	+4.2	+4.0	+11.6	+11.8	-3.1	+7.7	+6.0	+6.2	+9.5	+3.4	-1.4	-3.1
II वस्तु निर्माण	84.91	+9.2	+9.5	+7.9	+9.4	+9.1	-1.5	-1.4	+6.1	+7.5	+4.9कोई परिवर्तन नहीं		+7.0	+1.0	+0.6
(क) उपभोक्ता वस्तु	32.61	+7.4	+1.6	+1.6	+6.9	+4.3	+5.5	-4.0	+9.0	+8.6	+6.5	+0.3	+7.1	-4.1	+2.0
खाद्य पदार्थ	12.09	+8.6	+1.5	-1.5	+8.9	+3.3	+6.8	-12.3	+4.1	+18.6	+13.2	-1.5	+3.2	-4.9	+0.5
चाय**	5.12	+11.6	-3.0	+0.1	+8.9	-3.4	-2.6	+2.3	+4.7	-2.2	+6.3	+2.2	+5.3	+3.9	+9.3
वनस्पति	1.09	+0.4	+9.0	+3.8	-6.5	+19.7	-16.4	+9.6	+20.6	+1.6	+8.2	+13.2	+2.1	-22.6	-10.3
चीनी	3.58	+10.0	-1.8	-17.4	+13.8	+22.9	+4.1	-35.3	+0.6	+76.4	+10.9	-14.3	-6.5	+7.5	+10.8
सूती कपड़ा	9.39	+0.2	-2.1	-2.3	+5.3	-0.9	-7.1	-3.0	+6.8	-4.9	+1.3	-3.5	+4.6	-0.2	-2.5
दियासलाई	0.50	-2.9	-6.0	-5.9	+1.4	+6.1	+2.6	-5.7	+18.2	+0.4	-22.5	-2.4	-8.9	+2.1	+11.2
रेडियो रिसीवर	0.61	+21.6	+5.2	+21.8	+13.0	+23.4	+22.2	+19.5	+60.7	+26.8	+2.0	+10.1	-0.7	-14.4	+22.6
मोटर साइकिल और स्कूटर	0.11	+44.8	-5.1	+7.4	+36.5	+23.8	+8.8	+18.5	+21.2	+27.8	+21.1	+5.1	+4.4	+13.7	-0.2
बाइसिकिल	0.51	-0.1	+6.4	+4.4	+18.4	+11.6	+6.0	+3.8	+15.3	-1.0	+8.0	-9.5	+18.7	+13.1	+3.3
(ख) अन्तवर्ती वस्तुएं	35.94	+8.3	+11.0	+12.3	+6.3	+5.6	-0.1	+0.5	+6.6	+6.0	+2.3	+3.1	+6.7	+1.0	+0.7
सूती धागा	11.79	+8.4	+0.8	+3.6	+8.0	-1.1	-3.0	-0.5	+6.3	-0.7	+3.1	-7.3	+8.5	+2.2	+5.5
जूट से बनी वस्तुएं	3.97	-10.9	+24.4	+7.2	-3.0	+4.4	-16.5	+3.7	-7.4	-19.3	+9.4	+11.3	+2.2	-1.8	-19.5
टायर और ट्यूब	1.48	+14.2	+9.0	+14.1	+9.3	+11.8	+0.3	+6.5	+22.7	+12.0	+1.4	+14.2	+6.0	-0.5	+15.9
बुनियादी औद्योगिक रसायन	2.20	+13.6	+13.5	+9.0	+18.8	+8.4	+6.7	+8.5	+6.8	+11.3	+3.0	+5.9	+7.9	+10.5	-1.0
उर्वरक	0.46	+38.9	+20.8	+33.4	+7.9	+4.5	+10.1	+26.6	+28.4	+28.1	+11.3	+30.8	+16.2	+4.6	+3.4
पेट्रोलियम शोधनशाला के उत्पाद	1.34	+6.0	+8.1	+16.1	+10.2	+8.2	+23.4	+19.5	+10.9	+8.8	+5.8	+6.0	+0.1	+4.9	+14.4
बिजली के केबल और तार	0.68	+4.2	+26.0	+15.1	+13.7	+15.4	-1.2	+4.4	-6.9	+5.5	+10.0	+16.1	+18.1	-0.6	-24.6
सीमेन्ट	1.17	+5.1	+4.2	+8.9	+3.5	+9.1	+4.6	+2.2	+5.6	+14.1	+2.4	+7.0	+5.5	-4.7	-6.1
समक्षारीय (बेसिक) धातुएं	7.38	+18.7	+20.5	+20.0	+1.6	+3.7	+5.9	-4.0	+5.9	+9.8	-1.7	-0.7	+8.0	-4.0	-8.9
कागज और कागज से बनी वस्तुएं	1.61	+5.8	+3.4	+19.0	+5.5	+7.1	+8.7	+4.4	+10.7	+9.0	+7.6	+4.0	+0.2	+7.2	+4.8
(ग) पूंजीगत वस्तुएं	10.98	+17.3	+28.4	+10.3	+20.8	+18.4	-13.5	-5.3	-1.0	+3.6	+6.7	-4.5	+5.5	+9.0	-5.2
डीजल इंजन (गाड़ियों के)	0.10	-8.9	-19.5	+13.6	-8.9	+0.7	-29.5	-58.3	-19.1	+9.9	+32.0	-34.8	-47.7	+27.8	+5.2
डीजल इंजन (स्थिर)	0.14	+9.6	-3.6	+20.9	+10.3	+19.2	+20.7	+12.3	-1.6	+13.3	-38.7	-9.9	+4.7	+51.0	-9.9

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
औद्योगिक मशीनें .	0.93	+11.0	+15.0	+15.0	+7.2	−2.3	−4.8	−8.6	+18.1	+11.9	+6.8	−54.3	+38.2	+50.0	+25.0
बिजली के ट्रान्सफार्मर .	0.38	+40.1	+28.5	+13.9	+26.0	+30.3	+11.0	+9.3	−7.7	+4.3	+50.9	+15.5	+9.1	+23.2	−19.0
बिजली के मोटर .	0.27	+19.3	+19.0	+20.4	+10.6	+29.3	+17.1	+3.4	−7.3	+8.9	+37.5	−19.0	+10.6	+16·6	−0.7
रेल सड़क उपकरण† .	3.50	+26.3	+45.7	+10.1	+20.1	+5.8	+29.8	−21.5	−11.8	−6.6	−19.7	−26.4	+13.6	+11.5	−3.4
मोटर गाड़ियां .	2.51	+4.2	+4.8	−9.7	+27.4	+8.3	+0.1	−3.2	+13.4	−2.9	+8.7	+6.7	−1.4	+6.9	−2.4
III **बिजली उत्पादित** .	5.37	+16.3	+12.4	+15.5	+15.0	+10.0	+8.9	+11.0	+15.6	+12.9	+11.1	+7.2	+9.0	−1.8	+10.1
IV **सब उद्योग** . .	100.00	+9.2	+9.7	+8.3	+8.6	+9.2	−0.4	−0.4	+6.8	+7.5	+5.1	+1.0	+7.1	+0.7	+1.7

*अनन्तिम

**1964 तक के सूचक अंक चाय के कुल उत्पादन के आंकड़ों पर आधारित है जो दक्षिण भारत के युनाइटेड प्लांटर्स एसोसियेशन तथा इण्डियन टी एसोसियेशन ने दिये हैं और शेष सूचक अंक चाय बोर्ड द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों पर आधारित है ।

†रेल के माल डिब्बों के सम्बन्ध में 1964 तक के सूचक अंक केवल गैर-सरकारी क्षेत्र के उत्पादन के आंकड़ों पर आधारित है । उसके बाद सरकारी और गैर-सरकारी दोनों क्षेत्रों के उत्पादन के आंकड़े शामिल हैं ।

टिप्पणी :—उपभोक्ता वस्तुओं, अन्तवर्ती वस्तुओं और पूंजीगत वस्तुओं की प्रत्येक श्रेणी के सामने दिखाया गया भार उस श्रेणी के कुल भार के लगभग 90 प्रतिशत के बराबर है । उक्त तीनों श्रेणियों के अन्तर्गत बनाई जाने वाली वस्तुओं का कुल भार, निर्मित वस्तुओं के समूह के कुल भार के 90 प्रतिशत से अधिक है ।

1.13 : चुने हुए उद्योगों का उत्पादन

विवरण	इकाई	1960–61	1965–66	1966–67	1967–68	1968–69	1969–70	1970–71	1971–72	1972–73	1973–74*	1973-74* पहली तिमाही	दूसरी तिमाही	तीसरी तिमाही	चौथी तिमाही	1974-75* पहली तिमाही	दूसरी तिमाही
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
I खनन																	
1. कोयला (लिगनाइट सहित)	दस लाख मेट्रिक टन	55.7	70.3	70.9	72.0	75.4	80.0	74.3	74.0	79.3	81.2	20.2	19.7	19.6	21.7	20.8	21.3
2. कच्चा लोहा@ . .	दस लाख मेट्रिक टन	11.0	18.1	19.3	19.1	21.2	21.3	22.5	23.2	24.0	22.8	6.1	5.1	5.5	6.1	4.9	5.2
II धातु उद्योग																	
3. ढला लोहा . .	दस लाख मेट्रिक टन	4.31	7.09	7.00	6.89	7.29	7.39	6.99	6.80	7.27	7.00	1.77	1.78	1.71	1.74	1.61	1.84
4. इस्पात के ढले . .	दस लाख मेट्रिक टन	3.42	6.53	6.60	6.33	6.51	6.43	6.14	6.41	6.28	5.76	1.46	1.49	1.43	1.38	1.32	1.58
5. तैयार इस्पात . .	दस लाख मेट्रिक टन	2.39	4.51	4.49	4.05	4.70	4.80	4.48	4.79	5.02	4.53	1.06	1.13	1.13	1.21	1.01	1.26
6. इस्पात की ढली हुई वस्तुएं	हजार मेट्रिक टन	34	57	53	51	49	46	62	54	70	55	12	15	14	14	14	16
7. एल्यूमिनियम (प्राकृतिक धातु . . .	हजार मेट्रिक टन	18.3	62.1	72.9	100.4	125.3	135.1	166.8	181.5	173.7	147.9	34.5	35.8	41.7	35.9	26.2	27.8
8. ताम्बा (प्राकृतिक धातु)	हजार मेट्रिक टन	8.5	9.4	9.1	9.3	9.5	9.8	9.3	8.3	12.1	12.1	2.3	2.3	3.7	3.9	2.2	2.2
III. यांत्रिक इंजीनियरी उद्योग																	
9. मशीनी औजार . .	दस लाख रुपये	70	294	354	285	254	329	430	550	626	692	151	161	187	192	211	222
10. चीनी मिलों की मशीनें .	दस लाख रुपये	44	77	94	85	115	139	139	177	182	221	54	72	42	53	61	73
11. सूती कपड़ा बनाने की मशीनें	दस लाख रुपये	104	216	169	158	143	196	303	338	309	456	89	101	126	138	153	159
12. सीमेन्ट बनाने की मशीनें .	दस लाख रुपये	6	49	64	79	74	101	42	22	41	70	12	19	17	22	12	33
13. रेल के डिब्बे@@ .	हजार की संख्या में	11.9	33.5	21.2	17.6	16.5	14.9	11.1	8.5	10.8	12.2	2.7	3.0	3.3	3.2	2.5	2.7
14. मोटर गाड़ियां (कुल) .	हजार की संख्या में	55.0	70.7	75.1	69.5	79.5	79.8	87.9	91.3	89.4	99.4	24.9	22.4	25.4	26.7	21.4	21.1
(i) वाणिज्यिक गाड़ियां††	हजार की संख्या में	28.4	35.3	35.5	30.8	35.9	35.5	41.2	30.5	38.1	42.5	9.9	10.0	11.1	11.5	9.5	9.8
(ii) कारें, जीपें और लैण्ड रोवर . .	हजार की संख्या में	26.6	35.4	39.6	38.7	43.6	44.3	46.7	51.8	51.3	56.9	15.0	12.4	14.3	15.2	11.9	11.3
15. मोटर साइकिल और स्कूटर	हजार की संख्या में	19.4	40.7	47.8	56.9	70.8	91.0	97.0	112.7	116.7	124.0	30.2	33.5	30.4	29.9	34.1	35.1
16. शक्ति चालित पम्प .	हजार की संख्या में	109	244	311	288	317	359	259	208	278	331	84	87	91	69	49	60
17. डीजल इंजन (स्थिर) .	हजार की संख्या में	44.7	93.1	112.2	114.0	119.5	134.2	65.7	69.9	92.8	137.2	32.5	35.1	36.2	33.4	22.7	22.9
18. डीजल इंजन (मोटर गाड़ियों के) . .	हजार की संख्या में	10.8	8.1	6.7	2.3	2.5	2.8	3.2	1.5	2.2	2.6	0.4	0.7	0.7	0.8	0.6	0.9
19. बाइसिकिल . .	हजार की संख्या में	1071	1574	1719	1684	1954	1976	2042	1766	2400	2581	632	612	686	651	614	644
20. सिलाई की मशीनें .	हजार की संख्या में	303	430	400	370	420	340	235	312	334	258	28	36	99	95	77	

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
IV बिजली इंजीनियरी उद्योग																	
21. बिजली के ट्रान्सफार्मर	हजार किलोवाट एम्पियर	1413	4458	4949	5329	4729	5663	8086	8871	9712	11631	3292	3031	2802	2506	2282	1987
22. बिजली की मोटरें	हजार अश्व शक्ति	728	1753	2095	2028	1865	2283	2721	2348	2768	2908	701	728	691	788	765	753
23. बिजली के पंखे	हजार की संख्या में	1059	1358	1364	1376	1480	1551	1716	2067	2467	2230	499	535	579	617	624	587
24. बिजली की बत्तियां	दस लाख की संख्या में	43.5	72.1	83.3	73.9	97.8	98.8	119.3	120.6	143.6	133.2	37.6	30.8	33.2	31.6	32.7	39.6
25. रेडियो रिसीवर	हजार की संख्या में	282	606	761	929	1485	1746	1794	2004	1826	1776	419	392	477	498	513	523
26. बिजली के केबल																	
नियम के तार (कण्डक्टर)	हजार मेट्रिक टन	23.6	40.6	52.9	72.6	56.1	61.2	64.2	79.7	77.0	47.6	13.5	14.1	11.5	8.5	4.3	7.2
(ii) ताम्बे के खुले तार	हजार मेट्रिक टन	10.1	3.1	1.7	0.8	0.9	2.1	0.7	0.7	1.0	1.3	0.2	0.3	0.4	0.4	0.4	0.2
V रासायनिक और सम्बद्ध उद्योग																	
27. नाइट्रोजनी उर्वरक (एन०)	हजार मेट्रिक टन	98	233	308	367	543	716	830	952	1059	1060	200	291	275	294	274	236
28. फास्फेटी उर्वरक ($पी_2$ $ओ_5$)	हजार मेट्रिक टन	52	111	145	191	210	222	229	278	326	323	84	82	82	75	80	77
29. गंधक का तेजाब	हजार मेट्रिक टन	368	662	702	858	1034	1197	1053	975	1226	1326	320	339	345	322	294	356
30. सोडा ऐश	हजार मेट्रिक टन	152	331	348	371	408	427	449	489	483	488	110	114	133	131	111	127
31. कास्टिक सोडा	हजारमेट्रिक टन	101	218	233	278	314	354	371	385	391	424	95	110	112	107	95	105
32. कागज और गत्ता	हजार मेट्रिक टन	350	558	580	660	658	723	755	803	733	722	170	180	185	187	189	206
33. रबड़ के टायर और ट्यूब																	
(1) मोटरगाड़ियों के टायर	दस लाख की संख्या में	1.44	2.31	2.43	2.47	3.41	3.62	3.79	4.33	4.30	4.59	1.03	1.21	1.16	1.19	1.16	1.20
(2) मोटरगाड़ियों के ट्यूब	दस लाख की संख्या में	1.35	2.27	2.40	2.77	3.04	2.90	3.45	4.24	4.29	4.28	0.96	1.18	1.06	1.08	0.98	1.09
(3) बाइसिकिलों के टायर	दस लाख की संख्या में	11.15	18.46	20.34	22.79	24.58	21.32	19.20	22.36	20.86	23.08	4.79	5.70	5.76	6.83	6.11	6.28
(4) बाइसिकिलों के ट्यूब	दस लाख की संख्या में	13.27	18.62	20.75	18.63	17.73	16.79	13.81	14.35	13.81	15.50	2.84	3.85	3.96	4.85	4.58	4.6
34. सीमेन्ट	दस लाख मेट्रिक टन	8.0	10.8	11.1	11.5	12.2	13.8	14.4	15.0	15.5	14.7	3.3	3.9	4.1	3.4	3.2	3.6
35. उच्चतापसह वस्तुएं	हजार मेट्रिक टन	567	695	730	749	630	635	683	808	773	697	179	184	177	157	173	206
36. परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद	दस लाख मेट्रिक टन	5.8	9.4	11.9	13.8	15.4	16.6	17.1	18.6	17.9	19.7	4.5	5.0	5.3	4.9	5.3	4.4
VI वस्त्र उद्योग																	
37. जूट से बनी वस्तुएं	हजार मेट्रिक टन	1097	1302	1117	1150	998	944	958	1129	1074	949	252	255	269	173	240	263
38. सूती धागा	दस लाख किलोग्राम	801	907	902	926	972	962	929	902	972	1000	229	269	270	232	257	268
39. सूती कपड़ा (कुल)	दस लाख मीटर	6738	7440	7303	7511	7902	7753	7596	7547	7879	7946	1748	2184	2020	1994	2045	2165
(1) मिल क्षेत्र	दस लाख मीटर	4649	4401	4202	4258	4297	4192	4055	4039	4210	4083	1020	1079	1055	929	1104	1178
(2) विकेन्द्रीकृत क्षेत्र	दस लाख मीटर	2089	3039	3101	3253	3605	3561	3541	3508	3669	3863	728	1105	965	1065	941	987
40. रेयन का धागा††	हजार मेट्रिक टन	43.8	75.6	80.6	92.2	99.2	98.8	98.1	102.3	113.1	101.8	26.3	24.7	21.8	29.0	29.1	27.0
41. नकली रेशम का कपड़ा	दस लाख मीटर	544+	878	862	917	1011	863	947	968	918	846	223	231	201	191	211	उपलब्ध नहीं

VII. खाद्य उद्योग																	
42. चीनी ** . .	हज़ार मेट्रिक टन	3029	3510	2147	2249	3558	4261	3740	3110	3875	3967	473	90	982	2216	679	89
43. चाय . .	दस लाख किलोग्राम	322	376	369	387	398	401	421	430	446	467	127	194	128	18	142	195
44. काफी . .	हज़ार मेट्रिक टन	54.1	62.1	71.0	72.6	66.6	64.6	72.7	95.6	71.8	87.0	29.5	16.4	11.8	29.3	31.0	14.2
45. वनास्पती . .	हज़ार मेट्रिक टन	340	401	366	423	466	477	558	594	580	449	101	103	125	120	93	58
VIII. बिजली (उत्पादित)***	अरब कि० वा० घं०	16.9	33.0	36.4	41.2	47.4	52.0	55.8	60.7	63.6	64.6	14.9	15.9	16.8	17.0	16.4	17.4

*अनन्तिम

@इसमें गोआ में होने वाला उत्पादन शामिल नहीं है; यह 1973-74 के दौरान 118 लाख टन था ।

@@इस उत्पादन में रेल कर्मशालाओं का उत्पादन शामिल है ।

†इसमें कताई, बुनाई और संसाधन मशीनें शामिल हैं ।

††इसमें बसें, ट्रक तथा 3 और 4 पहियों वाले टेम्पो शामिल हैं ।

†††इसमें विस्कोस धागा, एसीटेट धागा और स्टेपल रेशे शामिल हैं ।

+इसका सम्बन्ध कैलेण्डर वर्ष से है ।

**वार्षिक आंकड़े चीनी उत्पादन के मौसम के हैं जो 1967-68 के मौसम से अक्तूबर से सितम्बर तक है । इससे पूर्व यह नवम्बर से अक्तूबर तक था ।

***इसका सम्बन्ध केवल सरकारी उपयोग से है ।

2. बजट संबन्धी लेन-देन

2.1 : केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों और संघ क्षेत्रों के बजट संबन्धी लेन देन

(करोड़ रुपयों में)

	1971-72	1972-73	1973-74 (संशोधित अनुमान)	1974-75 (बजट अनुमान)
1	2	3	4	5
I. कुल परिव्यय	10068	11256	12398	14196
क. विकास (क)	5710(ख)	6695(ख)	6825	8579
ख. विकास से भिन्न	4358	4561	5573	5617
1. रक्षा (निवल)	1525	1655	1753	1915
2. सरकारी ऋण पर ब्याज	832	867	1079	1170
3. कर-संग्रह व्यय	205	223	269	291
4. पुलिस	389	424	469	520
5. अन्य (ग)	1407(घ)	1392(घ)	2003(घ)	1721
II. चालू राजस्व	7009	8075	8913	10607
क. कर राजस्व	5575	6441	7261	8013
1. आय कर और निगम कर	1009	1188	1300	1370
2. सीमा शुल्क	696	857	974	934
3. केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क	2061	2324	2634	3044
4. बिक्री-कर	860	989	1135	1303
5. अन्य	949	1083	1218	1362
ख. कर-भिन्न राजस्व (छ)	1434(ङ)	1634(ङ)	1652(ङ)	2594(च)
(जिसमें आयोजना के लिए सरकारी उपक्रमों का अंशदान/कुल अधिशेष)	(303)	(296)	(179)	(1007)
III. अन्तर (1–2)	3059	3181	3485	3589
जो नीचे लिखे अनुसार पूरा किया गया				
IV. पूंजीगत प्राप्तियां (निवल) (क+ख+ग)	2321	2329	2695	3448
क. आन्तरिक (निवल)	1810	2029	2186	2561
1. बाजार ऋण (निवल) (छ)	488	737	772	788
2. अल्प बचतें, इनामी बांड, प्रीमियम इनामी बांड तथा स्वर्ण बांड (निवल)	223	372	350	360
3. राज्य भविष्य निधियां तथा अनिवार्य जमा/आयकर वार्षिकी जमा (निवल)	178	180	215	206
4. विविध पूंजीगत प्राप्तियां	921(ज)	740(ज)	849	1207
ख. विदेशी (निवल)	378	286	509	887
1. ऋण (निवल) (पी० एल० 480 को छोड़कर)	249	283	470	552
(1) सकल ऋण	437	494	712	849
(2) घटाइये वापसी अदायगियां	188	211	242	297
2. अनुदान (पी० एल० 480 को छोड़कर)	44	9	16	26
3. पी० एल० 480 सहायता	85	(–) 6	(–) 2382	12
(i) पी०एल० 480 ऋण (निवल)	98	10	(–) 1764	—
(क) डालर ऋण	103	5	—	—
(ख) रुपया ऋण	(–) 5	5	(–) 1764	—
(ii) संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार की प्रतिरूप निधियों की जमा राशियों का निवेश (निवल)	(–) 21	(–) 18	(–) 624	—
(iii) पी० एल० 480 अनुदान	8	2	6	12
4. भारत-संयुक्त राज्य करार के अन्तर्गत लेखे	—	—	741	(–) 43
5. विविध विदेशी पूंजीगत प्राप्तियां	—	—	—	340
6. पी० एल० 480 और अन्य निधियों के संबंध में किये गये करार के अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका से अनुदान	—	—	1664	—
ग. बंगला देश से आये शरणार्थियों के लिए विदेशी सहायता	133	14	—	—
V. बजट संबंधी कुल घाटा (झ)	738	852	790	141

(क) इसमें रेलों, डाक-तार तथा गैर-विभागीय उपक्रमों का वह आयोजानगत व्यय शामिल है जिसकी व्यवस्था उन्होंने अपने ही साधनों से की है तथा इसके अलावा केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा स्थानीय निकायों तथा गैर-विभागीय उपक्रमों (बिजली बोर्डों सहित) तथा अन्य पक्षों को दिये गये ऋण से किया गया विकास व्यय भी शामिल है। 1974-75 से पहले, सरकारी उद्यमों के अंशदान का हिसाब उनके कुल अधिशेष (अर्थात् मूल्यह्रास की व्यवस्था और रखे गये लाभों) में से (*i*) चालू प्रतिस्थापन व्यय, (*ii*) इनवेंट्रीज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये उपयोग किये गये उनके साधनों तथा (*iii*) ऋणों की वापसी अदायगी को घटाने के बाद, लगाया गया था। लेकिन 1974-75 से इस तरह से उपर्युक्त रकमों को घटाया नहीं गया है क्योंकि पांचवीं पंचवर्षीय आयोजना के मसौदे में कुल पूंजी के आधार पर पूंजी निर्माण करने का तरीका अपनाया गया है ।

(ख) इसमें गैर-विभागीय वाणिज्यिक उपक्रमों को 1971-72 में दी गई 212 करोड़ रुपये की और 1972-73 की 48 करोड़ रुपये की सांकेतिक ऋण की रकम शामिल है, जिसे सामान्य शेयर पूंजी में परिवर्तित कर दिया गया था।

(ग) इसमें, सामान्य प्रशासन, पेंशन तथा भूतपूर्व नरेशों को की जाने वाली कृपापूर्ण अदायगियां, अकाल सहायता, अन्न सम्बन्धी राज-सहायता, बंगला देश सहित विदेशों को दिये गये अनुदान तथा ऋण और अन्य पार्टियों को (विकास-भिन्न प्रयोजनों के लिये) दिये गये ऋण शामिल हैं।

(घ) इसमें (1) 1971-72 में बंगला देश से आये शरणार्थियों पर होने वाले राहत व्यय के 295 करोड़ रुपये तथा (2) आकस्मिकता निधि के लेनदेनों के 1971-72 में 67 करोड़ रुपये, 1972-73 में (—) 34 करोड़ रुपये और 1973-74 (संशोधित अनुमान) के 2 करोड़ रुपये शामिल हैं ।

(ङ) इसमें आयोजना के लिय रेल, डाक और तार विभाग तथा अन्य गैर-विभागीय वाणिज्यिक उपक्रमों का अंशदान शामिल है ।

(च) इसमें आयोजना के लिये रेल, डाक और तार विभाग तथा अन्य गैर विभागीय वाणिज्यिक उपक्रमों के कुल अधिशेष शामिल हैं ।

(छ) इसमें बिजली बोर्डों द्वारा लिय गये ऋण शामिल हैं ।

(ज) इसमें (1) सरकारी उपक्रमों द्वारा 1971-72 में चुकाय गये ऋणों की 212 करोड़ रुपये की और 1972-73 में चुकाये गये ऋणों की 48 करोड़ रुपये की सांकेतिक राशि तथा (2) आकस्मिकता निधि के लेनदेन के संबंध में 1971-72 की 67 करोड़ रुपये की और 1972-73 की (—) 34 करोड़ रुपये की, 1973-74 (संशोधित अनुमान) की 2 करोड़ रुपये की राशि शामिल है ।

(झ) इसमें उपहार के रूप में प्राप्त विशेष अन्न शामिल है ।

(ञ) बजट संबंधी कुल घाटे से रिजर्व बैंक के पास पड़ी राजकोष हुंडियों में हुए परिवर्तन, रिजर्व बैंक द्वारा राज्य सरकारों को दिय गय अर्थोपाय अग्रिमों में हुई वृद्धि और केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों के रोकड़ शेष में होने वाले परिवर्तनों का पता चलता है । 1973-74 के लिये 543 करोड़ रुपये के वास्तविक घाटे का अनुमान लगाया गया है ।

टिप्पणी:—इस सारणी में दिये गय आंकड़े मूल बजटों के आधार पर हैं और इसमें पूरक बजटों तथा अनुदानों की पूरक मांगों में दिये गये राजस्व तथा व्यय के अनुमानों को शामिल नहीं किया गया है ।

2.2 : केन्द्रीय सरकार का कुल व्यय

(करोड़ रुपये)

	जोड़-पहली आयोजना	जोड़-दूसरी आयोजना	जोड़-तीसरी आयोजना	1950-51	1955-56	1960-61	1965-66
1	2	3	4	5	6	7	8
1. अंतिम परिव्यय	1853.6	3406.0	6701.1	314.8	421.8	740.4	1629.5
(क) सरकारी खपत व्यय . . .	1241.3	1961.5	4256.0	234.7	269.1	433.0	1109.1
(ख) सकल पूंजी निर्माण . . .	612.3	1444.5	2445.1	80.1	152.7	307.4	520.4
2. शेष अर्थ व्यवस्था को अन्तरण अदायगियां . .	931.9	1816.4	3483.8	116.9	251.3	495.2	885.7
(क) चालू अन्तरण	809.2	1567.1	2982.9	110.9	202.8	426.5	753.8
(ख) पूंजी अन्तरण	122.7	249.3	500.9	6.0	48.5	68.7	131.9
3. शेष अर्थ-व्यवस्था में वित्तीय निवेश तथा ऋण (सकल)	965.7	2600.2	5075.9	72.0	301.4	570.0	1425.4*
4. कुल व्यय	3751.2	7822.6	15260.8	503.7	974.5	1805.6	3940.6*

*इसमें 1965-66 के लिए 53 करोड़ रुपये की रकम शामिल नहीं हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय यह भारत सरकार की अपरक्राम्य सिक्यूरिटियां जारी करके पूरा किया जाता है ।

†इसमें 33 करोड़ रुपये की वह ऋण-राशि शामिल नहीं है जिसे राज्यों के बाजार ऋणों का परिशोधन करने के लिए अनुदानों में परिवर्तित कर दिया

††इसमें खादी और ग्रामोद्योग कमीशन को वर्ष 1968-69 में दिया गया 4 करोड़ रुपयों का सांकेतिक ऋण शामिल नहीं हैं जो पिछले ऋण के आधार पर दुबारा

**इसमें राष्ट्रीयकृत बैंकों को क्षतिपूर्ति के रूप में अदा की गयी अनुमानतः 83.7 करोड़ रुपये की रकम और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा अन्तर्राष्ट्रीय जो अनुमानतः 113.6 करोड़ रुपये है ।

@इसमें राज्यों को रिजर्व बैंक आफ इंडिया से लिये गये ओवर ड्राफ्ट को चुकाने के लिए दी गयी केन्द्र की सहायता के रूप में 421 करोड़ रुपये

(करोड़ रुपये)

1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74 संशोधित अनुमान	1974-75 बजट अनुमान
9	10	11	12	13	14	15
1661.5	1870.0	2188.7	2651.9	2939.2	3098.8	3601.6
1385.6	1476.9	1669.4	2054.5	2262.1	2331.4	2733.7
275.9	393.1	519.3	597.4	677.1	767.4	867.9
1176.1	1354.7	1432.4	2006.5	2280.1	2467.3	2544.9
1048.0†	1163.0	1239.1	1722.7	1851.5	2099.3	2204.5
128.1	191.7	193.3	283.8	428.6	368 0	340.4
1688.2††	1700.0	1758.2**	2051.2	2630.0@	2735.3	2507.3
4525.8	4924.7	5379.3**	6709.6	7849.3	8301.4	8653.8

विकास संघ तथा एशियाई विकास बैंक को रुपये के सममूल्य में हुए परिवर्तन के कारण अतिरिक्त अदा की गयी। यह परिव्यय नाममात्र का है क्योंकि

गया ।

दिया गया ।

पुर्ननिर्माण और विकास बैंक को अपरक्राम्य तथा ब्याज रहित सिक्यूरिटियों के रूप में दिये गये अतिरिक्त अंशदान की रकम शामिल नहीं है ।

का सांकेतिक अन्तरण शामिल नहीं है ।

2.3 केन्द्रीय सरकार के बजट सम्बन्धी साधनों में से सकल पूंजी निर्माण

(करोड़ रुपये)

	जोड़-पहली आयोजना	जोड़-दूसरी आयोजना	जोड़-तीसरी आयोजना	1950-51	1955-56	1960-61	1965-66
1	2	3	4	5	6	7	8
क. केन्द्रीय सरकार द्वारा सकल पूंजी निर्माण	612.3	1444.5	2445.1	80.1	152.7	307.4	520.4
(क) अचल परिसंपत्तियां	593.9	1362.3	2355.4	79.5	177.4	302.0	549.1
(ख) निर्माण कार्य संबन्धी सामान	9.8	8.3	99.5	9.9	5.1	(—)38.4	1.2
(ग) अन्न के स्टाक में वृद्धि	8.6	73.9	(—)9.8	(—)9.3	(—)29.8	43.8	(—)29.9
ख. पूंजी निर्माण के लिए सकल वित्तीय सहायता	992.7	2460.3	4706.6	48.7	330.6	554.6	1285.0
(क) राज्य सरकारों को	815.7	1373.2	2837.4	41.1	275.2	319.3	739.4
(ख) गैर-विभागीय वाणिज्यिक उपक्रमों को†	81.1	932.4	1658.8	5.2	22.0	210.7	492.6
(ग) अन्य को††	95.9	154.7	210.4	2.4	33.4	24.6	53.0
ग. केन्द्रीय सरकार के बजट संबन्धी साधनों में से सकल पूंजी निर्माण (क+ख)	1605.0	3904.8	7151.7	128.8	483.3	862.0	1805.4

†स्वायत्त निगमों और कम्पनियों द्वारा चलाये गये सरकारी उपक्रम

††इसमें स्थानीय प्राधिकरणों को पूंजी निर्माण के लिए दिये गये ऋण और अनुदान शामिल हैं।

*इसमें खाद्य निगम को अन्तरित 58 करोड़ रुपयों का अन्न शामिल नहीं है।

**इसमें भारतीय खाद्य निगम को अन्न का स्टाक रखने के लिए दिये गये 190 करोड़ रुपये के ऋणों की रकम शामिल नहीं है।

†††इसमें राष्ट्रीयकृत बैंकों को मुआवजे के रूप में दी गयी 83.7 करोड़ रुपये की रकम शामिल नहीं है।

(करोड़ रुपये)

1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74 (संशोधित अनुमान)	1974-75 (बजट अनुमान)
9	10	11	12	13	14	15
275.9 (333.9)*	392.6	519.3	597.4	677.1	767.4	867.9
448.7	430.3	485.0	566.1	664.8	748.5	865.3
(—) 10.1	(—) 27.5	8.3	55.4	59.1	(—) 13.2	2.4
(—) 162.7 (—) 104.7*	(—) 10.2	26.0	(—) 24.1	(—) 46.8	32.1	0.2
1383.7 (1193.7)**	1219.5	1285.5†††	1604.5	1950.4	1966.4	2225.9
708.6	692.2	740.2	884.8	1062.3	1211.9	1091.3
623.0 (433.9)**	444.2	447.0†††	545.1	731.4	633.1	995.8
52.1	83.1	98.3	174.6	156.7	121.4	138.8
1659.6 (1527.6)	1612.1	1804.8†††	2201.9	2627.5	2733.8	3093.8

2.4 विकास शीर्षों के अनुसार केन्द्र, राज्यों तथा संघ क्षेत्रों का आयोजनागत परिव्यय

(करोड़ रुपये)

क्रम संख्या	विकास शीर्ष	तीसरी आयोजना (वास्तविक)	वार्षिक आयोजनाएं 1966-67 1967-68 और 1968-69 (वास्तविक)	चौथी पंच-वर्षीय आयोजना: मूल परिव्यय 1969-74	1969-70 (वास्तविक)	1970-71 (वास्तविक)	1971-72 (वास्तविक)	1972-73 (प्रत्याशित व्यय)	1973-74 (प्रत्याशित व्यय)	चौथी आयोजना 1969-74 (प्रत्याशित व्यय)	पांचवीं पंच-वर्षीय आयोजना: पांचवीं आयोजना परिव्यय (1974-79)	1974-75 (परिव्यय)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
1.	कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्र	1088.9	1107.1*	2728.2*	332.7*	374.4*	478.0*	579.8*	588.6*	2353.5*	4730.0	638.4
2.	सिंचाई तथा बाढ़ नियंत्रण	664.7	471.0	1086.6	193.3	209.7	247.8	311.6	309.8	1272.2	2681.0	385.3
3.	पावर	1252.3	1212.5	2447.6	469.7	514.3	605.7	645.9	676.2	2911.8	6190.0	766.6
4.	ग्राम तथा लघु उद्योग	240.8	126.1	293.1	40.3	43.0	48.4	58.8	54.2	244.7	8964.0	68.8
5.	उद्योग तथा खनिज	1726.3	1510.4	3337.7	444.8	465.1	590.7	631.3	741.7	2873.6		1093.3
6.	परिवहन तथा संचार	2111.7	1222.4	3237.3	410.8	507.5	636.2	744.3	763.2	3062.0	7115.0	1026.6
7.	शिक्षा	588.7	306.8	822.6	86.5	115.3	158.0	197.4	225.0	782.2	1726.0	184.8
8.	वैज्ञानिक अनुसंधान	71.6	47.1	140.3	13.5	17.9	24.3	34.8	40.2	130.7	419.0†	60.7†
9.	स्वास्थ्य	225.9	140.2	433.5	40.3	51.4	65.9	84.3	94.8	336.7	796.0	82.5
10.	परिवार नियोजन	24.9	70.4	315.0	36.9	48.3	59.2	79.7	53.8	277.9	516.0	54.1
11.	जलपूर्ति तथा सफाई	105.7	102.7	407.3	50.7	66.1	86.5	130.0	140.5	473.8	1022.0	118.4
12.	आवासन, शहरी तथा क्षेत्रीय विकास	127.6	73.3	237.0	32.4	42.7	52.5	56.7	62.6	246.9	1143.0	110.3
13.	पिछड़े वर्गों का कल्याण	99.1	73.6	142.4	21.4	25.3	32.0	39.6	49.2	167.5	726.0**	65.5**
14.	समाज कल्याण	19.4	11.2	41.4	3.7	5.1	6.0	25.4	24.4	64.6	229.0	21.0
15.	श्रमिक कल्याण तथा शिल्पियों को प्रशिक्षण	55.8	34.8	39.9	3.8	4.6	4.7	10.8	10.7	34.6	57.0	6.8
16.	अन्य कार्यक्रम	173.1	115.8	192.3	29.1	32.8	34.4	44.0	53.4	193.7	1068.0@	160.6@
17.	विशेष योजनाएं :											
(1)	विशेष कल्याण कार्यक्रम	..	..	..	..	..	..	60.5	63.1	123.6	—	—
(2)	शिक्षित बेरोजगारों के लिए फ़ौरी योजनाएं	..	..	..	..	..	..	—	54.0	54.0	—	--
(3)	पांचवीं आयोजना के लिए अग्रिम कार्रवाई	..	..	..	..	..	..	—	120.0	120.0	—	—
18.	जोड़	8576.5	6625.4	15902.2	2209.9	2523.5	3130.3	3734.9	4125.4	15724.0	37250.0††	4843.7

*इसमें अनाज का भंडार रखने के लिए खर्च शामिल है—1968-69 के लिए 140 करोड़ रुपये, 1969-70 के लिए 25 करोड़ रुपये, 1971-72 के लिए 50 करोड़ रुपये, 1972-73 के लिए 25 करोड़ रुपये तथा 1973-74 के लिए 24 करोड़ रुपये। इस प्रकार चौथी आयोजना में अनाज के भंडार के लिए अनुमानित खर्च 124 करोड़ रुपये बैठता है जब कि इसके लिए मूलतः 255 करोड़ रुपये रखे गये थे।

**इसमें पहाड़ी और आदिम जाति क्षेत्रों के लिए व्यवस्था शामिल है।

@इसमें पोषाहार के लिए रकम शामिल है।

† विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध

†† क्षेत्रीय परिव्यय की कुल रकम 37382 करोड़ रूपये हैं। कुल रकम को 37250 करोड़ रुपये तक रखने के लिए 132 करोड़ रुपये की कटौती की जायेगी या इतनी रकम के लिए अतिरिक्त साधन ढूंढने होंगे।

2.5 : विकास शीर्षों के अनुसार केन्द्र, राज्यों और संघ क्षेत्रों का आयोजनागत परिव्यय–प्रतिशत विभाजन

विकास शीर्ष	तीसरी आयोजना (वास्तविक)	वार्षिक आयोजनाएं 1966-67, 1967-68 और 1968-69 (वास्तविक)	चौथी आयोजना मूल परिव्यय 1969–74	चौथी पंचवर्षीय आयोजना						पांचवीं पंचवर्षीय आयोजना	
				1969-70 (वास्तविक)	1970-71 (वास्तविक)	1971-72 (वास्तविक)	1972-73 (अनुमानित व्यय)	1973-74 (अनुमानित व्यय)	जोड़ चौथी आयोजना 1969–74 (अनुमानित)	पांचवीं आयोजना का परिव्यय 1974–79	1974-75 (परिव्यय)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1. कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्र	12.7	16.7	17.2	15.1	14.9	15.3	15.5	14.3	15.0	12.6	13.2
2. सिंचाई तथा बाढ़ नियंत्रण	7.8	7.1	6.8	8.7	8.3	7.9	8.3	7.5	8.1	7.2	8.0
3. बिजली	14.6	18.3	15.4	21.3	20.4	19.3	17.3	16.4	18.5	16.6	15.8
4. ग्राम तथा लघु उद्योग	2.8	1.9	1.8	1.8	1.7	1.5	1.6	1.3	1.6	24.0	1.4
5. उद्योग तथा खनिज	20.1	22.8	21.0	20.1	18.4	18.9	16.9	18.0	18.3		22.6
6. परिवहन तथा संचार	24.6	18.5	20.3	18.6	20.1	20.3	19.9	18.5	19.5	19.0	21.2
7. शिक्षा	6.9	4.6	5.2	3.9	4.6	5.0	5.3	5.4	5.0	4.6	3.8
8. वैज्ञानिक अनुसंधान	0.8	0.7	0.9	0.6	0.7	0.8	0.9	1.0	0.8	1.1	1.3
9. स्वास्थ्य	2.6	2.1	2.7	1.8	2.0	2.1	2.3	2.3	2.1	2.1	1.7
10. परिवार नियोजन	0.3	1.1	2.0	1.7	1.9	1.9	2.1	1.3	1.7	1.4	1.1
11. जल पूर्ति तथा सफाई	1.2	1.6	2.6	2.3	2.6	2.8	3.5	3.4	3.0	2.7	2.4
12. आवासन, शहरी तथा क्षेत्रीय विकास	1.5	1.1	1.5	1.5	1.7	1.7	1.5	1.5	1.6	3.1	2.3
13. पिछड़े वर्गों का कल्याण	1.2	1.1	0.9	0.9	1.0	1.0	1.1	1.2	1.1	1.9	1.4
14. समाज कल्याण	0.2	0.2	0.3	0.2	0.2	0.2	0.7	0.6	0.4	0.6	0.4
15. श्रमिक कल्याण तथा शिल्पियों का प्रशिक्षण	0.7	0.5	0.2	0.2	0.2	0.2	0.2	0.3	0.2	0.2	0.1
16. अन्य कार्यक्रम	2.0	1.7	1.2	1.3	1.3	1.1	2.8*	7.0**	3.1	2.9	3.3
जोड़	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

*इसमें विशेष कल्याण योजनाएं शामिल हैं।

**इसमें विशेष कल्याण योजनाओं के अलावा, शिक्षित बेरोजगारों के लिए फ़ौरी योजना और पांचवीं आयोजना के सम्बन्ध में अग्रिम कार्रवाई भी शामिल है। इन योजनाओं के आयोजना परिव्यय के लिए कृपया सारणी 2.4 देखिये।

3.1 : सरकारी क्षेत्र में रोजगार

(आंकड़े लाख में)

	मार्च 1961	मार्च 1966	मार्च 1967	मार्च 1968	मार्च 1969	मार्च 1970**	मार्च 1971**	मार्च 1972**	मार्च 1973 $ (संशोधित)	मार्च 1974 £
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
क–सरकारी क्षेत्र के वर्गों के अनुसार :										
1. केन्द्रीय सरकार .	20.90	26.36	26.88	27.15	27.13	27.25	27.71	28.54	29.18	29.42
2. राज्य सरकार .	30.14	37.23	37.67	38.03	39.01	39.97	41.52	43.57	45.79	46.86
3. अर्द्ध सरकारी .	7.73	13.18	14.02	14.84	16.55†	17.94	19.29	21.75	25.78	29 30
4. स्थानीय निकाय .	11.73	17.01	17.78	18.00	18.25	18.58	18.78	19.19	19.00	19.30
जोड़ . .	70.50	93.78	96.34	98.02	100.95†	103.74	107.31	113.05@	119.75	124.87
ख–औद्योगिक वर्गीकरण के अनुसार संक्षिप्त ब्यौरा :										
ग. बागान, वनपालन आदि	1.80	2.26	2.32	2.46	2.61	2.64	2.76	2.89	3.05	3.24
1. खानों और पत्थर की खानों की खुदाई .	1.29	1.60	1.76	1.74	1.74	1.77	1.82	2.55†	4.36	6.14
2. और 3. वस्तु निर्माण :	3.69	6.70	6.95	7.31	7.57	7.82	8.06	8.85	9.62	10.27
4. निर्माण . .	6.03	7.66	7.63	7.56	7.88	7.97	8.80	9.22	10.17	9.96
5. बिजली, गैस, जल आदि	2.24	3.03	3.37	3.46	3.69	4.02	4.35	4.63	4.94	5.34
6. व्यापार और वाणिज्य	0.94	1.55	1.66	1.77	2.64†	2.88	3.28	3.78	4.16	4.45
7. परिवहन और संचार .	17.24	20.94	21.15	21.37	21.60	21.88	22.16	22.56	23.03	23.37
8. सेवाएं . .	37.27	50.04	51.50	52.36	53.21	54.75	56.07	56.57	60.41	62.09
जोड़ . .	70.50	93.78	96.34	98.02	100.95†	103.74	107.31	113.05	119.75	124.87

£अनन्तिम,

†ये आंकड़े 14 राष्ट्रीयकृत बैंकों के रोजगार संबंधी आंकड़ों को गैर-सरकारी क्षेत्र से सरकारी क्षेत्र में अन्तरित किये जाने के बाद के हैं ।

*सरकारी क्षेत्र में रोजगार में अकस्मात वृद्धि मुख्यतः सरकार द्वारा कोकिंग कोयला खानें हाथ में लिये जाने तथा तत्पश्चात् रोजगार संबंधी आंकड़ों को गैर-सरकारी क्षेत्र से सरकारी क्षेत्र को अन्तरित किये जाने के कारण हुई थी ।

**संघ क्षेत्र गोआ, दमन और दीव के संबंध में मार्च 1970 और उसके बाद के रोजगार संबंधी आंकड़े शामिल हैं ।

@विवरणियां न प्राप्त होने के कारण मणिपुर से संबंधित आंकड़ों को दुहराया गया है और मिजोराम से संबंधित आंकड़ों को हिसाब में नहीं लिया गया है ।

$मार्च 1972 से इन आंकड़ों में जम्मू और काश्मीर राज्य के आंकड़े शामिल हैं ।

टिप्पणी––पूर्णांकन के कारण यह आवश्यक नहीं है कि इन आंकड़ों का जोड़ दिये गये जोड़ से मेल खाये ।

गैर-सरकारी क्षेत्र में रोजगार

(आंकड़े लाख में)

उद्योग प्रभाग संक्षिप्त ब्यौरा	मार्च 1961	मार्च 1966	मार्च 1967	मार्च 1968	मार्च 1969	मार्च 1970**	मार्च 1971**	मार्च 1972** (स)$	मार्च 1973** (स)†	मार्च 1974†
1 2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
0. बागान और वनपालन आदि@@ .	6.7	9.0	8.7	8.5	8.1	8.2	8.0	8.1	8.1	8.0
1. खानों और पत्थर की खानों की खुदाई .	5.5	5.1	4.8	4.3	4.2	4.3	4.1	3.5††	2.5	1.4
2. और 3. वस्तु निर्माण	30.2	38.0	37.5	37.1	37.8	39.0	39.7	39.8	41.0	41.7
4. इमारतों आदि का निर्माण* . .	2.4	2.5	2.3	1.5	1.5	1.5	1.4	1.6	1.8	1.2
5. बिजली, गैस और जल आदि . .	0.4	0.4	0.4	0.5	0.4	0.4	0.5	0.5	0.5	0.4
6. व्यापार और वाणिज्य	1.6	3.3	3.5	3.5	2.9£	2.9	3.0	3.0	3.1	3.1
7. परिवहन और संचार	0.8	1.2	1.2	1.0	1.1	1.0	1.0	0.8	0.8	0.8
8. सेवाएं . .	2.8	8.0	8.5	8.8	9.2	9.6	10.0	10.4	10.8	11.1
जोड़ . .	50.4	68.1	66.8	65.2	65.3£	67.0	67.6	67.7@	68.5	67.7

स : संशोधित। †अनन्तिम।

@@इसमें अधिकतर बागान शामिल हैं लेकिन काफी के बागान शामिल नहीं हैं जिनका क्षेत्र काफी बड़ा नहीं है।

*निर्माण कार्यों, खास तौर पर गैर-सरकारी निर्माण कार्य के संबंध में जानकारी अपर्याप्त है।

**इसमें मार्च, 1970 के बाद के गोआ, दमन और दीव संघ क्षेत्र के संबंध में रोजगार संबंधी आंकड़े शामिल हैं।

††गैर-सरकारी क्षेत्र में रोजगार के आंकड़ों में अचानक कमी का मख्य कारण सरकार द्वारा कोकिंग कोयले की खानों को अपने अधिकार में लिये जाने और उसके परिणामस्वरूप रोजगार संबंधी आंकड़ों को गैर-सरकारी क्षेत्र से सरकारी क्षेत्र में अन्तरित किये जाने के कारण हुई।

£ये आंकड़े 14 राष्ट्रीयकृत बैंकों के रोजगार संबंधी आंकड़ों को गैर-सरकारी क्षेत्र से सरकारी क्षेत्र में अन्तरित किये जाने के बाद के हैं।

@विवरणियां प्राप्त न होने के कारण मणिपुर से संबंधित आंकड़े दोहराये गये हैं और मिजोरम के लिये आंकड़ों को हिसाब में नहीं लिया गया है।

$मार्च 1972 से इन आंकड़ों में जम्मू और कश्मीर राज्य के आंकड़े शामिल हैं।

टिप्पणी : (1) मार्च, 1961 से आंकड़ों का संबंध गैर-सरकारी क्षेत्र के कृषि से भिन्न प्रतिष्ठानों से है जिनमें 25 अथवा उससे अधिक मजदूर काम करते हों। मार्च 1966 से इन आंकड़ों का क्षेत्र व्यापक बना दिया गया है ताकि इनमें उन प्रतिष्ठानों को भी शामिल कर लिया जाये जिनमें ऐच्छिक आधार पर काम करने वाले 10 से 24 तक मजदूर भी मजदूरी करते हों।

(2) पूर्णांकन के कारण यह आवश्यक नहीं है कि इन आंकड़ों का जोड़ दिये गये जोड़ से मेल खाये।

4.1 . मुद्रा में घट-बढ़ का विश्लेषण

(करोड़ रुपये)

	निम्नलिखित अवधि में घट-बढ़								
	31 मार्च, 1969 को बकाया	31 मार्च, 1969 से 31 मार्च, 1970	31 मार्च, 1970 से 31 मार्च, 1971	31 मार्च, 1971 से 31 मार्च, 1972	31 मार्च, 1972 से 31 मार्च, 1973	31 मार्च, 1973 से 31 मार्च, 1974 (क)	31 मार्च 1973 से 18 जनवरी 1974 (क)	31 मार्च 1974 से 17 जनवरी 1975 (क)	17 जनवरी, 1975 को बकाया (क)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
क. जनता के पास उपलब्ध मुद्रा (1+2) . .	5838	632	723	945	1291	1446	887	468	11343
1. करेंसी	3685	336	367	434	640	885	518	—34	6313
2. जमा रकम (ख)	2153	295	357	510	651	560	369	502	5030
ख. मुद्रा उपलब्धि में घट-बढ़ के कारण (1+2+3+4−5) .	4647	108	515	1147ग	1307	953	1030	1064	9741
1. बैंकों द्वारा सरकार को दिया गया निवल ऋण क+ख .									
(क) रिजर्व बैंक द्वारा सरकार को दिया गया निवल ऋण (i) + (ii) .	3504	13	331	846ग	783	762	821	627	6866
(i) केन्द्रीय सरकार को	3297	81	107	589	1281	664	754	617	6635
(ii) राज्य सरकारों को	207	—68	224	257	—497च	98	67	10	231
(ख) बैंकों के पास सरकारी सिक्यूरिटियां . . .	1143	96	183	301	523	191	210	438	2875
2. बैंकों द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्र को दिया गया ऋण (क)+(ख)	4112	747	869	795	1153	1685	1362	915	10276
(क) रिजर्व बैंक द्वारा दिया गया ऋण .	74	7	51	100	34	294	155	45	605
(ख) बैंकों द्वारा दिये गये ऋण . (बैंकों द्वारा दिये गये अग्रिम तथा उनके पास गैर सरकारी सिक्यूरिटियां)	4038	740	818	695	1119	1391	1207	870	9671
3. बैंकिंग क्षेत्र की विदेशी मुद्रा संबंधी निवल परिसम्पत्ति (क)+(ख)	320	256	—36	68ग	—26	91	—63	—355	318
(क) भारतीय रिजर्व बैंक की विदेशी मुद्रा संबंधी निवल परिसम्पत्ति	296	270	—48	78ग	—39	91	—63	—355	293
(ख) बैंकों की विदेशी मुद्रा संबंधी निवल परिसम्पत्ति .	24	—14	11	—10	14	—	—	—	25

4. जनता को सरकार की मुद्रा-सम्बन्धी निवल देनदारी .	341	19	25	26	46	43	32	12	512
5. बैंकिंग क्षेत्र की मुद्रा-भिन्न निवल देनदारी (क+ख+ग) .	3582	498	649	1092	1188	1326	1475	1169	9504
(क) बैंकों के पास सावधिक जमा . . .	2532	403	521	720	887	1061	1130	996	7120
(ख) भारतीय रिजर्व बैंक की मुद्रा-भिन्न निवल देनदारी .	583	11	109	381ग	120	203	61	186	1593
(ग) शेष	467	84	19	—9	181	62	284	—13	7910
घ. कुल वित्तीय साधन (क+5क)	8370	1035	1244	1665	2178	2506	2017	1464	18463

(क) अनन्तिम

(ख) इसमें भारतीय रिजर्व बैंक के पास की 'अन्य जमा' शामिल हैं।

(ग) 1971-72 में लेखों में समायोजित निवल राशियों को घटाने के बाद सरकार को दिये गये निवल बैंक ऋण में हुई वृद्धि की राशि 972 करोड़ रुपया तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सरकार को दिये गये ऋण में हुई वृद्धि की राशि 671 करोड़ रुपया बैठती है। चूंकि लेखों में समायोजन इस प्रकार किया गया है कि एक का वृद्धिकारी प्रभाव दूसरे के संकोचनशील प्रभाव से दूर किया जा सके इसलिए इन समायोजनों से 'मुद्रा उपलब्धि' के आंकड़ों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। किन्तु वस्तुत: इन समायोजनों से, सरकारी क्षेत्र को दिये गये 'निवल बैंक ऋण' में 175 करोड़ रुपये की वृद्धि हो गयी है और उसके परिणामस्वरूप 1971-72 में, भारतीय रिजर्व बैंक की विदेशी मुद्रा सम्बन्धी निवल परिसम्पत्तियों में 23 करोड़ रुपये की वृद्धि हो गयी। भारतीय रिजर्व बैंक की मुद्रा-भिन्न देनदारियों में 198 करोड़ रुपये की वृद्धि होने के कारण उपर्युक्त राशियां प्रतिसन्तुलित हो गयी हैं जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा उपलब्धि पर संकोचनशील प्रभाव पड़ा है।

(घ) इसमें केन्द्र द्वारा राज्यों को भारतीय रिजर्व बैंक के ओवर-ड्राफ्टों की रकम को चुकाने के लिए दिये गये अर्थोपाय अग्रिमों के 421 करोड़ रुपये के सांकेतिक अन्तरण शामिल हैं।

टिप्पणी : पूर्णांकन के कारण यह आवश्यक नहीं है कि इन आंकड़ों का जोड़ दिये गये जोड़ से मेल खाये।

4.2 : अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक : व्यस्त व मंदी के मौसम में दिये गये ऋण

(करोड़ रुपयों में)

	1969-70 व्यस्त मौसम	1970 मंदी का मौसम	1970-71 व्यस्त मौसम	1971 मंदी का मौसम	1971-72 व्यस्त मौसम	1972 मंदी का मौसम	1972-73 व्यस्त मौसम	1973 मंदी का मौसम	1973-74 व्यस्त मौसम	1974 मंदी का मौसम @	1973-74 26 अक्तूबर 1973 से 18 जनवरी 1974 तक का व्यस्त मौसम @	1974-75 25 अक्तूबर 1974 से 17 जनवरी 1975 तक का व्यस्त मौसम @	17 जनवरी 1975 को बकाया
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1 जमा :													
मांग जमा	172	174	190	202	310	262	335	252	404	316	195	144	4856
सावधि जमा	149	274	245	422	314	443	476	647	266	564	227	267	6761
जोड़	321	448	435	624	624	705	811	899	670	880	422	411	11617
2. ऋण (वृद्धि)	563	226	394	163	355	67	897	346	1109	93	518	372	8077
3. ऋण की निवल वापसी (1–2)	−242	222	−41	461	269	638	−86	553	−439	736	−96	39	3540
4. भारतीय रिजर्व बैंक से ऋण (वृद्धि)	−203	66	−40	172	−4	16	−17	−56	−253	270	−211	−16	80
5 सिक्यूरिटियों में जमा													
(क) सरकारी सिक्यूरिटियों में	−101	155	39	209	144	519	−89	187	73	326	35	47	2775
(ख) अनुमोदित सिक्यूरिटियों में	47	32	76	45	95	101	93	95	84	113	74	42	1083
6. अन्य साधन/स्रोत	15	−51	−34	35	34	2	−73	327	−343	77			
7. पिछले व्यस्त मौसम की घट-बढ़ के संदर्भ में मंदी के मौसम की घट-बढ़, प्रतिशत में	1970		1971		1972		1973		1974				
(1) ऋणों की वापसी	−40		−41		−19		−39		−9				
(2) भारतीय रिजर्व बैंक से लिये गये ऋणों की वापसी	42		430		400		329		107				

@अनन्तिम

4.3 : अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक—चुनी हुई मदों में घट-बढ़

(करोड़ रुपये)

	31 मार्च 1969 को बकाया	निम्नलिखित अवधि में घट-बढ़							17 जनवरी 1975 को बकाया@
		1969-70 31 मार्च से 31मार्च	1970-71 31 मार्च से 31 मार्च	1971-72 31 मार्च से 31 मार्च	1972-73 31 मार्च से 31 मार्च	1973-74 31 मार्च से 31 मार्च @	1973-74 31 मार्च से 18 जनवरी @	1974-75 31 मार्च से 17 जनवरी @	
मांग जमा . .	1975.5	310.4	373.0	467.9	657.9	558.0	401.7	513.0	4855.7
सावधि जमा . .	2408.9	369.3	510.3	690.6	834.2	1014.1	1077.9	933.3	6760.8
कुल जमा . .	4384.4	679.7	883.3	1158.5	1492.1	1572.1	1479.6	1446.3	11616.5
रिजर्व बैंक से उधार	118.8	119.2	100.1	—130.6	—27.4	315.1	111.2	—415.4	79.8
रिजर्व बैंक के पास नकद और शेष	255.3	73.7	67.4	50.9	39.0	344.5	534.5	—17.2	813.6
सरकारी सिक्यूरिटियों में पूंजी	1091.2	89.4	179.9	289.8	509.9	188.3	203.5	426.3	2774.8
बैंक ऋण . .	3463.6	593.8	690.5	515.4	880.6	1353.0	876.9	579.9	8076.9
नयी बाजार हुण्डी योजना के अन्तर्गत फिर से भुनायी गयी हुण्डियां . .	—	—	8.0	33.8	—5.7	218.9	106.3	—86.9	168.1
कुल बैंक ऋण (फिर से भुनायी गयी हुण्डियों सहित)	3463.6	593.8	698.5	549.2	874.9	1571.9	983.2	493.0	8245.0

@अनन्तिम

4.4 : सरकारी क्षेत्र के बैंकों और अन्य वाणिज्यिक बैंकों की शाखाओं का विस्तार

	19-7-1969 को कार्यालयों की संख्या	30-9-74 को कार्यालयों की संख्या	19-7-1969 और 30-9-74 के बीच हुई वृद्धि	देहाती केन्द्रों में कार्यालयों की संख्या में हुई वृद्धि*	कालम 4 के मुकाबले में कालम 5 का प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
क. भारतीय स्टेट बैंक	1571	3143	1572	706	44.9
ख. भारतीय स्टेट बैंक के सहायक बैंक	894	1670	776	382	49.2
ग. 14 राष्ट्रीयकृत बैंक	4168	9213	5045	2507	49.7
सरकारी क्षेत्रों के बैंकों का जोड़ (क+ख+ग)	6633	14026	7393	3595	48.6
घ. अन्य भारतीय अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक	1340	3052	1712	746	43.6
ङ. विदेशी बैंक	130	131	1	—1	—
च. गैर-अनुसूचित बैंक	218	124	—94**	—10**	—
सभी वाणिज्यिक बैंकों का जोड़	8321	17333	9012	4330	48.0

* ग्रामीण केन्द्र—10,000 तक की जनसंख्या वाले स्थान।

** गैर-अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की संख्या में कमी के कारण ये हैं :—

(i) कुछ बैंकों का भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की दूसरी अनुसूचित में शामिल किया जाना।

(ii) भारतीय स्टेट बैंक और अन्य अनूसूचित बैंकों द्वारा कुछ गैर-अनुसूचित बैंकों का हाथ में लिया जाना।

टिप्पणी :—ग्रामीण केन्द्रों के कार्यालयों की संख्या में हुई वृद्धि 19 जुलाई, 1969 को (1961 की जनगणना के आधार पर वर्गीकृत) ऐसे केन्द्रों में स्थित इन कार्यालयों की संख्या और 13 सितम्बर 1974 को (1971 की जमगणना के आधार पर वर्गीकृत) ऐसे कन्द्रों में स्थित इन कार्यालयों की संख्या बीच के अन्तर की द्योतक हैं।

4.5 : सरकारी क्षेत्र के बैंकों द्वारा कृषि और अब तक उपेक्षित अन्य क्षेत्रों को दिये गये अग्रिम

(करोड़ रुपयों में)

	जून 1969		जून 1970		जून 1971		जून 1972		जून 1973@		जून 1974@	
	खातों की संख्या	बकाया रकम	खातों की संख्या	बकाया रकम	खातों की संख्या	बकाया रकम	खातों की संख्या	बकाया रकम	खातों की संख्या	बकाया रकम	खातों की संख्या	बकाया रकम
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1. कृषि :												
(क) प्रत्यक्ष वित्त* . .	160,020	40.20 (1.4)	612,477	160.38 (4.3)	793,100	206.37 (4.8)	926,583	231.89 (5.0)	1,246,326	297.86 (5.5)	1,630,127	391.58 (6.0)
(ख) अप्रत्यक्ष वित्त . .	4,461	122.09 (4.1)	19,076	141.26 (3.9)	23,811	134.59 (3.3)	144,205	156.56 (3.4)	124,361	170.83 (3.1)	208,651	193.1 (2.9)
2. लघु उद्योग** . . .	50,850	251.10 (8.5)	81,380	369.50 (10.3)	100,288	442.20 (10.8)	116,046	528.49 (11.4)	158,683	644.86 (11.9)	201,409	868.33 (13.2)
3. सड़क परिवहन चालक . .	2,324	5.49 (0.2)	12,690	24.42 (0.7)	23,276	39.85 (1.0)	31,065	50.43 (1.1)	43,923	62.71 (1.2)	63,470	83.39 (1.3)
4. खुदरा और छोटा व्यापार .	33,241	19.37 (0.6)	125,773	64.45 (1.8)	147,198	71.98 (1.8)	165,959	77.43 (1.7)	231,742	94.76 (1.7)	320,700	117.68 (1.8)
5. पेशेवर और आत्मनियोजित व्यक्ति] .	7,769	1.91 (0.1)	28,928	6.64 (0.2)	41,554	8.61 (0.2)	57,208	12.16 (0.3)	107,343	21.21 (0.4)	180,173	29.74 (0.5)
6. शिक्षा . . .	1,477	0.80 (—)	4,994	2.06 (0.1)	7,088	3.70 (0.1)	7,304	2.92 (0.1)	10,106	3.20 (0.1)	11,733	3.49 (0.1)
जोड़ (1 से 6 तक) . .	260,142	440.96 (14.9)	8,85,318	768.71 (21.3)	1,136,315	907.30 (22.0)	1,448,370	1058.51 (22.9)	1,922,484	1295.43 (23.8)	2,616,263	1,687.31 (25.7)
इन बैंकों द्वारा दिये गये कुल अग्रिम .		3016.76		3577.60		4079.76		4622.00		5430.00		6563.00

@अनन्तिम।

*इन रकमों में बागानों को दिये गये अग्रिमों (विकास वित्त से भिन्न) को शामिल नहीं किया गया है।

**एककों की संख्या।

टिप्पणियां : (1) कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े, इन बैंकों के कुल अग्रिमों की तुलना में इन रकमों के प्रतिशत के द्योतक हैं।

(2) हो सकता है कि पूर्णांकन के कारण आंकड़ों का जोड़ दिये गये जोड़ से मेल न खाये।

4.6 : सरकारी क्षेत्रों के बैंकों के कार्यालयों, इनमें जमा कुल राशियों और इन बैंकों द्वारा दिये गये कुल ऋणों तथा इन ऋणों में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को दिये गये ऋणों के प्रतिशताँश का राज्यवार विवरण

राज्य/संघ क्षेत्र	बैंक कार्यालय		जमा (करोड़ रुपयों में)		बैंक ऋण (करोड़ रुपये)		बैंक ऋण में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों का हिस्सा (प्रतिशत)		कुल उत्पादन में उद्योगों का योगदान (प्रतिशत)
	जून 1969	जून 1974	जून 1969	जून 1974	जून 1969	जून 1974	जून 1969	जून 1974	जून 1969
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. आन्ध्र प्रदेश	444	928	121.11	309.99	122.09	306.92	24.4	38.5	4.97
2. असम	67	170	33.20	87.39	12.85	38.90	10.3	37.2	1.52
3. बिहार	269	665	168.67	494.73	52.05	178.33	9.1	30.3	5.76
4. गुजरात	750	1425	401.31	810.89	194.89	504.04	15.9	33.7	8.49
5. हरियाणा	140	294	48.78	125.59	23.15	87.03	28.2	52.3	2.13
6. हिमाचल प्रदेश	41	143	12.38	56.00	3.49	8.72	2.7	35.6	0.23
7. जम्मू और कश्मीर	17	91	17.95	37.04	0.86	9.63	30.3	59.0	0.07
8. कर्नाटक	510	1113	187.79	405.66	143.04	394.55	24.8	33.2	3.89
9. केरल	331	640	116.79	250.97	76.95	178.72	27.6	45.2	2.98
10. मध्य प्रदेश	332	803	107.43	287.53	63.14	178.30	22.3	33.2	4.10
11. महाराष्ट्र	946	1728	902.67	1948.85	911.79	1696.10	12.4	19.9	26.02
12. मणिपुर	2	9	1.06	3.69	0.15	1.12	..	89.3	..
13. मेघालय	7	18	8.87	20.41	2.52	1.91	50.0	53.9	..
14. नागालैंड	2	7	1.07	3.18	0.06	0.78	40.0	39.7	..
15. उड़ीसा	96	241	29.49	85.72	14.60	45.89	11.2	32.5	2.09
16. पंजाब	290	611	185.41	416.87	50.29	184.11	27.9	51.1	2.00
17. राजस्थान	311	613	73.73	171.91	38.20	102.50	16.8	38.7	1.64
18. तमिलनाडु	721	1239	233.48	624.98	311.32	705.30	25.5	25.8	9.39
19. त्रिपुरा	5	18	3.76	10.65	0.16	1.28	9.5	62.5	0.01
20. उत्तर प्रदेश	639	1475	337.15	874.54	153.74	405.23	16.9	39.1	7.18
21. पश्चिम बंगाल	428	903	456.45	1040.93	525.80	892.99	4.4	12.3	15.41
संघ क्षेत्र									
1. चण्डीगढ़	19	38	34.55	57.66	64.13	167.00	4.2	2.6	0.07
2. दिल्ली	207	396	359.80	772.46	244.90	553.30	10.2	20.1	1.84
3. गोआ, दमन और दीव	83	129	48.68	98.32	19.68	43.63	12.6	35.9	0.04
4. पांडिचेरी	11	24	5.06	11.76	4.74	12.51	12.9	8.8	0.16
5. अन्य सभी*	1	20	0.33	4.58	0.01	0.77	..	88.3	0.01
जोड़	6669	13741	3896.97	9012.30	3034.60	6699.56	14.9	25.2	100.00

*इसमें अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश, दादरा और नगर हवेली, लक्षद्वीप और मिजोरम शामिल हैं।

4.7 : पंजी बाजार : कुछ निर्देशांक

4. मुद्रा सम्बन्धी प्रवृत्तियां

(करोड़ रुपयों में)

	गैर-सरकारी कम्पनियों को शेयर जारी करने के लिए पूंजी निर्गम नियंत्रक द्वारा दी गयी स्वीकृतियां/प्रस्तावों की अभिस्वीकृतियां[1]			गैर-सरकारी कम्पनियों द्वारा जुटाई गई पूंजी†							संयुक्त पूंजी कंपनियों (गैर-वित्तीय) के पास जमा रकमें@		सिक्यूरिटियों के मूल्यों सूचकांक @@			
				स्वीकृतियों के आधार पर			छूट आदेश के अन्तर्गत									
	(क) बोनस	(ख) अन्य (प्रारंभिक, अतिरिक्त, ऋण पत्रों और ऋणों सहित)	जोड़	बोनस	ऋण	अन्य[2]	बोनस	ऋण	अन्य[2]	जोड़	जमा की रकमें स्वीकार करने वाली कंपनियों की संख्या	जमा की कुल रकमें	सरकारी और अर्ध-सरकारी सिक्यू-रिटियां	संयुक्त पूंजी कंपनियों के ऋण पत्र	तरजीही शेयर	परिवर्तनशील लाभांशों वाली औद्योगिक सिक्यूरिटियां
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
1961-62 .	10.07	171.23	181.30	7.46	15.85	85.19	—	—	15.83	124.06	1208 (570)	97.5	100.9	101.1	83.2	183.7
1965-66 .	4.90	209.08	213.98	6.24	16.64	83.07	—	—	19.55	125.50	1964 (987)	228.5	94.6	93.9	94.4	76.7
1969-70 .	39.12*	108.40	147.52	29.29	10.42	73.36	—	—	22.21	135.28	1535 (685)	451.4ख	99.0	93.5	87.6	92.6ग 94.5घ
1970-71 .	40.59	72.16	112.75	51.80	6.75	63.15	—	—	26.26	147.96	1472ज (629)	432.2ख	99.0	93.5	87.5	101.9
1771-72 .	41.19	141.17	182.36	31.81	4.04	50.00	—	—	37.39	123.24	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं	98.6	99.1	96.7	95.2
1972-73 .	33.86	159.66	193.52	36.16	6.11	92.20	—	—	38.30	164.00	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं	98.7	98.4	94.3	96.5
1973-74 .	66.22	122.21	182.43	50.00	4.52	65.45	—	—	46.00	167.95	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं	98.8	97.4	94.1	114.6
1973-74 (सितम्बर तक) .	39.71	79.66	119.37	41.52	3.97	33.46	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं		उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नही	उपलब्ध नहीं	98.8ज	97.5ज	93.9ज	112.2ज
1974-75 (सितम्बर तक) .	39.34	97.99	137.33	40.46	0.78	39.92	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं		उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नही	उपलब्ध नही	97.7ज	96.9ज	93.1ज	123.8ज

1. ये आंकड़े कैलेण्डर वर्षों के हैं। पूंजी निर्गम (छूट) आदेश, 1966 और 1969 के अन्तर्गत किये गये परिवर्तनों के कारण 1969-70 से लेकर बाद के वर्षों के आंकड़ों की तुलना उनसे पिछले वर्षों के आंकड़ों के साथ पूरी तरह नहीं की जा सकती। 1966 के आदेश के अनुसार प्राईवेट कम्पनियों, बैंकिंग और बीमा कम्पनियों तथा सरकारी कंपनियों को बोनस शेयर जारी करने के मामले

को छोड़कर बाकी सभी मामलों में, पूंजी निर्गम(छूट) अधिनियम, 1947 की धारा 3, 4, और 5 से पूरी छूट प्राप्त है। 1969 के आदेश के अनुसार पब्लिक लिमिटेड कंपनियों को पूजी जारी कर के अपने प्रस्तावों के बारे में केवल विवरण देने की जरूरत होती है, बशते कि ये प्रस्ताव निर्धारित वित्तीय मापदण्डों के अनुरूप हों, इसलिए अब 'अनापत्ति पत्र' का स्थान प्रस्तावों की 'अभिस्वीकृति' ने ले लिया है।

2. प्रारंभिक, अतिरिक्त और ऋण पत्रों सहित।

*बोनस निर्गम में तीन सरकारी कम्पनियों की 2.04 करोड़ रुपये की स्वीकृतियां शामिल है।

@कोष्ठकों से बाहर के आंकड़ों में पब्लिक और प्राइवेट लिमिटेड, दोनों प्रकार की कंपनियों के आंकड़े शामिल हैं। कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े केवल प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों के संबंध में हैं।

@@1961-62 के लिए आधार वर्ष 1952-53=100 है। 1965-66 से 1970-71 तक के लिए संशोधित वर्ष 1961-62=100 का प्रयोग किया गया है। 1971-72 से संशोधित आधार, 1970-71=100 का प्रयोग किया गया है।

†ये आंकड़े कैलेण्डर वर्ष के हैं। इन आंकड़ों में, कंपनियों द्वारा जुटाई गयी वह पूंजी शामिल नहीं की गई है जिसके बारे में सूचना प्राप्त नही हुई है।

ख. जमा की रकमों में कुछ ऐसे ऋण और अन्य प्राप्तियां भी शामिल हैं, जिन्हें भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समय समय पर जारी किये गये निदेशों से छूट दी गई है। मार्च, 1968, मार्च, 1969 और मार्च, 1970 के अन्त तक ये रकमें क्रमश: 113 करोड़ रुपये, 167 करोड़ रुपये और 193 करोड़ रुपये हो गयी। पहले के वर्षों के इसी प्रकार के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

ग, घ, ङ और च का संबंध क्रमश: 47, 4, 39 और 13 सप्ताहों से है।

ज. दिसम्बर तक।

छ: इनमें एक विदेशी कम्पनियों की तीन शाखाएं शामिल हैं।

टिप्पणी : कुछ बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिये जाने के परिणामस्वरूप "परिवर्तनशील लाभांशों वाली प्रतिभूतियां" नामक शीर्षक के अन्तर्गत वित्तीय समूह के उप-समूह 'बक' के अन्दर सम्मिलित प्राप्तियों को मार्च, 1970 से 'अन्य उद्योग' नामक समूह के उपसमूह 'अन्य' के अन्तर्गत अन्तरित कर दिया गया है।

4.8 : पूंजी बाजार : वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और संवितरित वित्तीय सहायता

(करोड़ रुपयों में)

	1961-62		1965-66		1969-70		1970-71		1971-72		1972-73		1973-74		अप्रैल-सितम्बर 1973-74		अप्रैल-सितम्बर 1974-75	
	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित	स्वीकृत	संवितरित
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
1. भारतीय औद्योगिक वित्त निगम	26.7	8.3	45.9	27.1	18.6	17.5	32.3	17.4	28.7	20.3	47 5	28.3	40.9	30.2	25.9	16.5	14.5	22.1
2. भारतीय औद्योगिक ऋण और निवेश निगम (संशोधित) *	11.5	7.0	29.6	25.3	22.8	19.8	43.9	28.9	39.7	30.3	49.5	39.7	61.1	43.5	31.9	21.2	37.3	20.4
3. भारतीय औद्योगिक विकास बैंक	..	..	63.0	35.3	51.1	45.1	73.3	55.8	140.4	78.8	92.4	66.6	184.4	118.3	78.8	50.6	110.3	80.9
4. भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण निगम*	..	..	..	..	..	..	..	..	5.9	1.1	6.4	3.5	7.4	5.2	1.2	1.8	4.6	3.3
5. राज्यों के वित्तीय निगम	13.3	9.0	23.3	18.8	33.4	22.3	49.6	33.5	64.1	39.6	78.7	44.7	105.7	54.5	36.2	21.2	59.5@	32.8@
6. राज्यों के औद्योगिक विकास निगम	..	..	1.7	1.4	25.9	11.6	19.3	11.0	23.6	14.4	33.5	17.7	26.7	18.5	उपलब्ध नहीं		उपलब्ध नहीं	
7. भारतीय यूनिट ट्रस्ट	..	..	2.1	1.7	9.9	8.7	9.2	5.1	13.9	1.6	9.6	5.6	7.9	7.8	3.1	5.5	5.0	6.0
8. भारतीय जीवन बीमा निगम																		
(क) निगमित क्षेत्र	5.5	3.9	25.0	9.7	13.4	11.8	17.8	8.1	13.1	5.3	18.0**	11.8	21.3	17.9	9.6	5.4	5.5	10.1
(ख) सहकारी क्षेत्र@@	0.2	—	—	0.2	2.0	1.3	2.0	—	12.4	1.7	1.4	1.1	4.6	1.8	1.3	1.2	—	10.7

†इनका संबंध संयुक्त पूंजी वाली कम्पनियों के ऋणपत्रों, अधिमान्य शेयरों और सामान्य शेयरों से तथा सरकारी और गैर-सरकारी दोनों क्षेत्रों में कम्पनियों को दिए गये ऋणों से भी है ।

*गारंटी संबंधी सहायता को छोड़ कर।

@आंकड़ें, अप्रैल-अगस्त 1974 की अवधि से सम्बन्धित हैं।

**इसमें पहले स्वीकृत 700 लाख रुपये के ऋण-पत्रों में से ऋणों में परिवर्तित 250 लाख रुपये की रकम शामिल नहीं है।

@@आंकडे, चीनी सहकारी समितियों और औद्योगिक समिति को दिये गय ऋणों के सम्बन्ध में हैं।

टिप्पणियां— 1. औद्योगिक वित्त निगम और भारतीय औद्योगिक ऋण और निवेश निगम के संबंध में 1965-66 से आंकड़े अवमूल्यन के बाद की दरों पर आधारित हैं।

2. भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के गठन से पहले भारतीय पुनर्वित्त निगम ने अपनी स्थापना अर्थात् 1958 से 31 अगस्त 1964 तक कुल मिला कर 65.5 करोड़ रुपये की मूल्य की पुनर्वित्त सुविधायें दी थीं, जिसमें कुल मिला कर 42.2 करोड़ रुपये के पुनर्वित्त का भुगतान कर दिया गया था। जुलाई, 1964 से जून, 1965 तक की अवधि के दौरान भारतीय औद्योगिक विकास बैंक ने, जिसने भारतीय पुनर्वित्त निगम को अपने हाथ में ले लिया था, 21.2 करोड़ रुपये की पुनर्वित्त सुविधायें दीं।

3. राज्यों के औद्योगिक विकास निगमों के आंकड़े, 1967-68 तथा 1968-69 के वर्षों में 10 निगमों और 1969-70 तथा 1970-71 के वर्षों में 16 राज्य औद्योगिक विकास निगमों तथा दो राज्य औद्योगिक निवेश निगमों और 1971-72 के वर्ष में 13 राज्य औद्योगिक विकास निगमों और 2 राज्य औद्योगिक निवेश निगमों के संबंध में हैं।

4. फरवरी, 1963 से राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम ने रुई, जूट और कपड़े की मिलों और मशीनी औजार उद्योग के आधुनिकीकरण तथा विस्तार के लिए कोई नये आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये हैं। किन्तु वह अपने परामर्शदाता कार्यालय के माध्यम से बराबर परामर्शदात्री सेवाएं प्रदान कर रहा है।

5.1: थोक भावों के सूचक अंक

(आधार 1961-62=100)

	कृषि वस्तुएं	खाद्य वस्तुएं जोड़	खाद्य वस्तुएं अन्न	शराब, और तम्बाकू	ईंधन, शक्ति, रोशनी और चिकनाने के पदार्थ	औद्योगिक कच्चा माल	रासायनिक पदार्थ	मशीनें और परिवहन उपरकण	निर्मित वस्तुएं जोड़	निर्मित वस्तुएं मध्यवर्ती वस्तुएं	निर्मित वस्तुएं तैयार वस्तुएं	सभी वस्तुएं
भार	33.2	41.3	14.8	2.5	6.1	12.1	0.7	7.9	29.4	5.7	23.7	100.0
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
निम्नलिखित वर्षों के अंतिम सप्ताह												
1965-66	148	150	159	133	131	144	133	120	124	130	122	137.5
1966-67	182	188	208	133	136	166	151	130	130	148	126	158.9
1967-68	173	194	207	167	147	141	162	132	130	144	127	160.3
1968-69	182	186	193	216	153	172	177	133	139	149	136	165.1
1969-70	201	200	214	188	160	186	193	140	149	174	143	175.7
1970-71	195	200	200	185	163	191	189	151	160	185	155	180.6
1971-72	198	216	223	209	178	179	199	163	173	208	165	192.3
1972-73	240	250	262	249	188	236	208	172	183	229	172	218.5
1973-74	308	322	336	272	288	323	271	216	233	311	216	284.0
सप्ताहों का औसत												
1965-66	142	145	154	133	124	133	126	118	118	125	116	131.6
1966-67	167	171	183	134	134	158	144	126	128	140	124	149.9
1967-68	188	208	228	152	142	156	157	132	131	147	127	167.3
1968-69	179	197	201	192	149	157	169	133	134	145	132	165.4
1969-70	195	197	208	195	155	180	184	136	144	160	140	171.6
1970-71	201	204	207	185	162	197	188	148	155	179	149	181.1
1971-72	200	210	215	195	172	191	197	159	167	197	160	188.4
1972-73	220	240	248	233	181	204	201	168	177	212	168	207.1
1973 74	281	296	296	251	214	299	219	183	206	268	190	254.0
1973-74												
अप्रैल	243	257	264	245	188	247	208	172	186	233	175	222.9
मई	256	272	270	247	188	267	209	173	187	231	176	231.6
जून	264	283	276	245	189	283	209	175	188	233	177	238.6
जुलाई	281	295	289	244	190	312	213	176	192	242	180	248.4
अगस्त	282	299	294	248	191	306	214	178	195	245	183	251.0
सितम्बर	275	296	289	245	195	294	213	179	200	259	185	250.3
अक्टूबर	281	300	293	249	195	304	211	181	207	277	190	255.2
नवम्बर	288	301	308	250	236	298	215	182	214	290	196	260.0
दिसम्बर	288	301	305	252	235	308	216	188	216	299	199	262.1

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
जनवरी . . .	297	313	313	253	235	321	229	196	222	300	203	271.2
फरवरी . . .	303	316	320	262	237	326	238	197	227	307	208	275.0
मार्च	308	321	331	273	288	323	262	213	233	311	214	283.3
1974-75												
अप्रैल	316	326	350	287	313	324	272	218	242	317	223	289.9
मई	332	341	371	294	319	326	281	227	246	336	224	299.1
जून	342	351	376	305	313	335	287	233	249	339	228	306.0
जुलाई	358	367	392	304	313	342	287	241	254	337	233	315.1
अगस्त	368	376	412	300	313	353	291	256	261	339	242	323.4
सितम्बर . . .	378	386	437	305	316	356	300	261	262	333	244	328.9
अक्टूबर . . .	366	382	431	311	319	330	301	266	262	325	246	324.8
नवंम्बर	357	376	417	311	319	320	309	269	257	305	245	320.0
दिसम्बर†	354	369	409	309	319	320	313	271	255	303	243	316.9

†अनन्तिम

*व्युत्पन्न श्रृंखलाएं: (डीराइव्ड सीरीज): चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, मक्का, रागी, चना, अरहर, मूंग, मसूर, उड़द, आलू, प्याज, संतरे, केले, काजू, चाय, काफी, मिर्च, मसाले, सुपारी, कच्चे तम्बाकू, कपास, कच्चे जूट, मेस्ता, कच्चे सन, मूंगफली, अलसी, रेंडी, तिल, तोरिया, बिनौले, गोले चमड़ा कमाने के पदार्थ, गन्ने, रबड़, लट्ठे, इमारती लकड़ी, बांस, और नारियल के रेशे के मूल्यों के सूचक अंकों के भारित औसत। इस शीर्ष के अंतर्गत वर्षों के अंतिम सप्ताह के सामने दिये गये आंकड़े प्रत्येक वर्ष के मार्च के महीने के हैं।

5.2 : थोक भावों के सूचक अंक—चुनी हुई वस्तुएं/वस्तु समूह

(आधार: 1961-62=100)

	चावल	गेहूं	दालें	खाद्य तेल	कोयला	खनिज तेल	रुई	कच्चा जूट और मेस्ता	मूंगफली	सूत	धातुएं	मिल का बना कपड़ा	जूट निर्मित वस्तुएं	इस्पात और लोहे से बनी वस्तुएं	साबुन
भार (प्रतिशत)	6.69	3.22	2.68	5.37	1.31	3.02	2.24	1.16	2.52	1.69	2.43	5.59	2.38	3.59	0.44
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
निम्नलिखित वर्षों के अंतिम सप्ताह															
1965-66	153	150	180	170	125	131	119	160	164	111	152	112	134	124	131
1966-67	180	216	259	206	131	133	134	124	205	133	165	118	119	128	141
1967-68	196	200	265	144	158	139	146	175	130	129	169	123	106	139	126
1968-69	185	205	205	184	163	149	163	175	187	134	173	129	153	150	138
1969-70	197	234	248	220	168	158	182	129	210	159	211	131	157	157	137
1970-71	195	208	228	209	168	157	239	135	187	197	204	152	172	166	145
1971-72	208	215	284	197	175	180	166	135	190	218	231	161	200	189	147
1972-73	244	228	353	273	188	184	205	160	307	232	253	170	184	204	147
1973-74	329	250	455	379	190	385	338	116	377	234	393	211	267	256	167
सप्ताहों का औसत															
1965-66	137	149	191	151	122	125	119	127	142	113	147	108	119	121	122
1966-67	169	178	225	196	128	133	127	141	188	123	160	116	124	126	144
1967-68	200	214	328	182	148	138	142	102	165	132	169	122	106	137	133
1968-69	196	204	223	162	161	141	155	157	149	130	170	126	133	145	131
1969-70	196	215	239	206	166	150	171	139	199	145	189	130	154	151	137
1970-71	201	209	240	232	168	157	209	141	215	174	207	139	171	164	142
1971-72	204	208	272	203	171	172	222	131	197	207	218	157	194	174	146
1972-73	231	222	330	231	177	180	177	147	242	207	239	163	189	198	147
1973-74	283	226	411	349	190	236	277	134	388	227	316	188	203	227	161
1973-74															
अप्रल	247	216	360	287	188	184	211	167	332	236	254	171	190	204	147
मई	254	213	374	313	190	184	224	165	378	234	256	172	189	204	147
जून	262	211	377	325	190	187	238	154	408	225	258	176	178	206	147
जुलाई	272	212	411	362	190	188	271	121	471	225	268	178	171	206	157
अगस्त	287	212	405	359	190	190	272	131	391	224	277	180	178	212	166
सितम्बर	285	212	393	350	190	197	272	131	391	224	290	183	189	215	166
अक्टूबर	289	212	411	359	190	197	306	131	379	226	317	188	195	226	166
नवम्बर	295	237	439	336	190	280	307	126	340	229	351	196	202	241	166
दिसम्बर	286	245	430	348	190	279	294	123	362	225	369	199	204	248	167

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
जनवरी	293	245	437	382	190	268	299	118	384	225	378	200	220	250	167
फरवरी	302	248	443	380	190	268	315	120	394	227	385	201	247	256	167
मार्च	318	250	455	380	190	385	335	117	380	231	391	211	267	256	167
1974-75															
अप्रैल	337	295	450	383	263	384	346	113	382	235	404	229	284	256	167
मई	347	356	459	398	263	383	354	114	392	297	410	237	274	257	167
जून	357	347	459	412	263	383	356	121	409	311	409	239	254	257	167
जुलाई	370	363	479	414	263	383	382	135	414	315	403	246	254	267	167
अगस्त	389	380	509	422	263	384	397	147	432	323	404	253	276	280	167
सितम्बर	404	407	554	418	263	384	411	176	415	312	394	253	282	295	167
अक्तूबर	402	400	556	407	263	396	349	169	363	306	395	255	274	283	203
नवम्बर	376	392	563	406	263	396	297	155	381	258	393	254	263	282	203
दिसम्बर†	343	402	559	413	263	396	295	149	405	249	391	247	259	282	235

†अनन्तिम

3: अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचक अंक

	कर्मचारी वर्ग				
	खाद्य सूचकांक		सामान्य सूचकांक		शहरी गैर-श्रमिक कर्मचारी (1960=100)
	1949=100	1960=100	1949=100	1960=100	
1	2	3	4	5	6
वित्तीय वर्ष					
1955-56	94		96		
1960-61	125		124		100*
1965-66	174		169		132
1966-67	198		191		146
1967-68	228		213		159
1968-69	223@		212@		161
1969-70	223	193	215	177	167
1970-71	233	202	226	186	174
1971-72	237	205	233	192	180
1972-73	258**	223	251	207	192
1973-74	323	279	304	250	221
कैलेण्डर वर्ष					
1955	92		96		..
1960	126		124		100
1965	172		166		130
1966	190		184		142
1967	222		209		157
1968	228**	196	215**	177	161
1969	220	190	213	175	165
1970	231	200	224	184	173
1971	235	203	230	190	178
1972	250	216	245	202	189
1973	304	262	287	236	212
1973—					
जनवरी	264	228	255	210	195
फरवरी	267	231	259	213	196
मार्च	273	236	263	216	199
अप्रैल	281	243	269	221	202
मई	293	253	277	228	207
जून	300	259	283	233	211
जुलाई	317	274	295	243	216
अगस्त	323	279	300	247	218
सितम्बर	323	279	301	248	219
अक्टूबर	331	286	309	254	223
नवम्बर	336	290	315	259	226
दिसम्बर	334	289	316	260	228

1	2	3	4	5	6
1974—					
जनवरी	340	294	321	264	231
फरवरी	344	297	325	267	233
मार्च	353	305	334	275	238
अप्रैल	365	315	344	383	244
मई	382	330	357	294	251
जून	390	337	366	301	256
जुलाई	405	350	378	311	262
अगस्त	421	364	390	321	270
सितम्बर	442	382	406	334	279
अक्टूबर	443	383	407	335	282
नवम्बर	—	—	402	331	—

*जनवरी से मार्च 1961 तक की अवधि से सम्बद्ध ।

@अन्तरिम शृंखला (1949=100) के चार महीनों तथा 1960=100 के आधार पर सूचकांकों की नई शृंखला से अनुमित आठ महीनों के आंकड़ों पर आधारित ।

**अन्तरिम शृंखला (1949=100) के सात महीनों के आंकड़ों तथा 1960=100 के आधार पर नई शृंखला से अनुमित पांच महीनों के आंकड़ों पर आधारित ।

टिप्पणी-- 1960=100 पर आधारित अखिल भारतीय सूचकांकों की नई शृंखला अगस्त 1968 से लागू की गई है इसके साथ ही 1949=100 पर आधारित अंतिम शृंखला को बन्द कर दिया गया है । नई शृंखला के 100 को सामान्य सूचकांक के सम्बन्ध में 121.54 के तथा खाद्य सूचकांकों के सम्बन्ध में 115.74 के बराबर करके 1949=100 के आधार पर अगस्त, 1968 से सूचकांक का अनुमान लगाया गया है ।

5.4 : थोक भावों के सूचक अंक : निर्मित वस्तुओं और कृषि वस्तुओं के सापेक्ष मूल्य

(आधार : 1961-62 = 100)

	थोक मूल्यों के सामान्य सूचक अंक*	निर्मित वस्तुओं के सूचक अंक @	कृषि वस्तुओं के सूचक अंक @@	कृषि वस्तुओं के मूल्यों के प्रतिशत अनुपात के रूप में निर्मित वस्तुओं के मूल्य
भार	100.00	32.30	33.20	
1	2	3	4	5
निम्नलिखित वर्षों के अन्तिम महीनों में				
1965-66	136.8	121.8	147.4	82.6
1966-67	159.4	127.6	181.5	70.3
1967-68	159.7	128.9	172.4	74.8
1968-69	164.8	136.1	181.8	74.9
1969-70	175.9	142.9	200.7	71.2
1970-71	181.6	154.4	194.8	79.3
1971-72	192.2	164.9	197.7	83.4
1972-73	220.0	173.0	240.3	72.0
1973-74	283.3	215.1	308.4	69.7
महीनों का औसत				
1965-66	131.6	117.0	141.7	82.6
1966-67	149.9	125.3	166.6	75.2
1967-68	167.3	129.1	188.2	68.6
1968-69	165.4	132.8	179.4	74.0
1969-70	171.6	139.7	194.8	71.7
1970-71	181.1	149.7	201.4	74.3
1971-72	188.4	160.5	199.6	80.4
1972-73	207.1	168.8	219.7	76.8
1973-74	254.0	189.3	280.6	67.5
1973-74				
अप्रैल	222.9	175.0	243.0	72.0
मई	231.6	175.7	256.5	68.5
जून	238.6	177.2	264.4	67.0
जुलाई	248.4	179.6	281.4	63.8
अगस्त	251.0	182.0	281.9	64.6
सितम्बर	250.3	184.5	275.1	67.1
अक्तूबर	255.2	188.2	280.9	67.0
नवम्बर	260.0	194.6	288.0	67.6
दिसम्बर	262.1	196.5	287.9	68.3

1	2	3	4	5
जनवरी	271.2	201.4	297.3	67.7
फरवरी	275.0	206.0	303.0	68.0
मार्च	283.3	215.1	308.4	69.7
1974-75				
अप्रैल	289.9	223.1	316.0	70.6
मई	299.1	226.0	332.1	68.1
जून	306.0	230.2	341.9	67.3
जुलाई	315.1	236.2	357.9	66.0
अगस्त	323.4	246.4	367.8	67.0
सितम्बर	328.9	249.5	378.0	66.0
अक्तूबर	324.8	252.2	365.9	68.9
नवम्बर	320.0	252.3	356.7	70.7
दिसम्बर†	316.9	251.3	353.5	71.1

*सप्ताहों के औसत।

@इसमें 'रासायनिक पदार्थ, मशीनें और परिवहन उपकरण' 'तैयार माल' शामिल हैं।

@@ व्युत्पन्न शृंखलाएं (डीराइव्ड सीरीज) : चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ, रागी, चना, अरहर, मूंग, मसूर, उड़द, आलू, प्याज, संतरे, केले, काजू, मिर्च, मसाले, चाय, कहवा, सुपारी, कच्चे तम्बाकू, कपास, कच्चे जूट और मैस्ता, कच्चे सन, नारियल के रेशे, मूंगफली, अलसी, रेंडी के बीज, तोरिए के बीज, तिल, बिनौले, खोपरा, चमड़ा कमाने के पदार्थ, गन्ना, रबड़, लट्ठे और इमारती लकड़ी और बांस के मूल्य के सूचक अंकों के भारित औसत।

†अनन्तिम

6.1 : भारत की प्रारक्षित विदेशी मुद्रा

(करोड़ रुपये)

निम्नलिखित वर्षों की समाप्ति पर	प्रारक्षित निधि @				अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ लेन-देन		
	सोना	एस०डी०आर० **	विदेशी मुद्रा***	जोड़ (2+3+4)	निकासी	पुनः खरीद	पुनः खरीद सम्बन्धी देनदारियां
1	2	3	4	5	6	7	8
1950-51	117.8	—	911.4	1029.2	—	—	47.62
1955-56	117.8	—	784.6	902.4	—	7.14	5.95
1956-57	117.8	—	563.3	681.1	60.71	5.95	60.71
1957-58	117.8	—	303.4	421.2	34.52	—	95.24
1958-59	117.8	—	261.1	378.9	—	—	95.24
1959-60	117.8	—	245.1	362.9	—	23.81	71.43
1960-61	117.8	—	185.8	303.6	—	10.71	60.72
1961-62	117.8	—	179.5	297.3	119.05	60.72	119.05
1962-63	117.8	—	177.3	295.1	11.90	—	130.95
1963-64	117.8	—	188.0	305.8	—	23.81	107.14
1964-65	133.8	—	115.9	249.7	47.62	47.62	107.14
1965-66	115.9	—	182.1	298.0	65.47	35.71	136.90
1966-67	182.5	—	295.9	478.4	89.29	43.09	313.13
					(187.5)	(57.5)	(417.5)
1967-68	182.5	—	356.1	538.6	67.50	43.13	337.50
1968-69	182.5	—	394.2	576.7	—	58.50	279.00
1969-70	182.5	92.0	546.4	820.9	—	125.25	153.75
1970-71	182.5	111.7	438.1	732.3	—	153.75	—
1971-72	182.5	185.8	480.4	848.7	—	—	—
1972-73	182.5	184.9	478.9	846.3	—	—	—
1973-74	182.5	183.7	580.8	947.0	62.6	—	62.6
1973-74							
जून	182.5	183.9	516.1	882.5	—	—	—
सितम्बर	182.5	183.9	496.0	862.4	—	—	—
दिसम्बर	182.5	183.9	376.8	743.2	—	—	—
मार्च	182.5	183.7	580.8	947.0	62.6	—	62.6
1974-75*							
अप्रैल	182.5	182.8	663.3	1028.6	72.8	—	135.4
मई	182.5	181.9	768.1	1132.5	221.4	—	356.8
जून	182.5	181.9	761.7	1126.1	—	—	356.8

1	2	3	4	5	6	7	8
जुलाई	182.5	181.9	691.3	1055.7	--	--	356.8
अगस्त	182.5	181.9	653.3	1017.7	--	--	356.8
सितम्बर	182.5	181.9	613.7	978.1	--	--	356.8
अक्तूबर	182.5	181.9	717.1	1081.5	155.2	--	512.0
नवम्बर	182.5	181.1	746.6	1110.2	38.7	--	550.7
दिसम्बर	182.5	179.9	587.4	949.8	--	--	550..7

@सोने का मूल्य मई, 1966 तक 53.58 रुपये प्रति दस ग्राम और उसके पश्चात 84.39 रुपये प्रति दस ग्राम आंका गया है, एस०डी०आर० का मूल्य 7.50 रुपये प्रति यूनिट आंका गया है।

*अनन्तिम।

**अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि ने भारत के लिए जनवरी, 1970 में 94.50 करोड़ रुपये के, जनवरी, 1971 में 75.43 करोड़ रुपये के और जनवरी, 1972 में 74.70 करोड़ रुपये के एस०डी०आर० नियत किये थे।

***जून, 1970 से जून, 1972 तक कनाडा के डालरों में रखी रकम का मूल्यांकन, न्यूयार्क में हाजिर खरीद और बिक्री की दरों के मासिक औसत के आधार पर किया गया है। जून, 1972 तक अन्य विदेशी मुद्राओं में रखी रकम का मूल्यांकन, सम-मूल्यों/केन्द्रीय दरों के अनुसार किया गया है किन्तु मई से नवम्बर, 1971 तक डयूश मार्क तथा सितम्बर से नवम्बर, 1971 तक येन और पौण्ड स्टर्लिंग का मूल्यांकन लन्दन में हाजिर खरीद और बिक्री की दरों के अनुसार किया गया है। जुलाई, 1972 से पौण्ड में रखी रकम का मूल्यांकन बैंक की हाजिर खरीद और बिक्री दरों के औसत के आधार पर किया गया है अप्रैल। 1974 तक कनाडी डालरों समेत अन्य विदेशी मुद्राओं की राशियों का मूल्यांकन लन्दन की हाजिर खरीद और बिक्री की दरों के मासिक औसत पर आधारित डालर--स्टर्लिंग दरों और मई 1974 से मूल्यांकन लन्दन की हाजिर खरीद और बिक्री की दरों के मासिक औसत के अनुसार किया गया है।

टिप्पणी 1--रेखा के नीचे दिये गये आंकड़ों की तुलना जून, 1966 में रुपये का अवमूल्यन किये जाने के परिणामस्वरूप इसके ऊपर दिये गये आंकड़ों के साथ नहीं की जा सकती।

2--अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ किये गये लेन-देनों के सम्बन्ध में कोष्ठकों में दिखाये गये 1966-67 के आंकड़े दस लाख अमरीकी डालरों में हैं अमरीकी डालरों की दर 7.50 रुपये है।

: भारत का भुगतान शेष(समंजित)*

(करोड़ रुपयों में)

	1961-62 अन्तिम	1965-66 अन्तिम	1966-67 अन्तिम	1967-68 संशोधित	1968-69 प्रारम्भिक	1969-70 प्रारम्भिक	1970-71 प्रारम्भिक	1971-72 प्रारम्भिक	1972-73 प्रारम्भिक
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1 आयात[1]—लागत	996.3	1367.9	1991.1	2055.7	1740.5	1582.3	1720.4	1993.6	2146.5
बीमा भाड़ा									
(क) पी० एल० 480 शीर्षक I**	86.3	250.3	309.0	292.9	117.9	94.8	49.9	8.6	0.1
(ख) अन्य	910.0	1117.6	1682.1	1762.8	1622.6	1487.5	1670.5	1985.0	2146.4
2. निर्यात—जहाज तक निःशुल्क	668.3	784.5	1086.5	1257.9	1367.4	1403.9	1402.7	1555.4	1895.5
3. व्यापार शेष (2–1)	−328.0	−583.4	−904.6	−797.8	−373.1	−178.7	−317.7	−438.2	−251.0
4. मुद्रा से भिन्न सोने का लेन-देन (निवल)	..	..	..	..	..	..	13.1	..	..
5. अदृश्य—									
(i) प्राप्तियां[2]	173.5	206.2	260.6	287.7	320.5	327.0	333.6	366.3	388.6
(ii) अदायगियां									
जिसमें विदेशी ऋणों व उधारों का ब्याज व सेवा सम्बन्धी अदायगियां[6]	203.0 (46.0)	272.1 (94.4)	398.8 (150.2)	441.1 (169.8)	454.9 (184.0)	476.1 (189.6)	502.8 (203.0)	503.7 (198.7)	526.7 (217.9)
(iii) निवल	−29.5	−65.9	−138.2	−153.4	−134.4	−149.1	−169.2	−137.4	−138.1
6. चालू खाता (निवल)	−357.5	−649.3	−1042.8	−951.2	−507.5	−327.5	−473.8	−575.5	−389.1
7. पूंजीगत लेन-देन									
(क) गैर-सरकारी[3]									
(i) प्राप्तियां	30.4	34.9	24.5	29.5	20.1	11.7	15.7	13.4	9.9
(ii) अदायगियां	36.4	49.7	57.5	45.0	27.4	33.7	29.8	21.2	23.6
(iii) शुद्ध	−6.0	−14.8	−33.0	−15.5	−7.3	−22.0	−14.1	−7.8	−13.7
(ख) सरकारी[4]									
(i) प्राप्तियां	108.4	178.6	158.3	250.3	188.4	175.2	286.4	231.9	194.7
(ii) अदायगियां	96.7	166.4	72.5	115.9	118.5	135.7	278.7	98.7	190.3
(iii) निवल	11.7	12.2	85.8	135.3	69.9	39.5	7.7	133.2	4.4
(ग) ऋण परिशोधन सम्बन्धी अदायगियां (सकल)[6]	−60.3	−84.7	−143.8	−193.8	−184.3	−215.5	−231.0	−249.7	−286.8
(घ) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि से रुपयों की फिर से खरीद	−60.7	−35.7	−43.1	−43.2	−58.5	−125.4	−154.0	−−	
(ङ) बैंकों की पूंजी (निवल)	−2.5	2.6	5.7	10.3	−12.0	25.8	1.2	15.5	−7.0
8 भूल-चूक	7.8	−12.4	13.4	−74.8	−113.7	−14.5	−78.7	−65.2	−

(6 से 8)	−467.5	−782.1	−1157.8	−1132.9	−813.4	−639.6	−942.7	−749.6	−723.8
जिसकी वित्त व्यवस्था इस प्रकार की जायगी :									
10. विदेशी सहायता—									
(क) ऋण (पी० एल० 480 के ऋणों को छोड़कर) . . .	225.3	471.1	598.4	755.0	637.8	614.7	632.2	651.9	611.8
(ख) अनुदान (पी० एल० 480 शीर्षक 1 के अनुदानों को छोड़कर) . .	30.5	43.5	124.6	88.2	95.8	73.4	96.5	112.9	78.5
(ग) पी० एल० 480 शीर्षक I (सकल)	86.3	250.3	309.0	292.9	117.9	94.8	49.9	8.6	0.1
जोड़ (क+ख+ग)	342.1	764.9	1032.0	1136.1	851.5	782.9	778.6	773.4	690.4
11. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से निकासियां (सकल)	119.1	65.5	89.3	67.6	..	..	..	..	..
12. एस०डी०आर० का नियतन	..	..	.	..	.	94.5	75.4	74.7	.
13. प्रारक्षित निधि में कमी (+) वृद्धि (−)	6.3	−48.3	36.5	−70.8	−38.1	—237.8	88.7	−98.5	33.4
जोड़ (10 से 13)	467.5	782.1	1157.8	1132.9	813.4	639.6	942.7	749.6	723.8

टिप्पणी :—इस सारणी में कुछ मदों के संबंध में दिये गये आंकड़े भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा प्रकाशित इसी प्रकार के आंकड़ों से मेल नहीं खाते। यह अन्तर उपर्युक्त सारणी में पी० एल० 480 सहायता संबंधी प्राप्तियों और अदायगियों से समायोजन करने के कारण है। ये प्राप्तियां और अदायगियां क्रमशः विदेशी सहायता और आयात के अन्तर्गत एक साथ दी गयी हैं और खाते के अन्य शीर्षकों में से निकाल दी गयी हैं। उपर्युक्त सारणी में भुगतान शेष संबंधी जो आंकड़े दिये गये हैं वे आर्थिक समीक्षा के 1966-67 से पहले के संस्करणों में समायोजित भुगतान-शेष की सारणियों से भिन्न हैं। उपर्युक्त सारणी में विदेशी ऋणों के ब्याज और मूल की अदायगियों में (पहले के संस्करणों के विपरीत) रुपयों में चुकाये जाने वाले ऋणों की वापसी अदायगियां शामिल हैं।

1. इसमें पी० एल० 480 के अन्तर्गत आयात की गयी वस्तुओं का खर्च शामिल नहीं है जो शुरू में भारत द्वारा दिया जाता है लेकिन बाद में अमरीका द्वारा लौटा दिया जाता है।
2. इसमें पी० एल० 480 के अन्तर्गत आयात की गयी वस्तुओं के खर्च की प्राप्ति जो शुरू में भारत द्वारा दिया जाता है लेकिन बाद में अमरीका द्वारा लौटा दिया जाता है और पी० एल० 480 के शीर्षक 1 की निधि से संयुक्त राज्य अमरीका के राजदूतावास द्वारा किया जाने वाला व्यय और पी० एल० 665 के अन्तर्गत प्राप्त विविध रकमें शामिल नहीं हैं। इनमें कोलम्बो आयोजना पी० एल० 480 शीर्षक 1, 2 और 3 आदि के अन्तर्गत प्राप्त अनुदान भी शामिल नहीं हैं।
3. विदेशी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत गैर-सरकारी क्षेत्र को दिये जाने वाले ऋणों से जिनमें कूले निधि से लिये गये ऋण भी शामिल हैं, ली गयी रकमों के रूप में प्राप्तियां तथा उनके अनुरूप भुगतान संबंधी अदायगियां मद संख्या 7(क) (i) तथा 7(क) (ii) में सम्मिलित नहीं हैं और वे क्रमशः मद 10(क) तथा 7(ग) में सम्मिलित हैं।
4. इनमें वे सभी सरकारी पूंजी संबंधी लेन-देन शामिल हैं। जिन्हें अलग से नहीं दिखाया गया है परन्तु पी० एल० 480/665 की शेष जमा रकमों की घट-बढ़ शामिल नहीं हैं।
5. इन आंकड़ों में इस दृष्टि से समायोजन किया गया है कि कूले निधि की रकमों में, ऋणों के तौर पर तथा इस निधि में अन्य खातों में किए जाने वाले अन्तरणों के कारण होने वाले वितरणों के आधार पर जो घट-बढ़ हो, वह इनमें शामिल नहीं हो।
6. रुपयों में किये जाने वाले भुगतान का ब्यौरा इस प्रकार है :—

(करोड़ रुपयों में)

रुपयों में भुगतान (रुपया अदायगी क्षेत्र से भिन्न)	1961-62	1965-66	1966-67	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. विदेशी ऋणों पर ब्याज और सेवा प्रभार	7.8	28.7	40.1	52.0	59.7	62.1	50.6	49.5	48.8
2. भुगतान सम्बन्धी अदायगियां	4.1	14.7	25.3	28.6	31.1	33.2	34.5	46.2	36.0

*मई 1966 के अन्त तक विदेशी मुद्रा के सभी लेन-देनों को अवमूल्यन पूर्व की विनिमय दरों के हिसाब से और उसके बाद के लेन-देनों को विनिमय की वर्तमान दरों के हिसाब से रुपयों में परिवर्तित किया गया है।

**पी० एल० 480 शीर्षक I जिसे आयात के अन्तर्गत मद 1(क) और विदेशी सहायता मद 10(ग) के सामने दिखाया गया है, वस्तु सहायता का द्योतक है, जो रुपयों में देय होती है। पी० एल० 480 परिवर्तनीय मुद्रा सहायता मद 10(क) में और उसके आधार पर किया गया आयात मद 10(ख) में सम्मिलित है।

6.3 : भारत का भुगतान शेष (समंजित)*

	तीसरी आयोजना वार्षिक औसत		1967-68 संशोधित		1969-70 प्रारम्भिक		1970-71 प्रारम्भिक		1971-72 प्रारम्भिक		1972-73 प्रारम्भिक	
	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1. आयात—लागत बीमा, भाड़ा, सहित	1209.6	2540.2	2055.7	2740.9	1582.3	2109.7	1720.4	2293.9	1993.6	2678.0	2146.5	2862.0
(क) पी० एल० 480 शीर्षक	170.9	358.9	292.9	390.6	94.8	126.4	49.9	66.5	8.6	11.5	0.1	0.1
(ख) अन्य . .	1038.7	2181.3	1762.8	2350.3	1487.5	1983.3	1670.5	2227.4	1985.0	2666.5	2146.4	2861.9
2. निर्यात—जहाज तक निःशुल्क .	747.2	1569.1	1257.9	1677.2	1403.9	1871.8	1402.7	1870.3	1555.4	2090.9	1895.5	2527.3
3. व्यापार शेष (2–1) . .	−462.4	−971.1	−797.8	−1063.7	−178.4	−237.9	−317.7	−423.6	−438.2	−587.1	−251.0	−334.7
4. मुद्रा से भिन्न सोने का लेने देन (निवल)	3.2	6.7	--	--	--	--	13.1	17.5	--	--	--	--
5. अदृश्य												
(i) प्राप्तियां[2] . .	182.5	383.2	287.7	383.6	327.0	436.0	333.6	444.8	366.3	492.3	388.6	518.1
(ii) अदायगियां . .	236.8	497.2	441.1	588.1	476.1	634.8	502.8	670.4	503.7	677.6	526.7	702.2
जिनमें विदेशी ऋणों का ब्याज और सेवा सम्बन्धी अदायगियां[6] .	(68.4)	(143.6)	(169.8)	(226.4)	(189.6)	(252.8)	(203.0)	(270.7)	(198.7)	(267.4)	(217.9)	(290.5)
(iii) निवल . .	−54.3	−114.0	−153.4	−204.5	−149.1	−198.8	−169.2	−255.6	−137.4	−185.3	−138.1	−184.1
6. चालू खाता (निवल) . .	−513.5	−1078.4	−951.2	−1268.2	−327.5	−436.7	−473.8	−631.7	−575.6	−772.4	−389.1	−518.8
7. पूंजीगत लेने-देन												
(क) गैर सरकारी[3]												
(i) प्राप्तियां . .	34.4	72.2	29.5	39.3	11.7	15.6	15.7	20.9	13.4	17.9	9.9	13.2
(ii) अदायगियां . .	41.6	87.3	45.0	60.0	33.7	44.9	29.8	39.7	21.2	28.5	23.6	31.5
(iii) निवल . .	−7.2	−15.1	−15.5	−20.7	−22.0	−29.3	−14.1	−18.8	−7.8	−10.6	−13.7	−18.3
(ख) सरकारी[4] . .												
(i) प्राप्तियां . .	99.5	208.9	250.3	333.7	175.2	233.6	286.4	381.9	231.9	311.7	194.7	259.6
(ii) अदायगियां . .	72.6	152.4	115.0	153.3	135.7	180.9	278.7	371.6	98.7	132.6	190.3	253.7
(iii) निवल . .	26.9	56.5	135.3	180.4	39.5	52.7	7.7	10.3	133.2	179.1	4.4	5.9
(ग) परिशोधन–सम्बन्धी अदायगियां (कुल)[6] . .	−66.5	−139.7	−193.8	−258.4	−215.5	−287.3	−231.0	−308.0	−249.7	−336.2	−286.8	−382.4

(घ) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि से रुपयों की पुनः खरीद	−33.6	−70.5	−43.2	−57.6	−125.4	−167.2	−154.0	−205.3	—	—	--	—
(ङ) बैंकों की पूंजी 5 (निवल) .	−0.8	−1.7	10.3	13.7	25.8	34.4	1.2	1.6	15.5	21.0	−7.0	—9.3
8. भूल चूक	- 20.3	−42.6	−74.8	−99.7	14.5	19.3	−78.7	105.0	−65.2	−86.4	−31.6	—42.1
9. कुल घाटा (6 से 8 तक) जिसकी वित्त व्यवस्था इस प्रकार की जाएगी . .	−615.0	−1291.5	−1132.9	−1510.5	−639.6	−852.7	−942.7	−1256.9	−749.6	−1005.5	−723.8	—965.0
10. विदेशी सहायता												
(क) ऋण (पी० एल० 480 के ऋणों को छोड़कर) .	364.8	766.1	755.0	1006.7	614.7	819.5	632.2	842.9	651.9	875.1	611.8	815.7
(ख) अनुदान (पी० एल० 480 शीर्षक 1 के अनुदानों को छोड़कर)	29.3	61.5	88.2	117.6	73.4	97.9	96.5	128.7	112.9	151.6	78.5	104.7
(ग) पी० एल० 480 शीर्षक । (सकल) . .	170.9	358.9	292.9	390.5	94.8	126.4	49.9	66.5	8.6	11.4	0.1	0.1
जोड़ (क+ख+ग) . .	565.0	1186.5	1136.1	1514.8	782,9	1043,8	778.6	1038.1	773.4	1038.1	690.4	920.5
11. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि से निकासियां (सकल)	48.8	102.5	67.6	90.1	--	—	--	—	--	--	—	—
12. विशेष आहरण अधिकारों का नियतन	—	--	--	--	94.5	126.0	75.4	100.5	74.7	102.6	--	—
13. प्रारक्षित निधि में कमी (−) वृद्धि (+)	1,2	2.5	−70.8	−94.4	−237.8	−317.1	88.7	118.3	−98.5	−135.2	33.4	44.5
जोड़ (10 से 13)	615.0	1291.5	1132.9	1510.5	639.6	852.7	942.7	1256.9	749.6	1005.5	723.8	965.0

1. पाद-टिप्पणियां सारणी 6.2 में देखिए।

टिप्पणी :—डालर की रकम निम्नलिखित विनिमय-दर के आधार पर निर्धारित की गयी है :

मई 1966 तक 1 डालर = 4 76 रुपये

दिसम्बर 1971 तक 1 डालर = 7.50 रुपये

जनवरी-मार्च 1972 के लिए 1 डालर = 7.28 रुपये

1972-73 के लिए 1 डालर — 7.50 रुपये

6·4 : भारत का भुगतान शेष : चालू खाते की अदृश्य मदें

(अनुदानों को छोड़ कर)

	तीसरी आयोजना का वार्षिक औसत		1967-68 संशोधित		1968-69 अनन्तिम	1969-70 अनन्तिम	1970-71 अनन्तिम	1971-72 अनन्तिम	1972-73 अनन्तिम
	करोड़ रुपये	दस लाख डालर	करोड़ रुपये	दस लाख डालर	करोड़ रुपये	करोड़ रुपये	करोड़ रुपये	करोड़ रुपये	करोड़ रुपये
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. विदेश यात्रा—									
प्राप्ति	16.0	33.6	20.1	26.8	4.9*	31.7@	27.9@	31.5@	37.9@
अदायगी	11.0	23.1	15.0	20.0	14.4	15.2	17.8	19.5	19.3
निवल	5.0	10.5	5.1	6.8	—9.5	16.5	10.1	12.0	18.6
2. परिवहन—									
प्राप्ति	52.9	111.1	94.0	125.3	99.3	100.4	106.5	111.7	121.7
अदायगी	28.7	60.3	59.7	79.6	65.1	72.0	78.4	68.3	71.0
निवल	24.2	50.8	34.3	45.7	34.2	28.4	28.1	43.4	50.7
3. बीमा—									
प्राप्ति	8.4	17.6	12.4	16.5	12.7	12.9	11.7	13.5	16.7
अदायगी	5.4	11.3	6.8	9.0	9.1	13.4	12.2	18.5	12.2
निवल	3.0	6.3	5.6	7.5	3.6	—0.5	—0.5	—5.0	4.5
4. पूंजी से आय									
प्राप्ति	11.2	23.5	20.1	26.8	25.8	33.8	48.5	35.0	29.6
अदायगी	106.4	223.4	230.6	307.5	239.7	251.6	274.2	262.4	285.7
जिनमें से विदेशी ऋणों और उधार ली गयी रकमों का ब्याज और उनकी सेवा—									
संबन्धी अदायगियां	(68.4)	(143.6)	(169.8)	(226.3)	(184.0)	(189.6)	(203.0)	(198.7)	(217.9)
निवल	—95.2	—199.9	—210.5	—280.7	—213.9	—217.8	—225.7	—227.4	—256.1
5. सरकार की									
प्राप्ति 1	15.1	31.7	24.2	32.3	24.4	16.6	16.7	15.9	21.5
अदायगी जो अन्यत्र शामिल नहीं है 2	20.8	43.7	24.6	32.8	21.0	23.5	23.0	24.0	22.7
निवल	—5.7	—12.0	—0.4	—0.5	3.4	—6.9	—6.3	—8.1	—1.2
6. विविध—									
प्राप्ति 3	28.2	59.2	44.3	59.1	59.7	41.7	40.8	45.0	55.1
अदायगी	44.9	94.3	67.4	89.9	72.6	69.4	77.6	80.4	84.0
निवल	—16.7	—35.1	—23.1	—30.8	—12.9	—27.7	—36.8	—35.4	—28.9
7. अन्तरण से की गयी अदायगी									
(क) सरकारी									
प्राप्ति	0.7	1.5	0.1	0.1	..	0.3	1.0	1.9	2.0
अदायगी	4.4	9.2	18.1	24.1	16.7	16.8	6.4	18.3	20.5
निवल	—3.7	—7.7	—18.0	—24.0	—16.7	—16.5	—5.4	—16.4	—18.5
(ख) गैर-सरकारी									
प्राप्ति	49.9	104.8	72.5	96.7	93.6	89.8	80.5	111.8	104.1
अदायगी	15.2	31.9	18.9	25.2	16.3	14.2	13.2	12.3	11.3
निवल	34.7	72.9	53.6	71.5	77.3	75.6	67.3	99.5	92.8

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
8. जोड़ (1 से 7 तक)									
प्राप्ति . .	182.5	383.2	287.5	383.6	320.5	327.0	333.6	366.3	388.6
अदायगी . .	236.8	497.2	441.1	588.1	454.9	476.1	502.8	503.7	526.7
निबल . .	—54.3	—114.0	—153.6	—204.5	—134.4	—149.1	—169.2	—137.4	—138.1

1. इसमें पी० एल० 480 के अन्तर्गत किये जाने वाले आयात का खर्च शामिल नहीं किया गया है जो शुरू में तो भारत द्वारा दिया जाता है लेकिन बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा लौटा दिया जाता है । इसमें पी० एल० 480 प्रतिरूप निधि में से संयुक्त राज्य अमेरिका के दूतावास द्वारा किये जाने वाले खर्च की रकमें भी शामिल नहीं हैं ।
2. इसमें सिन्धु नदी जल सन्धि की शर्तों के अधीन भारत के अंशदान के रूप में सिन्धु नदी क्षेत्र विकास निधि में 1961–62, 1962–63 और 1963–64 इन तीनों वर्षों में से प्रत्येक वर्ष में 8.3 करोड़ रुपयों की दी गई धनराशि शामिल है।
3. इसमें पी० एल० 665 निधि से मिलने वाली रकम शामिल नहीं की गयी है ।
4. इसमें सिन्धु नदी जल सन्धि की शर्तों के अनुसार सिन्धु नदी-क्षेत्र विकास निधि में भारत के अंशदान के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक को 1964–65 और 1965-66 में अदा की गई 8.3 करोड़ रुपये की रकम तथा 1968-69 और 1969-70 में 11.2 करोड़ रुपये की रकम शामिल है ।

टिप्पणी:— (1) इस सारणी में जो जानकारी दी गयी है वह सारणी 6.3 की मद 5 का ब्यौरा है ।
(2) मई, 1966 के अन्त तक विदेशी मुद्रा में किये गये सभी लेन-देनों को अवमूल्यन से पहले की विनिमय दर के अनुसार तथा इसके बाद के लेन-देनों को चालू विनिमय दर के अनुसार रुपयों में बदल कर दिखाया गया है ।
(3) संभव है कि पूर्णांकन के कारण इन मदों का जोड़ दिये गये जोड़ से हमेशा मेल न खाये।
(@) अनन्तिम अनुमान। *1968–69 के आंकड़े पूरे नहीं हैं ।

6.5: भारत का भुगतान शेष : पूंजी खाते की कुछ मदें

	तीसरी आयोजना का वार्षिक औसत		1967-68 संशोधित		1968-69 प्रारम्भिक	1969-70 प्रारम्भिक	1970-73 प्रारम्भिक	1971-72 प्रारम्भिक	1972-73 प्रारम्भिक
	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में	करोड़ रुपयों में	दस लाख डालरों में	करोड़ रुपयों में	करोड़ रुपयों में	करोड़ रुपयों में	करोड़ रुपयों में	करोड़ रुपयों में
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. गैर-सरकारी (गैर-बैंकिंग)									
प्राप्ति . .	34.4	72.2	29.5	39.3	20.1	11.7	15.7	13.4	9.9
अदायगी . .	41.6	87.3	45.0	60.0	27.4	33.7	29.8	21.2	23.6
निवल . .	—7.2	—15.1	—15.5	—20.7	—7.3	—22.0	—14.1	—7.8	—13.7
(क) दीर्घावधिक									
प्राप्ति . .	29.1	61.1	20.7	27.6	13.9	8.3	14.5	12.6	9.4
अदायगी .	35.0	73.5	33.2	44.3	24.8	31.6	27.5	18.9	22.5
निवल . .	—5.9	—12.4	—12.5	—16.7	—10.9	—23.3	—13.0	—6.3	—13.1
(ख) अल्पावधिक									
प्राप्ति . .	5.3	11.1	8.8	11.7	6.2	3.4	1.2	0.8	0.5
अदायगी . .	6.6	13.8	11.8	15.7	2.6	2.1	2.3	2.3	1.1
निवल . .	—1.3	—2.7	—3.0	—4.0	—3.6	1.3	—1.1	—1.5	—0.6
2. बैंकिंग (भारतीय रिजर्व बैंक को छोड़कर)									
प्राप्ति . .	47.0	98.7	147.8	197.0	39.6	59.3	50.2	55.3	73.1
अदायगी . .	47.8	100.4	137.5	183.3	51.6	33.5	49.0	39.8	80.1
निवल . .	—0.8	—1.7	10.3	13.7	—12.0	25.8	1.2	15.5	—7.0
3. सरकारी-विविध—									
प्राप्ति[1] . .	99.5	208.9	250.3	333.7	188.4	175.2	286.4	231.9	194.7
अदायगी . .	72.6	152.4	115.0	153.3	118.5	135.7	278.7	98.7	190.3
निवल . .	26.9	56.5	135.3	180.4	69.9	39.5	7.7	133.2	4.4
4. उपर्युक्त मदों का जोड़									
प्राप्ति . .	180.9	379.8	427.6	570.0	248.1	246.2	352.3.	300.6	277.7
अदायगी . .	162.0	340.1	297.5	396.6	197.5	202.9	357.5	159.7	294.0
निवल . .	18.9	39.7	130.1	173.4	50.6	43.3	—5.2	140.9	—16.3

[1]इसमें ऋण के चुकाने पर मिली रकम शामिल है ।

टिप्पणी :

(i) इस सारणी में जो जानकारी दी गयी है वह सारणी 6.3 की मद संख्या 7(क), 7(ख) और 7(ङ) का ब्यौरा है ।

(ii) मई, 1966 के अन्त तक विदेशी मुद्रा में किये गये सभी लेन-देनों को अवमूल्यन से पहले की विनियम दर के अनुसार तथा उसके बाद की अवधि के लेन-देनों को चालू विनिमय दर के अनुसार रुपयों में बदल कर दिखाया गया है ।

(iii) सम्भव है कि पूर्णांकन के कारण इन मदों का जोड़ दिये गये जोड़ से हमेशा मेल न खाये ।

6.6 : आयात की गयी मुख्य वस्तुएं

(करोड़ रुपये—अवमूल्यन के बाद)

वस्तुएं	1960-61	1965-66	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74	अप्रैल—सितम्बर	
								1974-75	1973-74
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. उपभोक्ता वस्तुएं	285.7	507.2	261.0	213.0	131.2	80.8	473.1	252.1	131.4
दालों से भिन्न अनाज और उनसे बनी वस्तुएं	285.7	507.2	261.0	213.0	131.2	80.8	473.1	252.1	131.4
2. कच्चा माल और मध्यवर्ती वस्तुएं	776.1	776.6	757.5	891.1	1077.4	1092.4	1646.7	1275.3	624.0
(क) काजू (अपरिष्कृत)	15.1	23.7	27.6	29.4	27.9	31.8	28.8	21.4	13.6
(ख) गोला	18.3	9.9	2.8	3.2	1.7	0.7	नगण्य	—	नगण्य
(ग) कच्चा रबड़ (कृत्रिम रबड़ और रबड़ की पुरानी वस्तुओं से फिर से तैयार किये गये रबड़ सहित)	17.0	3.5	9.6	3.8	3.6	3.7	3.9	3.2	1.9
(घ) रेशे	159.6	121.6	111.1	126.7	138.2	114.9	92.8	34.5	58.4
(1) कच्चा ऊन	16.4	8.1	16.5	15.1	11.8	8.9	16.1	14.1	6.4
(2) कपास	128.8	72.8	82.8	98.8	113.4	90.9	52.0	14.1	32.8
(3) कच्चा जूट	12.0	8.8	1.1	0.1	--	1.1	12.2	1.7	11.4
(ङ) पैट्रोलियम तेल और चिकनाई के पदार्थ	109.1	107.5	137.9	135.9	194.1	204.0	560.3	586.5	152.6
(च) प्राणिजन्य और वनस्पतिजन्य तेल और चिकनाई	7.2	24.2	29.6	38.5	46.5	24.9	64.9	24.9	21.4
(छ) उर्वरक और रसायनिक पदार्थ	140.9	183.7	214.5	216.5	240.9	281.8	389.3	293.6	148.0
(1) उर्वरक और उर्वरक पदार्थ	23.4	81.4	117.3	99.9	111.3	145.7	226.1	194.0	78.0
(2) रसायनिक पदार्थ और यौगिक	61.8	56.5	67.4	68.0	71.8	91.4	105.3	66.4	44.5
(3) रंगने, चमड़ा कमाने और रंग करने के पदार्थ	20.3	10.4	7.1	9.2	8.4	9.1	10.3	6.1	5.1
(4) औषधीय और भेषज उत्पाद	16.5	13.8	18.3	24.3	26.6	23.2	26.4	16.2	12.5
(5) प्लास्टिक पदार्थ, पुनरुत्पादित सेलुलोस और कृत्रिम राल	9.0	9.1	8.4	8.1	9.2	11.9	15.2	8.2	6.9
(ज) लुगदी और रद्दी कागज	10.6	8.8	12.5	12.3	9.6	10.1	9.3	5.7	6.6
(झ) कागज, गत्ता और उससे बनी वस्तुएं	19.1	21.1	23.7	25.1	34.9	31.4	28.9	24.0	14.3
(ञ) धातु-भिन्न खनिज से निर्मित वस्तुएं	11.7	10.0	32.2	33.3	40.0	54.2	86.2	33.8	40.9
(ट) लोहा और इस्पात	193.0	154.3	81.5	147.0	237.6	225.8	242.6	163.5	104.7
(ठ) अलौह धातुएं	74.5	108.3	74.5	119.4	102.4	109.1	139.7	84.2	61.6
3. पूंजीगत माल	560.5	803.7	403.2	404.0	482.7	550.8	650.5	331.4	293.7
(क) धातु से बनी वस्तुएं	36.1	28.6	7.3	9.3	12.1	18.8	21.5	12.6	9.1
(ख) बिजली की मशीनों, उपकरणों से भिन्न मशीनें, उपकरण आदि	320.3	525.7	280.4	257.8	270.9	297.9	416.5	205.6	190.5
(ग) बिजली की मशीनें, उपकरण आदि	90.1	138.3	64.3	70.4	105.1	134.0	124.1	66.4	54.0
(घ) परिवहन उपकरण	114.0	111.1	51.2	66.5	94.6	100.1	88.4	46.8	40.1
4. अन्य अवर्गीकृत वस्तुएं	172.7	130.9	160.4	126.1	133.2	143.4	150.6	74.2	62.6
जोड़	1795.0	2218.4	1582.1	1634.2	1824.5	1867.4	2920.9	1933.0	1111.7

स्रोत— भारत के विदेशी व्यापार के मासिक आंकड़े महानिदेशालय वाणिज्यिक सूचना तथा सांख्यिकीय, कलकत्ता से प्राप्त

6.7 निर्यात की गयी मुख्य वस्तुएं

वस्तुएं	मात्रा इकाई	1960-61		1965-66		1969-70		1970-71	
		मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. जूट से बनी वस्तुएं	हजार मेट्रिक टन	799	212.9	900	288.0	571	206.7	561	190.4
2. चाय .	दस लाख किलोग्राम	199	194.7	197	180.9	174	124.5	199	148.3
3. सूती कपड़ा .	मूल्य		90.6		87.4		69.7		75.3
(i) मिल का बना	दस लाख वर्ग मीटर	602	83.1	513	74.3	406	62.4	415	67.5
(ii) हाथकरघा का बना	दस लाख मीटर	26	7.5	40	13.1	27	7.3	28	7.8
4. नारियल के रेशे तथा उससे बनी वस्तुएं	हजार मेट्रिक टन	71	13.7	70	16.6	54	13.4	49	13.0
5. कच्चा लोहा .	दस लाख मेट्रिक टन	3	26.8	12	66.3	16	94.6	21	117.3
6. खली . .	हजार मेट्रिक टन	433	22.5	829	54.6	705	41.5	879	55.4
7. चमड़ा और चमड़े से बनी वस्तुएं .	मूल्य		39.3		44.8		81.5		72.2
8. काजू की गिरी .	दस लाख किलोग्राम	44	29.8	51	43.1	61	57.4	50	52.1
9. तम्बाकू .	दस लाख किलोग्राम	47	24.8	59	33.3	56	33.4	50	32.6
10. इंजीनियरी का सामान	मूल्य		13.4		26.2		102.5		130.4
11. काफी . .	दस लाख किलोग्राम	20	11.4	27	20.4	32	19.6	32	25.1
12. अभ्रक . .	दस लाख किलोग्राम	28	16.0	43	17.8	24	15.2	27	15.6
13. चीनी . .	हजार मेट्रिक टन	56	3.8	311	16.5	82	8.6	348	27.6
14. काली मिर्च .	दस लाख किलोग्राम	17	13.4	26	17.5	22	16.2	18	15.3
15. कच्चा मैंगनीज .	हजार मेट्रिक टन	1166	22.1	1352	17.4	1160	11.1	1636	14.0
16. खालें, बिना कमायी हुई और रोएंदार खालें.	मूल्य		14.9		15.0		8.4		3.8
17. कागज .	हजार मेट्रिक टन	33	13.7	36	15.3	36	14.7	32	14.0
18. खनिज, ईंधन, चिकनाने के पदार्थ आदि.	मूल्य		11.7		14.7		9.5		12.6
19. लोहा और इस्पात (लोहा मैंगनीज और लोहा मिश्रित धातुओं से भिन्न) .	मूल्य		8.7		13.1		64.2		67.2
20. रसायन तथा सम्बद्ध पदार्थ .	मूल्य		5.4		14.4		22.2		29.4
21. मछली और मछलियों से बनी वस्तुएं .	दस लाख किलोग्राम	20	7.3	15	10.7	30	30.8	33	30.5
22. नकली रेशम और उससे बना कपड़ा .	दस लाख मीटर	27	5.0	45	7.6	15	3.6	20	5.3
23. जूते . .	दस लाख जोड़े	5	4.9	9	8.2	12	9.0	13	11.4
24. वनस्पति तेल (सारीय और असारीय) .	दस लाख किलोग्राम	63	19.9	25	10.1	23	9.3	23	10.8
जोड़—(अन्य वस्तुएं सहित) .			1039.8		1268.9		1413.3		1535.2

स्रोत—भारत के विदेश व्यापार के मासिक आंकड़े—वाणिज्यिक सूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय, कलकत्ता से प्राप्त

भुगतान शेष

करोड़ रुपयों में अवमूल्यन के बाद

						अप्रैल--सितम्बर			
1971-72		1972-73		1973-74		1974-75		1973-74	
मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
671	265.3	581	250.0	563	227.3	355	169.4	576	111.2
207	156.3	193	147.3	190	144.9	93	88.1	95	60.0
	76.6		100.9		192.2		93.6		77.3
382	66.6	449	84.4	646	160.1	217	77.3	305	64.6
29	10.0	47	16.5	68	32.1	30	16.3	29	12.7
47	13.4	47	14.3	46	15.3	20	8.1	20	6.8
20	104.7	21	109.8	24	132.8	8	49.3	10	55.2
742	40.2	1001	74.8	1225	170.6	377	43.6	635	90.5
	90.8		174.5		171.3		76.5		93.3
60	61.3	66	68.8	52	74.4	36	66.1	34	46 2
61	45.1	98	63.9	81	70.9	50	56.2	48	45.7
	122.3		141.0		201.3		141.1		75.9
36	22.1	51	32.9	53	46.0	28	32.8	31	26.4
23	15.4	27	16.6	26	13.0	14	9.2	14	4.2
317	30.2	102	13.3	249	42.2	241	100.7	43	5.6
19	14.8	20	14.3	32	29.5	9	11.7	12	10.1
1047	10.6	832	8.7	758	9.0	477	6.9	368	4.1
	0.7		0.9		1.5		0.3		—
32	16.3	38	21.6	55	32.4	16	12.3	23	12.3
	11.6		32.0		15.3		9.3		5.7
	25.5		23.1		25.1		3.6		15.6
	30.4		35.3		49.3		43.6		17.1
33	42.0	35	54.5	47	88.4	17	31.8	22	41.7
25	7.5	25	13.7	77	33.9	18	10.7	25	8.2
15	11.6	14	12.6	14	13.2	8	9.1	5	4.9
25	11.5	55	29.6	40	37.0	37	33.3	24	21.2
	1608.2		1970.8		2483.2		1514.6		1074.8

6.8 कुल अनुमानित सप्लाई में आयात का अंश

(क) अनुमानित कुल सप्लाई

(ख) अनुमानित कुल सप्लाई में आयात का प्रतिशत

वस्तु	इकाई		1950-51	1955-56	1960-61	1965-66	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74
1	2		3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. अन्न	(दस लाख मीट्रिक	(क)	60.6	71.9	84.5	86.9	104.5	107.2	104.8	104.3	102.9
	टन)	(ख)	(5.9)	(1.7)	(4.7)	(9.7)	(3.9)	(2.8)	(1.8)	(0.8)	(4.3)
2. कपास	(प्रति 180 किलो-	(क)	39.9	49.6	58.4	64.3	66.2	72.8	73.3	74.4*	69.8†
	ग्राम की लाख गांठें)	(ख)	(27.8)	(12.3)	(16.4)	(10.9)	(10.9)	(11.1)	(10.0)	(6.7)	(1.9)
3. चीनी मिलों की	(लाख रुपये)	(क)	100	419	545	776	1407	1398	1772	1828	2216
मशीनरी		(ख)	(100.0)	(95.2)	(19.3)	(0.8)	(1.2)	(0.6)	(0.1)	(0.4)	(0.3)
4. कपड़ा बनाने की	(लाख रुपये)	(क)	उपलब्ध	1233	3361	7507	5148	6759	7990	8588	उपलब्ध
मशीनें			नहीं								नहीं
		(ख)	उपलब्ध	(67.6)	(69.1)	(37.9)	(18.9)	(13.2)	(15.9)	(19.1)	उपलब्ध
(फालतू पुर्जों और			नहीं								नहीं
सहायक उपकरणों समेत) @											
5. मशीनी औजार	(लाख रुपये)	(क)	295	528	1990	6093	3880	5192	5969	5890	उपलब्ध
धातु का काम		(ख)	(89.8)	(84.8)	(64.8)	(61.8)	(42.8)	(30.4)	(37.3)	(41.1)	नहीं
6. लोहा और	(हजार मीट्रिक टन)	(क)	1391	2162	3715	5416	5216	5173	5864	6242	5542
इस्पात		(ख)	(25.2)	(39.9)	(35.7)	(16.7)	(8.0)	(13.4)	(22.9)	(19.6)	(18.3)
7. एल्युमिनियम	(हजार मीट्रिक टन)	(क)	14.7	23.5	43.7	82.4	137.6	174.2	203.2	175.4	149.5
		(ख)	(72.8)	(68.5)	(58.1)	(25.6)	(1.8)	(3 7)	(10.3)	(1.0)	(1.1)
8. सोडा ऐश	(हजार मीट्रिक टन)	(क)	75	154	251.6	366.7	427.0	449.8	500.1	486.0	491.0
		(ख)	(40.0)	(46.7)	(39.6)	(9.7)	(नगण्य)	(नगण्य)	(2.2)	(0.6)	(0.6)
9. कास्टिक सोडा	(हजार मीट्रिक टन)	(क)	34	96	139.8	292.2	354.0	371.1	388.7	391.8	429.5
		(ख)	(64.7)	(62.5)	(27.7)	(25.4)	(नगण्य)	(नगण्य)	(1.3)	(0.2)	(1.2)
10. ब्लीचिंग पाउडर	(हजार मीट्रिक टन)	(क)	9.4	8.2	7.7	9.2	15.3	14.3	17.3	19.9	15.3
		(ख)	(61.7)	(61.0)	(20.8)	(20.6)	(नगण्य)	(नगण्य)	(नगण्य)	(शून्य)	(शून्य)
11. साइकिल	(हजार)	(क)	264	661	1071	1582	1976	2042	1766	2400	2581
		(ख)	(62.5)	(22.4)	(नगण्य)	(नगण्य)	(नगण्य)	(नगण्य)	(नगण्य)	(शून्य)	(शून्य)
12. सिलाई की	(हजार)	(क)	56	125	304	433	341	236	313	335	260
मशीनें		(ख)	(41.1)	(11.2)	(0.3)	(0.7)	(0.3)	(0.3)	(0.3)	(0.3)	(0.5)
13. अखबारी कागज	(हजार मीट्रिक टन)	(क)	76	84	96	115	193	181	247	194	166
		(ख)	(100.0)	(95.2)	(76.0)	(73.9)	(80.4)	(79.6)	(83.8)	(79.2)	(70.5)

1	2		3	4	5	6	7	8	9	10	11
14. कागज और गत्ता आदि	(हज़ार मीट्रिक टन)	(क)	151	260	378	584	737	770	814	755	739
		(ख)	(23.2)	(26.9)	(7.4)	(4.5)	(1.8)	(1.9)	(1.4)	(2.9)	(2.3)
15. अमोनियम सल्फेट	(हज़ार मीट्रिक टन)	(क)*	423	607	755	1273	1278	989	1100	1243	1141
		(ख)	(88.9)	(34.1)	(47.3)	(67.0)	(44.0)	(16.1)	(13.5)	(14.8)	(7.1)
16. हाथ का बुना सूत और धागा	(हज़ार मीट्रिक टन)	(क)	उपलब्ध नहीं	31.9	84.2	125.5	169.3	191.6	193.1	215.8	185.1
		(ख)	उपलब्ध नहीं	(20.7)	(25.4)	(6.0)	(2.5)	(10.0)	(5.9)	(5.4)	(3.1)

टिप्पणियां :—(1) कपास के सम्बन्ध में अनुमानित कुल सप्लाई के आंकड़े फसली/कृषि वर्षों के हैं। अन्न की कुल सप्लाई का अनुमान कृषि वर्षों में हुए उत्पादन के आधार पर और इसके आयात के आंकड़ों का अनुमान वित्तीय वर्षों के आधार पर लगाया गया है।

(2) अन्न और कपास के आंकड़े वे तीन वर्षों का अर्थात् सम्बद्ध वर्ष के एक वर्ष पहले और एक वर्ष बाद के आंकड़ों का औसत किन्तु 1973-74 के आंकड़ों में दो वर्षों का अर्थात् 1972-73 और 1973-74 अन्न से सम्बन्धित औसत दिया गया है।

(3) अमोनिया सल्फेट का यह आयात केन्द्रीय उर्वरक भंडार के लिए किया गया।

(4) हाथ के बुने सूत और धागे के उत्पादन के आंकड़े कैलेण्डर वर्षों के हैं और इसके आयात के आंकड़े वित्तीय वर्षों के।

@आंकड़ों के स्रोत में परिवर्तन होने के परिणामस्वरूप 1965-66 के आंकड़ों की तुलना पहले के वर्षों के आंकड़ों के साथ पूरी तरह नहीं की जा सकती।

*अंशतः अनुमानित

†अनुमानित

7.1 : कुल विदेशी सहायता

(करोड़ रुपये)

	ऋण	अनुदान	जोड़ (2+3)	पब्लिक ला 480/665 आदि सहायता		
				रुपयों में चुकायी जाने वाली	परिवर्तनीय मुद्रा में चुकायी जाने वाली	कुल जोड़
1	2	3	4	5	6	7
क. स्वीकृत विदेशी सहायता :						
तीसरी आयोजना के अन्त तक	3,808.8	392.0	4,200.8	1,510.8	—	5,711.6
1966–67	1,034.1	79.7	1,113.8	392.7	—	1,506.5
1967–68	398.5	16.8	415.3	235.9	67.6	718.8
1968–69	753.1	68.4	821.5	71.6	53.7	946.8
1969–70	421.8	26.0	447.8	73.6	112.9	634.3
1970–71	705.4	56.5	761.9	—	—	761.9
1971–72	774.5	36.0	810.5	22.5	96.2	929.2
1972–73	639.6	36.6	676.2	—	—	676.2
1973–74	1,129.5	41.1	1,170.6	—	—	1,170.6
जोड़	9,665.3	753.1	10,418.0	2,307.1	330.4	13,055.9
ख. उपयोग की गयी विदेशी सहायता :						
तीसरी आयोजना के अन्त तक	2,768.7	336.9	3,105.6	1,403.2	—	4,508.8
1966–67	674.7	97.1	771.8	359.6	—	1,131.4
1967–68	793.2	60.7	853.9	310.9	30.8	1,195.6
1968–69	679.8	65.2	745.0	84.5	73.1	902.6
1969–70	660.7	26.1	686.8	107.5	62.0	856.3
1970–71	658.9	43.5	702.4	37.7	51.3	791.4
1971–72	671.7	50.5	722.2	8.8	103.1	834.1
1972–73	649.9	12.0	661.9	—	4.3	666.2
1973–74	828.6	20.7	849.3	—	—	849.3
जोड़	8,386.2	712.7	9,098.9	2,312.2	324.6	11,735.7

टिप्पणियां : 1. तीसरी आयोजना के अन्त तक अवमूल्यन से पूर्व की विनियम दर (1 डालर 4.7619 रुपये) और इसके पश्चात् 1970–71 तक अवमूल्यन के बाद की विनिमय दर (1 डालर 7.50 रुपये) के अनुसार रुपये में परिवर्तित किये गये हैं। 1971–72 के लिये सहायता की स्वीकृत और उपयोग की गयी रकमों को रुपयों में बदलने के लिए मई, 1971 से पूर्व विनिमय दरें रखी गयीं हैं। 1972–73 के लिए रुपयों में दिये गये आंकड़े उन केन्द्रीय दरों के आधार पर लिये गये हैं जो दिसम्बर 1971 में मुद्रा सम्बन्धी पुनर्मूल्यन के बाद प्रचलित थीं। 1973–74 से ऋण देने वाले प्रत्येक देश की मुद्रा को रुपयों में परिवर्तित करने के लिये उस देश की तिमाही औसत विनिमय दर को मुद्रा में उपयोग करने के सम्बन्ध में तिमाही आंकड़ों को इस्तेमाल किया गया हैं। ऋण देने वाले देश की मुद्रा की रुपयों में विनिमय की वार्षिक दरों को लागू करके अधिकृत आंकड़े निकाले गये हैं।

2. ऋण सम्बन्धी रकमों में वापस किये गये, पूरे कर दिये गये और रद्द किये गये ऋणों की रकमें शामिल नहीं हैं। पी० एल० 480 के मामले में रकम डूबे करारों की निवल रकमें हैं।

3. उपयोग सम्बन्धी आंकड़ों में सप्लायर के ऋण शामिल है जो कि अधिकृत सहायता के आंकड़ों में पूरी तरह से नहीं दिखाये गये हैं। इसमें रूस से मिली गेहूं सहायता के आंकड़े शामिल नहीं हैं।

4. सम्भव है कि पूर्णांकन के कारण इन मदों का जोड़, दिये गये जोड़ से मेल न खायें।

5. 1974–75 सम्बन्धी मुख्य निर्देशांक, सारणी 7.5 में दिये गये हैं।

7.2 : स्रोतों के अनुसार वर्गीकृत स्वीकृत विदेशी सहायता

(करोड़ रुपये)

स्रोत	सहायता का स्वरूप	तीसरी आयोजना के अंत तक	1966-67	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. सहायता संघ के सदस्य										
(क) ऋण		— 5,048.5	1,188.7	699.1	943.0	627.6	759.1	962.9	676.2	1,069.2
(ख) अनुदान		— 3,181.1	727.9	387.2	753.1	421.8	705.4	774.5	639.6	1,028.1
(ग) पी० एल० 480/665		— 356.6	68.1	8.4	64.6	19.3	53.7	33.7	36.6	41.1
आदि सहायता जिसे :										
(1) रुपयों में वापस करना है		— 1,510.8	392.7	235.9	71.6	73.6	—	22.5	—	—
(2) परिवर्तनीय मुद्रा में वपिस करना है		—	—	67.6	53.7	112.9	—	96.2	—	—
देशवार ब्यौरा :										
(1) आस्ट्रिया	ऋण	8.4	3.5	3.5	0.7	0.8	1.1	0.7	2.1	2.3
	अनुदान	—	—	—	0.4	0.4	0.4	—	—	—
	जोड़	8.4	3.5	3.5	1.1	1.2	1.5	0.7	2.1	2.3
(2) बेल्जियम	ऋण	11.4	—	2.8	9.4	2.3	10.1	3.0	3.6	5.0
(3) कनाडा	ऋण	45.6	41.3	47.8	26.0	49.5	26.9	39.1	55.9	56.8
	अनुदान	174.5	57.7	7.1	52.8	7.0	31.9	27.9	10.8	13.6
	जोड़	220.1	99.0	54.9	78.8	56.5	58.8	67.0	66.7	70.4
(4) डेनमार्क	ऋण	2.4	3.2	3.0	4.0	—	—	—	4.1	—
	अनुदान	—	—	—	—	0.8	—	—	0.1	—
	जोड़	2.4	3.2	3.0	4.0	0.8	—	—	4.2	—
(5) फ्रांस	ऋण	67.1	21.0	—	40.7	—	41.9*	24.0	66.1	56.2
	अनुदान	—	—	—	—	1.4	—	—	—	—
	जोड़	67.1	21.0	—	40.7	1.4	41.9	24.0	66.1	56.2
(6) पश्चिम जर्मनी	ऋण	442.5	48.2	48.8	45.4	46.8	51.8	51.4	58.3	87.3
	अनुदान	2.7	1.7	0.6	4.0	6.5	3.5	3.9	5.0	6.7
	जोड़	445.2	49.9	49.4	49.4	53.3	55.3	55.3	63.3	94.0
(7) इटली	ऋण	81.0	23.3	—	4.1	17.5	6.0	6.0	10.1	13.6
(8) जापान	ऋण	165.4	33.3	39.0	33.8	33.8	24.3†	110.1	59.1	96.3
	अनुदान	0.5	—	—	—	—	—	—	—	—
	जोड़	165.9	33.3	39.0	33.8	33.8	24.3	110.1	59.1	96.3
(9) नीदरलैंड	ऋण	22.8	8.3	8.3	6.8	8.3	8.3	10.4	15.3	19.3
	अनुदान	—	—	—	0.4	0.5	0.5	0.5	0.5	0.6
	जोड़	22.8	8.3	8.3	7.2	8.8	8.8	10.9	15.8	19.9
(10) नार्वे	ऋण	—	—	—	1.5	—	—	—	—	—
	अनुदान	5.1	2.2	—	—	—	1.3	—	—	—
	जोड़	5.1	2.2	—	1.5	—	1.3	—	—	—
(11) स्वीडन	ऋण	2.2	3.5	—	10.9	—	18.1	3.7	26.5	12.5
	अनुदान	3.8	2.0	—	0.8	—	—	—	20.2	20.2
	जोड़	6.0	5.5	—	11.7	—	18.1	3.7	46.7	32.7
(12) ब्रिटेन	ऋण	356.2	75.9	59.4	64.8	98.1	84.8	98.1	108.8	164.6
	अनुदान	1.8	0.1	0.1	5.1	2.2	1.0	1.4	—	—
	जोड़	358.0	76.0	59.5	69.9	100.3	85.8	99.5	108.8	164.6

(करोड़ रुपये)

स्रोत	सहायता का स्वरूप	तीसरी आयोजना के अंत तक	1966-67	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
(13) संयुक्त राज्य अमेरिका :										
(क) ऋण . .		1,251.5	235.6	144.6	400.1	35.0	264.9@	48.5	30.2	22.9
(ख) अनुदान . .		168.2	4.4	0.6	1.1	0.6	15.1	—	—	—
(ग) पी० एल० 480/665 आदि सहायता जिसे :										
(1) रुपयों में वापस करना है .		1,510.8	392.7	235.9	71.6	73.6	—	22.5	—	—
(2) परिवर्तनीय मुद्रा में वापस करना है . .		—	—	67.6	53.7	112.9	—	96.2	—	—
जोड़ .		2,930.5	632.7	448.7	526.5	222.2	280.0	167.2	30.2	22.9
(14) अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण तथा विकास बैंक . .		449.5	1.3	30.0	11.3	41.6	41.3	45.0	—	54.7
(15) अन्तर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण		275.1	229.5	—	93.8	88.1	125.9	334.5	199.5	436.6
II. सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ तथा पूर्वी यूरोप के देश . .	ऋण	604.9	306.2	11.3	—	—	—	—	—	80.0
	अनुदान	5.4	2.5	0.8	0.7	—	—	—	—	—
	जोड़	610.3	308.7	12.1	0.7	—	—	—	—	80.0
देशवार ब्यौरा										
(1) बल्गारिया	ऋण	—	—	11.3	—	—	—	—	—	—
(2) चेकोस्लोवाकिया	ऋण	61.1	—	—	—	—	—	—	—	80.0
	अनुदान	0.4	—	—	—	—	—	—	—	—
	जोड़	61.5	—	—	—	—	—	—	—	80.0
(3) हंगरी . . .	ऋण	—	25.0	—	—	—	—	—	—	—
(4) पोलैण्ड . .	ऋण	36.1	—	—	—	—	—	—	—	—
(5) सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ . . .	ऋण	489.6	250.0	—	—	—	—	—	—	—
	अनुदान	5.0	2.5	0.8	0.7	—	—	—	—	—
	जोड़	494.6	252.5	0.8	0.7	—	—	—	—	—
(6) यूगोस्लाविया . .	ऋण	18.1	31.2	—	—	—	—	—	—	—
III. अन्य . . .	ऋण	22.9	—	—	—	—	—	—	—	21.4
	अनुदान	30.0	9.1	7.6	3.2	6.7	2.8	2.3	—	—
	जोड़	52.9	9.1	7.6	3.2	6.7	2.8	2.3	—	21.4
देशवार ब्यौरा :										
(1) आस्ट्रेलिया . .	अनुदान	25.7	8.9	7.6	3.2	2.9	2.8	2.3	—	—
(2) न्यूजीलैंड .	अनुदान	4.3	0.2	—	—	—	—	—	—	—
(3) स्विटजरलैण्ड . .	ऋण	22.9	—	—	—	—	—	—	—	21.4
(4) यूरोपीय आर्थिक समुदाय .	अनुदान	—	—	—	—	3.8	—	—	—	—
कुल जोड़ . .		5,711.6	1,506.5	718.8	946.8	634.3	761.9	929.2	676.2	1170.6

(करोड़ रुपयों)

स्रोत	सहायता का स्वरूप	तीसरी आयोजना के अंत तक	1966-67	1967-68	1968-69	1969-70	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
(क) ऋण . .		3,808.8	1,034.1	398.5	753.1	421.8	705.4	774.5	639.6	1129.5
(ख) अनुदान . .		392.0	79.7	16.8	68.4	26.0	56.5	36.0	36.6	41.1
(ग) पी० एल० 480/665 आदि से सहायता जिसे :										
(1) रुपयों में वापस करना है		1,510.8	392.7	235.9	71.6	73.6	—	22.5	—	—
(2) परिवर्तनीय मुद्रा में वापस करना है . .		..	—	67.6	53.7	112.9	—	96.2	—	—

टिप्पणियां: 1. विदेशी मुद्रा को रुपयों में बदलने के लिए विनिमय दरें तीसरी आयोजना के अन्त तक अवमूल्यन-पूर्व की विनिमय दर (1 डालर= 4.7619 रुपये) और इसके बाद 1970-71 तक अवमूल्यन के बाद की विनिमय दर (1 डालर=7.50 रुपये) के अनुसार हैं। करार के अन्तर्गत स्वीकृत सहायता की रकम को रुपयों में बदलने के लिए 1971-72 के आंकड़ों के लिए मई 1971 से पूर्व की विनिमय दर अपनायी गयी है। 1972-73 के लिए आंकड़े केन्द्रीय विनिमय दर के आधार पर तैयार किये गये हैं जो दिसम्बर, 1971 में मुद्रा के पुनर्मूल्यन के बाद जारी थी। 1973-74 से ऋण देने वाले प्रत्येक देश की मुद्रा को रुपयों में परिवर्तित करने के लिए रुपयों की वार्षिक औसत विनिमय दर का उपयोग किया गया हैं।

2. सम्भव है कि पूर्णांकन के कारण इन मदों का जोड़, दिये गये जोड़ से मेल न खाये।

3. 1973-74 के लिए स्वीकृत रकमों में सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ से गेहूं के लिए प्राप्त सहायता शामिल नहीं है।

*इसमें से 20.6 करोड़ रुपये 1969-70 के वर्ष के लिए हैं।

†इसमें अप्रैल, 1971 में हस्ताक्षर हुए दसवें येन ऋण की 19.0 करोड़ रुपये की रकम शामिल नहीं है और जो 1970-71 के लिए है।

@इसमें उत्पादन ऋण संख्या 207 की 120 करोड़ रुपये की रकम शामिल है जो 1969-70 के लिये है।

7.3 स्रोत के अनुसार वर्गीकृत विदेशी सहायता का उपयोग

(करोड़ रुपये)

स्रोत	सहायता का स्वरूप	तीसरी पंचवर्षीय आयोजना के अन्त तक	1966–67	1967–68	1968–69	1969–70	1970–71	1971–72	1972–73	1973–74
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. सहायता संघ के सदस्य		4158.5	1051.0	1124.4	810.0	774.8	733.1	811.6	640.3	814.8
(क) ऋण		2446.9	611.5	731.0	591.4	586.7	601.9	651.8	624.0	794.4
(ख) अनुदान		308.4	79.9	51.7	61.0	18.6	42.2	47.9	12.0	20.4
(ग) पी० एल० 480/665 आदि सहायता जिसे										
(i) रुपयों में चुकाया जाना है		1403.2	359.6	310.9	84.5	107.5	37.7	8.8	—	—
(ii) परिवर्तनीय मुद्रा में चुकाया जाना है :		—	—	30.8	73.1	62.0	51.3	103.1	4.3	—
देशवार–वितरण :										
(i) आस्ट्रिया	ऋण	4.7	3.7	3.2	3.2	2.7	1.7	0.7	1.8	2.4
	अनुदान	—	—	—	0.4	0.4	0.4	—	—	—
	जोड़	4.7	3.7	3.2	3.6	3.1	2.1	0.7	1.8	2.4
(ii) बेल्जियम	ऋण	4.9	नगण्य	1.9	2.1	2.9	5.1	4.2	3.0	2.8
(iii) कनाडा	ऋण	27.3	11.9	18.4	29.7	39.4	46.5	49.4	55.3	47.6
	अनुदान	134.4	68.3	45.5	48.2	10.0	34.6	27.8	5.6	12.3
	जोड़	161.7	80.2	63.9	77.9	49.4	81.1	77.2	60.9	59.9
(iv) डेनमार्क	ऋण	0.6	2.8	2.9	1.5	1.2	1.4	1.4	1.0	2.1
	अनुदान	—	—	—	—	0.8	—	—	0.1	—
	जोड़	0.6	2.8	2.9	1.5	2.0	1.4	1.4	1.1	2.1
(v) फ्रांस	ऋण	21.0	4.3	32.3	15.6	15.6	36.8	44.8	39.1	52.3
(vi) पश्चिम जर्मनी	ऋण	339.6	63.6	67.6	57.6	61.3	53.6	68.2	81.8	81.4
	अनुदान	2.5	1.6	0.6	4.0	6.7	3.5	3.9	5.0	6.2
	जोड़	342.1	65.2	68.2	61.6	68.0	57.1	72.1	86.8	87.6
(vii) इटली	ऋण	11.6	0.2	1.5	54.4	25.8	10.7	12.0	13.5	1.0
(viii) जापान	ऋण	112.9	30.2	46.7	68.0	45.3	36.5	41.8	62.0	95.7
	अनुदान	0.5	—	—	—	—	—	—	—	—
	जोड़	113.4	30.2	46.7	68.0	45.3	36.5	41.8	62.0	95.7
(ix) नीदरलैंड	ऋण	9.5	6.6	8.4	5.7	9.1	16.2	11.6	11.0	20.1
	अनुदान	—	—	—	0.4	0.5	0.5	0.5	0.5	0.6
	जोड़	9.5	6.6	8.4	6.1	9.6	16.7	12.1	11.5	20.7
(x) नार्वे	ऋण	—	—	—	—	—	—	0.1	1.0	—
	अनुदान	5.2	0.7	0.5	0.5	—	—	1.7	—	0.2
	जोड़	5.2	0.7	0.5	0.5	—	—	1.8	1.0	0.2
(xi) स्वीडन	ऋण	—	1.4	1.3	2.1	0.9	4.0	8.4	12.5	7.9
	अनुदान	3.5	2.2	0.1	0.7	—	—	—	0.4	1.1
	जोड़	3.5	3.6	1.4	2.8	0.9	4.0	8.4	12.9	9.0
(xii) ब्रिटेन	ऋण	292.3	90.5	80.6	54.9	81.1	75.3	91.4	125.7	130.5
	अनुदान	1.3	0.1	0.5	4.9	0.2	3.2	1.5	—	—
	जोड़	293.6	90.6	81.1	59.8	81.3	78.5	92.9	125.7	130.5

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
(xiii) संयुक्त राज्य अमेरिका										
(क) ऋण . .		1042.0	235.6	269.7	208.7	185.6	227.9	209.2	50.1	68.2
(ख) अनुदान . .		161.0	7.1	4.5	1.9	नगण्य	—	12.5	0.4	—
(ग) पी० एल० 480/665 आदि सहायता										
(i) रुपयों म चुकाया जाने वाला . .		1403.2	359.6	3310.9	84.5	107.5	37.7	8.8	—	—
(ii) परिवर्तनी मुद्रा में चुकाया जाने वाला .		—	—	30.8	73.1	62.0	51.3	103.1	4.3	—
जोड़ . .		2606.2	602.3	615.9	368.2	355.1	316.9	333.6	54.8	68.2
(xiv) अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक .		380.0	25.8	34.0	30.5	32.1	41.7	29.1	34.9	27.1
(xv) अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ		200.6	134.7	162.5	57.5	83.7	44.5	79.5	132.0	255.3
2. सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ तथा पूर्वी यूरोपीय देश .	ऋण	315.7	55.8	59.1	86.3	72.0	54.9	17.8	17.5	32.0*
	अनुदान	5.4	1.0	1.1	0.7	—	—	—	—	—
	जोड़	321.1	56.8	60.2	87.0	72.0	54.9	17.8	17.5	32.0
देश-वार-वितरण										
(i) बल्गारिया .	ऋण	—	—	—	0.2	0.2	—	—	—	—
(ii) चैकोस्लोवाकिया	ऋण	12.6	13.1	7.4	16.1	8.2	1.3	1.4	6.7	6.6
	अनुदान	0.4	—	—	—	—	—	—	—	—
	जोड़	13.0	13.1	7.4	16.1	8.2	1.3	1.4	6.7	6.6
(iii) हंगरी .	ऋण	—	—	—	—	—	0.7	—	—	—
(iv) पोलैंड .	ऋण	11.3	1.0	1.8	1.4	4.2	2.8	2.4	0.6	2.4
(v) सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ . .	ऋण	282.1	36.1	46.4	56.6	49.4	36.8	14.0	9.5	14.7
	अनुदान	5.0	1.0	1.1	0.7	—	—	—	—	—
	जोड़	287.1	37.1	47.5	57.3	49.4	36.8	14.0	9.5	14.7
(vi) युगोस्लाविया .	ऋण	9.7	5.6	3.4	12.0	10.0	13.3	—	0.7	—
3. अन्य . . .	ऋण	6.0	7.6	3.1	2.1	2.0	2.1	2.1	8.4	2.2
	अनुदान	23.3	16.2	7.9	3.5	7.5	1.3	2.6	—	0.3
	जोड़	29.3	23.8	11.0	5.6	9.5	3.4	4.7	8.4	2.5
देशवार-वितरण										
(i) आस्ट्रिया .	अनुदान	19.6	16.0	7.8	3.5	3.7	1.3	2.6	—	—
(ii) न्यूजीलैंड .	अनुदान	3.7	0.2	0.1	—	—	—	—	—	—
(iii) स्विटरजरलैंड .	ऋण	6.0	7.6	3.1	2.1	2.0	2.1	2.1	1.6	2.2
(iv) स्पेन . .	ऋण	—	—	—	—	—	—	—	6.8	—
(v) यूरोपीय आर्थिक समुदाय	अनुदान	—	—	—	—	3.8	—	—	—	0.3
	कुल जोड़	4508.8	1131.4	1195.6	902.6	856.3	791.4	834.1	666.2	849.3

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
(क) ऋण . .		2768.7	674.7	793.2	679.8	660.7	658.9	671.7	649.9	828.6
(ख) अनुदान . .		336.9	97.1	60.7	65.2	26.1	43.5	50.5	12.0	20.7
(ग) पी० एल० 480/665 आदि सहायता[1]										
(i) रुपयों में चुकाया जाने वाला . .		1403.2	359.6	310.9	84.5	107.5	37.7	8.8	—	—
(ii) परिवर्तनीय मुद्रा में चुकाया जाने वाला		—	—	30.8	73.1	62.0	51.3	103.1	4.3	—

टिप्पणियां : (1) तीसरी आयोजना के अन्त तक रकमें अवमूल्यन-पूर्व की विनिमय दर (1 डालर = 4.7619 रुपये) के अनुसार और बाद में 1970–71 तक के वर्षों के लिए अवमूल्यन के बाद की विनियम दर (1 डालर = 7.50 रुपये) के अनुसार रुपयों में बदली गई है। 1971–72 के लिये उपयोग की गयी सहायता की रकमों को रुपयों में बदलने के लिये मई, 1971 से पूर्व की विनिमय दरें रखी गई हैं। 1972–73 के लिये रुपयों में आंकड़े उन केन्द्रीय दरों के आधार पर लिये गये हैं जो दिसम्बर 1971 में मुद्रा सम्बन्धी पुनर्मूल्यन के बाद प्रचलित थीं। 1973–74 से ऋण देने वाले प्रत्येक देश की मुद्रा को रुपयों में परिवर्तित करने के लिए उस देश की तिमाही औसत विनिमय दर को मुद्रा में उपयोग के सम्बन्ध में तिमाही आंकड़ों को इस्तेमाल किया गया है।

(2) संभव है पूर्णांकन के कारण इन मदों का जोड़ दिये गये जोड़ से मेल न खाये।

(3) उपयोग संबंधी आंकड़ों में स्पलायर ऋण शामिल हैं। इसमें सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ से मिली गेहूं सहायता के आंकड़े शामिल नहीं हैं।

* इसमें रूमानिया से लिया गया 5 करोड़ रुपये का ऋण और जर्मन गणराज्य से लिया गया 3.3 करोड़ रुपये का ऋण शामिल है।

7.4 : विदेशी सहायता में अनुदानों तथा अप्रतिबद्ध ऋणों का अंश

(करोड़ रुपये)

अवधि	कुल विदेशी सहायता	अनुदान	कुल सहायता में अनुदानों का अंश (प्रतिशत)	बिना शर्त ऋण *	कुल सहायता में अप्रतिबद्ध ऋणों का अंश (प्रतिशत)
1	2	3	4	5	6
पहली आयोजना तक	317.7	110.6	34.8	53.2	16.7
दूसरी आयोजना में	2252.6	253.0	11.2	516.0	22.9
तीसरी आयोजना में	4531.0	167.0	3.7	603.3	13.3
1966-67	1131.4	97.1	8.6	183.1	16.2
1967-68	1195.6	60.7	5.1	253.0	21.2
1968-69	902.6	65.2	7.2	156.5	17.3
1969-70	856.3	26.1	3.0	196.3	22.9
1970-71	791.4	43.5	5.5	160.6	20.3
1971-72	834.1	50.5	6.1	177.9	21.3
1972-73	666.2	12.0	1.8	277.6	41.7
1973-74	849.3	20.7	2.4	451.1	53.1
जोड़	14328.2	906.4	6.3	3028.6	21.1

टिप्पणी--(1) विदेशी मुद्रा की रकमों को रुपयों में 1970-71 तक अवमूल्यन के बाद की विनिमय दर (1 डालर=7.50 रुपये) के अनुसार बदल कर दिखाया गया है। 1971-72 के लिये रुपयों में बदलने के लिए मई, 1971 से पहले की विनिमय दरें अपनायी गई हैं। 1972-73 के लिये रुपयों के आंकड़े केन्द्रीय दरों के आधार पर निकाले गये हैं जो दरें दिसम्बर, 1971 में मुद्रा के पुनर्मूल्यन के बाद प्रचलित थीं। 1973-74 से ऋण देने वाले प्रत्येक देश की मुद्रा को रुपयों में बदलने के लिये उस देश की तिमाही औसत विनिमय दर की मुद्रा में उपयोग के सम्बन्ध में तिमाही आंकड़ों को इस्तेमाल किया गया हैं।

(2) 1973-74 के आंकड़ों में सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ से प्राप्त गेहूं की सहायता शामिल नहीं है।

*इसमें अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण तथा विकास बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय विकास बैंक, स्वीडन, संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी जर्मनी से लिये ऋण और ऋण सम्बन्धी राहत शामिल हैं।

7.5 : 1974-75 में विदेशी सहायता*

(करोड़ रुपये)

क. अधिकृत देश/संस्था	अप्रैल दिसम्बर में किये गये सहायता करार		
	परियोजना भिन्न सहायता जिसमें ऋण राहत शामिल है	परियोजनागत सहायता	जोड़
1	2	3	4
1. बेल्जियम	5.8	—	5.8
2. कनाडा	34.2	0.6	34.8
3. डेनमार्क	6.8	—	6.8
4 फ्रांस	11.6	—	11.6
5. पश्चिम जर्मनी	80.6	33.2	113.8
6. नीदरलैंड	25.0	—	25.0
7. स्वीडन†	36.8	—	36.8
8. ब्रिटेन	74.5	—	74.5
9. संयुक्त राज्य अमेरिका	—	13.9	13.9
10. अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक	—	41.7	41.7
11. अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ	120.3	238.8	359.1
जोड़	395.6	328.2	723.8

ख. उपयोग :

सहायता का स्वरूप	भुगतान**
जोड़	1081
जिसमें	
(i) परियोजना-भिन्न सहायता	674
और (ii) परियोजनागत सहायता है	407

टिप्पणी : ऋण देने वाले प्रत्येक देश की मुद्रा को रूपयों में बदलने के लिए उस देश की तिमाही औसत विनिमय दर को मद्रा के उपयोग के सम्बन्ध में तिमाही आंकड़ों को इस्तेमाल किया गया है। रूपयों के रूप में कितनी रकम का अधिकार दिया जा सकता है इसके आंकड़े तैयार करने के लिए ऋण देने वाले प्रत्येक देश की मुद्रा की रुपयों में विनिमय दर की अप्रैल-दिसम्बर 1974 की नौ महीनों की औसत दर को हिसाब में लिया गया हैं।

*इसमें सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ से प्राप्त गेहूं तथा ईरान और इराक से प्राप्त तेल सम्बन्धी ऋण की सहायता शामिल नहीं है। राशियों में ऋण राहत शामिल है।

**वर्ष के लिए अनुमान।

†इसके अतिरिक्त स्वीडन ने 7.4 करोड़ रुपये की तकनीकी सहायता दी है।

7.6 : विदेशी ऋण पर ब्याज आदि का भुगतान

(करोड़ रुपये)

	ऋण परिशोधन	ब्याज	कुल ब्याज आदि का भुगतान
1	2	3	4
पहली आयोजना	10.5	13.3	23.8
दूसरी आयोजना	55.2	64.2	119.4
तीसरी आयोजना	305.6	237.0	542.6
1966–67	159.7	114.8	274.5
1967–68	210.7	122.3	333.0
1968–69	236.2	138.8	375.0
1969–70	268.5	144.0	412.5
1970–71	289.5	160.5	450.0
1971–72	299.3	180.0	479.3
1972–73	327.0	180.4	507.4
1973–74	399.9	195.9	595.8
1974–75*	401.0	200.8	601.8

टिप्पणियां : यहां विदेशी मुद्रा और सामान के निर्यात के रूप में की गयी अदायगी से संबंधित आंकड़े दिये गये हैं। पहली तीन आयोजनाओं के आंकड़े अवमूल्यन-पूर्व की दर (1 डालर = 4.7619 रुपये) और इसके बाद 1970–71 तक के आंकड़े, अवमूल्यन के बाद की दर (1 डालर = 7.50 रुपये) के अनुसार रुपयों में दिये गये हैं। 1971–72 के संबंध में ब्याज आदि के रूप में दी गयी रकम को रुपयों में बदलने के प्रयोजन से मई, 1971 से पूर्व की विनिमय दरों को आधार माना गया है किन्तु 20 दिसम्बर, 1971 से 31 मार्च, 1972 तक के बीच की गयी ब्याज आदि के रूप में दी गयी रकम को रुपयों में आंकने के लिये केन्द्रीय दरें अपनायी गयी हैं। 1972–73 के लिए केन्द्रीय दरें अपनायी गयी हैं। सम्बद्ध तारीखों को रुपयों में मूलधन की वापसी और ब्याज की अदायगी करने के लिए ऋण देने वाले प्रत्येक देश की मुद्रा को रुपये की प्रतिदान की वास्तविक दर को हिसाब में लिया गया है अक्टूबर 1974–मार्च 1975 के दौरान अनुमानों के लिए अक्टूबर 1974 के महीने की औसत दरों को हिसाब में लिया गया है।

*अनुमान।

MGIPRRND—21 M of Fin/74—18-2-74—1000